

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 27, जुलाई 2011 सँ सितंबर 2011

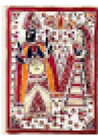
: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :
Premkant Choudhary
Flat no. 2, C-Block-B, Punya Enclave
RG Barua Road (Behind Sinha Lounge)
Ganeshguri, Guwahati-781006
(M) 094353-42658, 098540-50707

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com
Bank A/C No.
Mithila Sanskritik Samanway Samiti
SBI A/C No. : 31539261052

एहि अंक मे



âelËéßeÎ



प्रवास मे रहि 'पूर्वोत्तर मैथिल' सन विलक्षण साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशनक हम साधुवाद दैत छी। हमर शुभकामना अछि जे ई पत्रिका दीघायु रहि मैथिली साहित्यक फुवाड़ी कँ बेली, चमेली, गुलाब आ गुलदाबरी सदृश रचना सँ सुगन्धित करैत रहत।

– इन्द्रकान्त झा

पटना

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए वा इमेल purvottarmaithil@gmail.com पर पठाऊ। पता अछि :

Editor :
Purvottar Maithil
Flat No. 2, C-Block-B
Punya Enclave, RG Barua Road
(Behind Sinha Lounge)
Ganeshguri, Guwahati-781006
(M) 094353-42658, 098540-50707

gamhZr` à`mg

'hydh}Îma_¡{Wb' {Z`{_V ê$ng± n{‹T>ah b N>r Ÿ& E{hn{ÌH$m _| {ZaŠVa {ZIma Am{~ ah b A{N>Ÿ& aMZmg'H$ $M`Z_og§mmXH$ _hmoX`H$ $XyaÑ{ï>¥ ¼PmB/A{N>Ÿ& E{hn{ÌH$m _on[adhmaH$ $g^gXñ` H$ $lodbOn`moJr gm_Jk‹r ah¡VA{N>Ÿ& h_amAmíM`©bJ¡V A{N>Oogw Xyan ydh}Îma ^maVg±AnZoH$ bmoH$ {Z_m`¥ ^mfm _¡{Wbr H$ $goodh_o ob mJb N>rŸ& AnoZm _¡{Wbr H$ $B{Vhmg ah b A{N> Oo EH$ $a g'Q>m _hËdhyU© H$ $mO àdmgr _¡{Wb bmoH$ ${ZH$ $a¡Vah bmhŸ& dV©_mZ_o gdhmo àdmgr _¡{Wb g^ AnZ ^mfm, g§ñH¥$ ${VH$ $~Mo-mH$ $lodbà`mgH$ $' ah b N>{ŸWŸ& B© n{ÌH$ $mXrK©Ordr hmo`V, EE h H$ $nZm H$ $a¡VN>rŸ&

– _hmH$ $n§VR>mHw$a, ~Xama, ZB©{Xëbr

_¡{Wbr Ho$Zm ~MV?

'hydh}Îma_¡{Wb' n{ÌH$ mH nÜ`_g±h_B© à¡Zg_ñV_¡{Wb g_mOH$ $g_j àñVwV H$ $a¡ MmhmhÝ¡VN>r, OoAmB©h_ag'H$ $_mV¥ ^mfm _¡{Wbr g§H$ $Q> _oA{N>Ÿ& _¡{Wb g_mOH$ $ ~<S>H$ $mbmoH$ $g^AnZKa_o _¡{Wbr Z{h ~O¡VN>{WAmAnZmnYr`m-nyXmnH$ $qhXr AmA§J«oOr _o ~mO~{gImah b N>{WŸ& OIZ AnZ g§VmZ AnZ _mVmnH$ $ Ë`mJ H$ $EXoVVIZ Amo{h _mVmnH$ $gå_mZ H$ $ XoV? _¡{Wbr H$ $Zm _ra~<S>H$ $m-~<S>H$ $m ^mfUPm‹S>¡ domZoVmg^~hpVN>{W, _wXm _¡{Wbr H$ $ajmH$ $lodbH$ $moZmo à`mg Z{h ^@ah b A{N>Ÿ&

-A§{H$ $Vm {a`Xe©Zr, _w§~B©

स्मृति शेष

फजलुर रहमान हाशमीक निधन

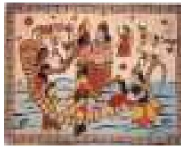
मैथिली कए मातृभाषा आ हिंदी कए राष्ट्रभाषा मानैत निरंतर सृजनरत रहयबला व्यक्तित्व फजलुर रहमान हाशमीक देहांत विगत 20 जुलाई, 2011 कए बेगूसराय जिलाक हुनक गाम मुज़फ्फरा बज़ार मे भऽ गेलनि। ओ 75 वर्षक छलाहŸ& 1936 ई. मे मातृक पटना जिलाक बराह जन्मल स्व. हाशमी एकटा एहेन रचनाकार छलथि जिनक रचना मे सरकारक विसंगति पर निरंतर चोट नज़रि आबैत अछि। मौलाना अबुल कलाम आज़ादक मोनोग्राफ क उर्दू सँ मैथिली मे अनुवादक लेल वर्ष 1996 मे हुनका साहित्य अकदेमीक अनुवाद पुरस्कार सँ सेहो सम्मानित कयल गेल। मैथिली मे निर्मोही आ हिन्दी मे रश्मिराशि नामक काव्यक सृजक हाशमी कए बेगूसरायक दिनकर जनपदीय सम्मान सेहो भेटल छनि। मैथिली संस्कृति आ साहित्यक उन्नायक हाशमीजीक निधन पर मैथिली साहित्य जगत मे शोकक लहरि पसरब स्वाभाविक। हुनक एकटा कविताक ई चर्चित छल जवाहरलाल के कपड़े धुले पेरिस से आते हैं & हम भी कुछ कम नहीं यारों चपाती खाने को गेहूं अमरीका से मँगाते हैं & एखनहु बेगूसरायक लोक कंठ मे रचल-बसल अछि& हिनक एकटा चर्चित कविताक अंश मैथिलीक चर्चित संस्कृतिकर्मी धीरेन्द्र प्रेमर्षि द्वारा भोर नामक गीत अलबम मे प्रयोग कयल गेल अछि & हिनक एक पुत्र जियाउर्र रहमान जाफरी सेहो मैथिली साहित्य मे सक्रिय छथि &

निवेदन

- F गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- F अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- F वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।
- F पूर्वोत्तर मैथिल अपने Site पर देखू www.purvottarmaithil.org

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंकक लेल रचना आमंत्रित अछि।

'लगन उद्योग' मिथिलाके कोन दिशा मे लऽ जायत?



आर्थिक रूप सं जर्जर मिथिलामें जखन उद्योग-धंधाक आवश्यकता अछि, रोजगारक अवसर सृजन करएके आवश्यकता अछि आ श्रम आओर प्रतिभाक पलायन रोकबाक आवश्कता अछि, तखन मिथिलामे कतहु कोनो नव प्रयास नहि देखाइत अछि। राजनीतिक रूप सं उपेक्षित एहि क्षेत्र मे अखनहु सभ सं बेसी अंधविश्वास, सामंतवादी विचार आ निरर्थक प्रदर्शनप्रियताक प्रचलन देखल जा सकैत अछि। मुंडन, उपनयन, विवाह आदि अनुष्ठानक नाम पर 'स्टेटस सिंबल' के प्रदर्शित करबाक लेल मैथिल लोकनि जाहि तरह सं पाई उड़बैत छैथ ओ हास्यास्पद त' लगति अछि, संगहि संग एहन परिवारी के देखला पर किछु सवाल ठाढ़ होइत अछि- एकैसम शातब्दीमे एहन मानसिकता रखला सं मिथिलाक उत्थान केना होयत? समाजक परिवर्तन केना होयत? अभिशप्त मिथिला मे सूर्योदय कोना होयत?

सभ तरहक उद्योग-धंधा सं वंचित मिथिलामे एकटा धंधा खूब लाभदायक बनि गेल अछि, ओहि धंधा के 'लगन उद्योग' कहल जा सकैत अछि। गाम-गाम में लगन उद्योग के फलैत-फूलतै देखल जा सकैत अछि। सब तरहक अनुष्ठान लेल टेंट, जेनरेटर, कुक, बरतन-बासन, कुर्सी, हलवाई आदिक प्रबंध सं जुड़ल अछि लगन उद्योग। हमर अपने गाम मे चारिटा टेंट हाउस खुजल अछि। जखन लगनक समय अबैत अछि तखन टेंट हाउसक मालिक सभके ऊपर रूपैयाक बरखा शुरू भ' जाइत अछि। दूर-दूर से लोकसभ भोज-भातक प्रबंध करबा लेल टेंट हाउस क शरणमे अबैत अछि। स्वतंत्रता के बादो अन्हार मे रहएक लेल अभिशप्त मिथिलामे कोनो अनुष्ठान के लेल जेनरेटरक मांग खूब बढ़ि जाइत अछि। तहिना जेनरेटरक मालिक सभ भाड़ा सेहो चारि गुना-पांच गुना वसूल करैत छथि। पहिने एकटा जेनरेटर कीनल जाइत अछि। फेर ओकरे कमाई सं चारिगो जेनरेटर कीन लेल जायत अछि। लगनक समय मे दूध भेटनाई असंभव जेंका भ जाइत अछि। जं दहीक प्रबंध नहि होयत त' भोज केना होयत। गाम-घर मे आब माल-मवेशीक संख्या घटि चुकल अछि आ संपूर्ण मिथिलावासी के सुधा डेयरीक कृपा पर निर्भर करए पड़ैत अछि। लगनक समयमे सुधा दूधक पाउच ब्लैकमे भेटैत अछि। ततेक 'डिमांड' रहैत छैक जे एडवांस पाई देलापर कतेक लोकके दूध नहि भेटैत छैन्ह। तखन विकल्पक संधान पाउडर दूध 'सागर' के रूप में कएल जाइत अछि। ओकरे घोरिकए दही बनाकए नोतिहारी सभके खुआयल जाइत अछि। जतेक दही खुआयब ओतेक जस होयत, ओतेक नाम होयत। जं दही के बदलामे पूड़ी-तरकारी-मिठाई खुआयब त' कोनो जस नहि होयत, सब हंसत आ कहत जे 'फलां झा अतेक पाई बरबाद केलैथ मुदा दहीक जोगाड़ नहिं भेलैन्ह।' जा धरि मैथिल समाजमे पाखंड रहत, जा धरि कुरीति सभ सं प्रेम रहत, ता धरि 'लगन उद्योग' एहिना फलैत-फुलैत रहत।

âÖ ÌÚÜæÚU·¤@UlÔ›-ÏÄ¢Ïæ â¢ßçÑ¿Ì çÑçÍÜæ×ð °·¤ÅUæ ÏÄ¢Ïæ ¹êÕ ÜæÖÎæØ·¤ ÕçÙ »ðÜ ¥çÀU, ¥ôçã ÏÄ¢Ïæ ·ð¤ ÒÜ»Ù ©læô»Ó ·¤ãÜ Áæâ·ñ¤Ì ¥çÀUÐ »æ×-»æ× ×ð´ Ü»Ù ©læô» ·ð¤ È¤Üñ¤Ì-ÈêÜÌñ Îð¹Ü Áæâ·ñ¤Ì ¥çÀUÐ âÖ ÌÚÜæÚU·¤ ¥ÙécÆUæÙ ÜðÜ Åð´ÅU, ÁðÙÚðÅUÚU, ·é¤·¤, ÕÚUÌÙ-ÕæâÙ, ·é¤âèü, ãÜßæ§ü ¥æçÎ·¤ ÂýÕ¢Ï âð Áé¸ÇU¸Ü ¥çÀU Ü»Ù ©læô»Ð

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : l **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 l **जोरहाटः** स्कंद कुमार मिश्र, दुर्गा भंडार, भगदोईमुख, ए.टी. रोड, जोरहाट, फो. : 94357-03453, l **खारुपेटिया :** पवन कुमार झा, बालचंद खुराना रोड, वार्ड नं. 1, खारुपेटिया, दरंग, फो.: 9435088346, डा. के.के. झा, दरंग कालेज, दरंग, फो. : 9435080059, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. : 9435366033, l **बंगाईगांव :** विनयकुमार झा, उत्तरायण मिशन रोड, नतुनपाड़ा, बंगाईगांव, फोन : 9435326826, l **बिहार : पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, l **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. l **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 l **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 l **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145, l **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030, l **पूर्णिया**-श्री सुरेंद्रनाथ मिश्रा, फोन : 09430582152 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी, चतुरंग भवन, 09431211543. l **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, l **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, l **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, l **निर्मली :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, वार्ड नं. 6, वाया दरभंगा फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

l **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

l **प. बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

l **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** मनीश कुमार झा, फोन : 9425517092

l **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर, फ्लैट नं. 389, सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, फोन : 09911382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104 , प्रेमकांत झा, सूर्य बिहार, निकट केसा कॉलोनी, नवावगंज, कानपुर-2, फोन : 99364-34557

l **हरियाणा :** श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09311119148 , श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

l **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

l **महाराष्ट्र :** श्री मानेश्वर मनुज, रेलवे क्वार्टर नं. 39/9, रेलवे कालोनी, दहीसर ईस्ट, मुंबई-68, फोन : 7498126102 श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

l **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

l **कोडरमा :** श्री पंचानन मिश्र, फो. : 09470160038

l **बड़ोदरा :** श्री विधान झा, इंट्रावर्ड. 136 वीआई व्यू काप्लेक्स, वीआईपी रोड, बड़ोदरा, फो. : 09714037766

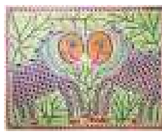
l **भीवांडी :** श्री धर्मेंद्र झा, वैष्णवदेवी हाउसिंग सोसाइटी, तीसरा तल्ला, कमरा नं. 305, अपोजिट सुरुची होटल, पद्मनगर, भीवांडी, फोन : 9326323632 ।



समसामयिक

मिथिलांचल सँ पलायन

सुभाष चन्द्र



कोनो समाजक पहिल आ प्रमुख इकाई होइत अछि जनता निर्माण आ विनाश दुनु मे जनताक प्रमुख भागीदारी रहैत छैक। परंच मिथिलांचलक आबादी लगभग पांच करोड़ रहितो आइ मिथिला जनविहीन लागैत अछि। एतय जनसँ मतलब मात्र दैनिक बोनि पर खटनिहार श्रमिक नहि, अपितु समस्त ओहन जन सँ संबंधित अछि जे कार्यरत छथि, कुनु ने कुनु तरहक काज अबस्से करैत छथि।

जतय एक दिश मिथिलाक बढ़ैत जनसंख्या विस्मयकारी होइछ ओतहि दोसर दिश लोकक पलायन मिथिलाक विकास कैँ अवरुद्ध कयने जा रहल अछि। जनसंख्या वृद्धि सँ उपजल अनेकानेक विसंगतिक कारणे लोक गाम-घर छोड़ि अन्यत्र पलायन कय रहल अछि। गाम-घरक कुनु वर्ग-जातिक लोक एहि पलायन सँ नञि बाँचल अछि।

देखल जाय तै पलायन पहिनहुँ होइत छल। प्राचीन काल मे मिथिला सँ लोक सब पलायन कय अन्यत्र सेहो बसि गेलाह। प्राकृतिक, दैवी आ स्थानीय कारण मुद्दा बनैत छल। पर्यटन आ उच्च ज्ञान प्राप्त करबाक इच्छा सँ लोक घर सँ बाहर सेहो जाइत छलाह। आखिर लोक अपन माटि-पानि आओर गाम-घर सँ पलायन कियैक-करैत छथि, एहि संदर्भ मे किछु ऐतिहासिक कारक पर ध्यान देल आवश्यक



बुझना जाइत अछि। अंग्रेजक शासन जाधरि रहल भारतक आर्थिक स्थिति चरमरायल रहल। कोनहु क्षेत्र ऐहन नहि छल जकर शोषण नहि कएल गेलै। अंग्रेजी शासनक नीति एहि तरहेँ बनल छल जे सभकिओ गरीबीक मारि झेलबा लेल बाध्य रहथु। जेना जेना समय बीतैत गेल, सामान्य मनुक्खक लेल दू जूनक रोटी जुटेनाय मुश्किल होइत गेल। ब्रिटिश शासक द्वारा अंधाधुन आर्थिक शोषण, स्वदेशी उद्योग-धंधाक नाश, ब्रिटेन मे भारतीय संपदाक स्वच्छंद प्रवाह, कृषि प्रणालीक पिछड़ापन आओर जमींदार, रजवाड़ा, महाजन तथा राज्यक अधिकारी द्वारा आम निरीह जनता/किसानक शोषण शनै-शनै अकल्पनीय दैन्य आ विवशताक खाधि मे धकलैत गेल।

एकर कारण जे पलायन प्रक्रिया शुरू भेल ओ राज्य संगे जुड़ैत गेल। ब्रिटिश शासनक शुरुआती चरण मे यानी प्लासी के लड़ाई आ 1765 ई मे दीवानी लेल अनुदान भेटलाक बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी जे शोषण आ मनमानीक रस्ता अख्तियार कयलक ओकर सब सँ पहिल शिकार बिहार, बंगाल आ उड़ीसाक संयुक्त प्रांत बनल। अंग्रेज ऐहन ने लूट-खसोट शुरू कएलक जाहि सँ एहि संयुक्त प्रांतक कोन-कोन मे भूख, अकाल व महामारीक साम्राज्य बनि गेल आ लक्ष्मी पड़ाय लगलीह।

एहि संदर्भ मे दरभंगाक देशी रियासतक संबंध मे दू आखर कहब समीचीन होयत। किछु दिन पहिने एहि पलायनक संबंध मे भेल शोधक अनुसारे कहल जा सकैत अछि जे मिथिला सँ भेल पालयनक मुख्य कारण दरभंगा महाराज द्वारा मिथिलांचल जनताक निर्बाध निरंकुश शोषण आ उत्पीडन छल। दरभंगा महाराजक एकछत्र वर्चस्वक कारणे मिथिलांचलक आर्थिक, राजनैतिक आओर सामाजिक दशा चिंतनीय बनल रहय। ओहि समय किसानक मनमाना दमन कएल जाइत छलै, ओकरा पर तरह-तरहकेँ कर, मालगुजारी आदि असहनीय बोझ सहबा लेल बेबस कएल जाइत छलै। शिक्षाक आवश्यकताकेँ सभ तरहेँ नजरअंदाज कएल गेलै, स्वास्थ्य आ अन्यान्य सामाजिक कल्याण सँ संबंधित क्षेत्र मे पिछड़ापन आ शैथिल्यपूर्ण निष्क्रियताक घटाक्षेप छायल रहलै। प्रेस, जनसंचार माध्यम आओर नागरिक अधिकारक स्वतंत्रता केँ सत्ता द्वारा हनन कयल गेलै। सरकारी राजस्वक एकटा पैघ हिस्सा राजकुमार, कुलीन दरबारी आ हुनक चमचा-बेलचा केँ ऐशो आराम आ ठाटबाट मे दुइर होइत छलै। एतबै नञि, जँ कहियो ब्रिटिश शासनक कोनो प्रतिनिधि दरभंगा अबैत छलैह तऽ राजरघरानाक प्रतिनिधि ओकरा अपन माय-बापो सँ पैघ मानि बेशकीमती जनेश दैत छलाह। एहि तरहेँ जाहि धनक उपयोग रियासतक प्रगति मे होबाक चाही ओ धन राजघरानाक ठाट बाट आ हुनक चमचागिरी मे व्यर्थ चलि जाइत छल।

मुदा आजुक परिप्रेक्ष्य बदलल अछि। बढ़ैत जनसंख्याक घनत्वक अनुपात मे जमीनक रकवा छोट भऽ रहल अछि। उद्योगहीनता प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़ि आ रौदी, उच्च व व्यावसायिक शिक्षाक अभाव, सरकारी उदासीनता तँ कारण अछिए, संगहि उपलब्ध रोजगारक अवसर मे सेहो कमी भेल जा रहल अछि। समुचित रोजगारक अभाव मे लोक केँ अंततः आजीविका के तलाश मे घर छोड़ि बाहर जाय पड़ैत छैक।

मिथिलांचल मे आजीविकाक मुख्य साधन रहल अछि कृषि। एकरा हम एना कहि सकैत छी जे मिथिलाक जीवन कृषि के इर्द-गिर्द छल। अन्नक उपज सँ लय क पशु-धन, लकड़ी, फल-फुलवारी सब कृषि आधारित छल। जतय कृषक केँ उपज सँ आमदनि छलनि, ओतहि भूमिहीन या कम खेत वला लोक कृषक मजदूर रूप मे आजीविका पबैत छल। कृषि विज्ञानक व्यवस्था आब पूर्ण रूपेण अलाभकारी भऽ गेल अछि। कृषि आ कृषि आधारित मजदूर दूनूक लेल जिनगी भार भेल जा रहल अछि। एहन परिस्थिति मे हुनका सभक सामने पलायने एकमात्र रस्ता शेष छैन्हि।

ओना ई पड़तालक विषय थीक जे पलायन आर पलायन सँ उपलब्धि प्राप्त करय मे ओ कतेक सक्षम भऽ सकलाह, हलांकि सरकार पलायन सँ चिंतित अछि मुदा ओकरा रोकय लेल कोनहुं थितगर उपाय करय सँ कतराऽ रहल अछि। विडम्बना तँ एहि गप्पक अछि जे एखनधरि सरकारी स्तर पर पलायनक कोनो स्पष्ट आँकड़ा तक उपलब्ध नहि भऽ सकल अछि। जखन कि पलायन गति जोर पकड़ने

°çã â¢½Öü ×ð¼ÚÖ¢»æ·¤½ð³æè çÚØæâÌ·¤ â¢Õ¢Ï ×ð½ê ¥æ¹Ú ·¤ãÕ â×è¿èÙ ãôØÌÐ ç·¤ÀéU ç¼Ù ÂçãÙð °çã ÂÜæØÙ·¤ â¢Õ¢Ï ×ð ÖðÜ ³æôÏ·¤ ¥ÙéâæÚð ·¤ãÜ Áæ â·ñ¤Ì ¥çÀU Áð ç×çÍÜæ â¡ ÖðÜ ÂæÜØÙ·¤ ×é•Ø ·¤æÚ‡æ ¼ÚÖ¢»æ ×ãæÚæÁ mæÚæ ç×çÍÜæ¢¿Ü ÁÙÌæ·¤ çÙÕæüÏ çÙÚ¢·é¤³æ ³æôá‡æ ¥æ©^ÂèçÙ ÀÜÜÐ ¼ÚÖ¢»æ ×ãæÚæÁ·¤ ° ·¤ÀÜG ß¿üSß·¤ ·¤æÚ‡æð ç×çÍÜæ¢¿Ü·¤ ¥æçÍü·¤, ÚæÁÙñçÌ·¤ ¥æ¥æðÚ âæ×æçÁ·¤ ¼³ææ ç¿¢ÌÙèØ ÕÙÜ ÚãØÐ ¥æðçã â×Ø ç·¤âæÙ·¤ ×Ù×æÙæ ¼×Ù ·¤°Ü Áæ§Ì ÀÜñ, ¥æð·¤Úæ ÂÚ ÌÚã-ÌÚã ·ð¡¤ ·¤Ú, ×æÜ»éÁæÚè ¥æç¼ ¥âãÙèØ ÕôÛæ âãÕæ ÜðÜ ÕðÕâ ·¤°Ü Áæ§Ì ÀÜÜñÐ ç³æÿææ·¤ ¥æßàØ·¤Ìæ·ð¡¤ âÖ ÌÚãð¡ ÙÁÚ¥¢¼æÁ ·¤°Ü »ðÜñ, SßæS‰Ø ¥æ ¥‹Øæ‹Ø âæ×æçÁ·¤ ·¤ËØæ‡æâ¡ â¢Õ¢çÏÌ ÿæðG×ð çÂÀÚU¸æÂÙ¥æ ³æñçÜËÂê‡æü çÙçcR¤ØÌæ·¤ ƒæÅæÿæðÂ ÀÜæØÜ ÚãÜñÐ

जा रहल अछि। यदि समय रहिते पलायन कँ नहि रोकल गेल तँ संभव अछि जे किछु दिन बाद राज्य, खास मिथिलांचलक गामक गाम खाली भेटत। मात्र नेना, भुटका, महिला आ कि बूढ़ भेटता।

कल्पना मात्र सिहरा दैत अछि। जतय एक दिस मिथिला अपन समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरि, सामाजिक परंपरा आ मजबूत ग्रामीण जीवनक लेल चिन्हल जाइत छल ओतय के गांव मे आब पाहुन अभ्यागतक सत्कार करय लेल दलान पर किओ नहि भेटैत अछि। अतिथि देवो भवः औचित्यहीन भऽ रहल अछि, घरबइया बिना।

ई तँ पलायनक एक रुख थिक। पलायनक दोसर रुख उपरोक्त सँ बेसी भयावह अछि। गाम-घर सँ रोजी-रोटी आ नीक भविष्य क तलाश मे निकलल हताश लोग की नव-जगह ठाम पर जा किछु प्राप्त कय पबैत छथि कि नहि? घर सँ जतेक सुखद सपना लय कऽ चलैत छथि ओहि मे सँ एक्कोटा पूर होइत छैन्हि कि नहि? आ सबसँ अहम चीज थिक हुनक ओतय कँ जीवन स्तर।

अपनहि राज्य आ देश मे अप्रवासी केर जीवन जीवाक लेल बाध्य ई लोकनि घर सँ दूर दुर्गतिक जीवन जीबैत छथि। मिथिला सँ पलायित लोक ओना तँ भारतक सब पैघ छोट शहर मे भेटि जयताह मुदा हिनक पहिल आ अंतिम पड़ाव दिल्ली होइत अछि। कारण, जँ दोसर शहर आ नगर मे समुचित रोजगारक व्यवस्था नञि भेल तँ दिल्ली मे छोट सन रोजगार तऽ कतओ भेटबे करत।

पढ़ल-लिखल, हुनरमंद सँ लय कऽ मूर्ख, बेलूरि सब कोटिक पलायित लोक दिल्ली मे भेटि जयताह। जिनगीक गाड़ी घीचैत-तीरैत। दिन भरि डाँड़ तोड़ि मेहनति आ राति मे गाम-घरक याद। यैह हिनक सभक दिनचर्या अछि। दुर्गा पूजा, दिवाली, होली सब छुटि गेलै, बिसरा गेलै चास-बास आ कलम-बारी, सभ दिनक पेटक आगि शांत करबाक उपाय मे। बिसरि कय आबि गेल छथि गामक ओ दलान जतय ताशक चौकड़ी जमैत छल कीर्तन गबैत छलाह, शायद एतय अतिमानव बनाबक चेष्टा मे अपनो कँ बिसरि गेलाह। बाँचल एकमात्र इच्छाक संग जीबि रहल छथि, शायद एहि महानगरी मे हमरो भाग्य खुजि जायत। भेड़-बकरी जकाँ जीवन जीवाक लेल अभिशप्त छोट-छोट झोपड़पट्टी मे निर्वाह करैत शायद अपन जन्म लेबाक वा पूर्वजन्मक फल भोगि रहल छथि। परदेश मे हजार-पन्द्रह सौ रुपयाक नौकरी लेल बारह सँ चौदह घंटा खट्टए पड़ैत छैन्हि संगे मानसिक शोषण सेहो बरदास्त करय पड़ैत छैन्हि। मुदा प्राप्ति नगण्ये सन होइत छैन्हि। महंग शहर-महंग वस्तु जात। फेर साल दू साल मे एक बेर गाम आयब।

पलायन सँ क्षति केवल गाम-घर समाज आ क्षेत्रे टा के नञि होइत अछि, पलायन सँ सभसँ बेसी कष्ट उठबैत छथि ओहि वर्ग विशेषक नारी, जिनक पुरुष मजदूरी लेल घर सँ जाइत छथि। अल्प आयु मे अपना परिवार कँ छोड़ि असुरक्षा भावना मे पत्नी आ बच्चा कँ धकेल स्वयं सेहो चिंतित रहैत छथि। अलग-अलग लोकक हिसाबे मजबूरीक परिभाषा भिन्न भय सकैत छैक मुदा ओहि सँ उपजल असुरक्षा, सामाजिक हानि तथा अन्यान्य कारण सभक एक्कहि रहैत छैक। बच्चाक भविष्य, अपन वर्तमान आ अतीतक बीच तादात्म्य मिलाबैत, अपन जिनगीक अवसाद मिटेबाक प्रयास मे प्रायः सभ नारी तत्पर रहैत छथि।

पलायन एक समस्या थिक। एहि बात सँ इनकार नहि कयल जा सकैत अछि, परन्च सरकार एहि सत्य कँ नुकाबय चाहैत अछि। गामक गाम वीरान पड़ल जा रहल अछि। महानगर, जतय पलायित व्यक्तिक ठौर पबैत छथि, ओतहुक स्थानीय निकाय अप्रवासीक समस्या सँ ग्रसित भऽ क्षुब्ध अछि। राज्य सरकार एहि समस्या पर चुप अछि। एतेक गंभीर समस्या कँ राजनीतिक स्तर पर हल्लुक अथवा कोनो खास नञि बुझनाय, सरकारक हृदयहीनता कँ प्रदर्शित करैत अछि।

अपन उपलब्धि गनेवाक कारणे सरकार यदि छोट-मोट नियोजन करितो अछि तँ ओहो ऊँटक मुंह मे जीरक फोरन बुझना जाइत अछि। राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता मे जबड़ल व्यवस्था राज्यक एतेक गंभीर विषय पर कोनहुँ राजनीतिक व्यक्तित्व आ कि दल गंभीरता सँ ध्यान नञि दैत अछि। ध्यान दैत अछि मात्र चुनावक बेर मे। फेर बिसरि जाइत अछि। स्थानीय नेता, विधायक, सांसद मात्र अपना क्षेत्र मे ओहने विकासक कार्य मे रुचि राखैत छथि, जतय सँ हुनका अवैध रूपेँ हिस्सा (रुपया) प्राप्त होइत छैन्हि। समय रहितै यदि पलायनक एहि स्थिति पर नियंत्रण करबाक समुचित उपाय नहि कएल जायत तँ, ई स्थिति विस्फोटक भ़। वर्तमान व्यवस्थाक लेल विकट समस्या ठाढ़ कय देत। एहि मे कनिको संदेह नहि।



समसामयिक

दम तोड़ैत मधुबनीक लहठी उद्योग

सु. च.



बिहार विभाजनक बाद रोजगारक नऽव अवसर आ आय के श्रोत मे बढ़ोतरी लेल प्रयास अपेक्षित छल। मिथिलांचल ओना तऽ उद्योगक क्षेत्र मे बहुत अग्रणी आ विकसित कहियो नहि रहल किन्तु, जे उद्योग छोट-छीन स्तर पर चलैत रहय तकर हाल सेहो बदहाल कहल जाय। कएक टा पारम्परिक लघु उद्योग छल मिथिलांचल मे, ताहि मे मधुबनीक लहठी उद्योगक सेहो बेस नाम छल। मात्र मधुबनी टा मे करीब तीन साढ़े तीन सौ परिवार छल जकर रोजी रोटी छलै लहठी उद्योग। आइ मुश्किल सऽ 35वा 40 टा परिवार कहुना एहि उद्योग सऽ जुड़ल अछि बाकी बचल परिवार या तऽ आन रोजगार सऽ जुड़ि गेल वा पलायन कऽ गेल अछि। तकर मुख्य कारण सरकारी उपेक्षा आ आधुनिकता केर चकाचौंध। शिल्पकारक आर्थिक संरक्षण क अभाव कही वा कच्चा मालक आसमान छूवैत दाम कही। कुल मिला कऽ एहेन कतेको कारण सऽ शिल्पकार एहि रोजगार सऽ विमुख भऽ गेल।

जहां धरि मधुबनी जिला मे लाह उद्योगक उद्भवक प्रश्न छैक तऽ क्षेत्रीय मिथक तथा अन्य श्रोत सऽ प्राप्त जानकारीक अनुसार 1757 ई के करीब वैश्यक एक उपजाति, जकरा स्थानीय बोल चालक भाषा मे लहेरिया कहल जाइत अछि, केर प्रवेश मधुबनी मे भेल। एहि जाति द्वारा लहठी उद्योग प्रारम्भ कएल गेल।

ऐतिहासिक विवरणक अनुसार अंग्रेज द्वारा बंगाल सूबा पर राजनीतिक आधिपत्य कायम केलाक बाद राजमहल, मुर्शिदाबाद, विष्णुपुर आदिक वस्त्र शिल्पकार पर अत्याचार बढ़ल। पलायन के क्रम मे इ जाति बंगाल के छोड़ि नदी सऽ अच्छादित पुरना दरभंगा जिला मे नाव द्वारा प्रवेश कएलक। मधुबनीक लहेरिया जाति के संबंध ओही पलायन सऽ जुड़ल अछि। संभवत: तत्कालीन वणिक जाति द्वारा एहि लहेरिया जाति के ओहि समय संरक्षण नहि प्रदान कएल गेल। परिणामस्वरूप इ जाति शहर के अंतिम छोर पर जा कऽ अपन उद्योग कहुना प्रारम्भ करबा मे सक्षम भेल। बाद मे सांस्कृतिक आत्मसातक क्रम मे लाह उद्योग सऽ जुड़ल लोक चूड़ी बजार आ भौआरा आदि मोहल्ला मे सेहो बसैत गेल किन्तु अद्यावधि प्राचीन आश्रय स्थल लहेरिया गंज के नाम सऽ जानल जाइत अछि। इ अलग बात छैक जे आइ ओहि ठाम मुश्किल सऽ 25 वा 30 परिवार शेष रहि गेल अछि। बाद मे जखन व्यवसाय मे वृद्धि भेलैक तऽ आबादी के बढ़ोतरी के देखैत इ जाति राज नगर, भगवतीपुर, जय नगर, नरार, बेनी पट्टी, झंझारपुर, मधेपुर, भदुली, देवधा आदि स्थान पर बसैत गेल। जहां धरि मधुबनी क्षेत्र मे लाह निर्माणक तकनीक केर प्रश्न छैक तऽ प्रारंभ मे एकर निर्माण माटि आ लाहक चपड़ा के मिला कऽ कएल जाइत छल लेकिन 20वीं शताब्दी के तेसर दशक मे वा तकर बाद माटि एवं लाहक चपड़ा मे रोगन एवं रंग सेहो मिलाओल जाए लागल। 1950 के बाद एहि मे पाउडर के प्रयोग सेहो होमय लागल किन्तु वर्तमान मे एहि मे मीना आ स्टीकर के प्रयोग बेसी भऽ रहल अछि।

×ÏéÕÜè·¤ Üãõ¦ÚUæðæ ÁæçÌ ·ð¤ âÎSØ ¥æòæð â Âæ¥ë¥Ü âÞ¸ ÁéÇU¸Ü
¥çÀUÐ â¢ÚÜ³ËÑ Ì ·¤æÜè Ü ß¦ç‡æ·¤ ÁæçÌ ¤æÚUæ °çã Üãõ¦ÚUæðæ
ÁæçÌ ·ð¤ ¥æðçã â×Ø â¢ÚUÿæ‡æ Ùçã Âý¼æÙ ·¤°Ü »ðÜÐ
ÂçÚU‡ææ×SßM¤Â § ÁæçÌ ³æãÚU ·ð¤ ¥¢çÌ× ÀUôÚU ÂÚU Áæ ·¤Ð¸ ¥ÂÙ
©læ» ·¤ãéÙæ ÂýæÚUÖ ·¤ÚUÕæ ×ð âÿæ× ÖðÜÐ Õæ¼ ×ð âæ¢S·ë¤çÌ·¤
¥æ¨×âæÌ·¤ R¤× ×ð Üæã ©lô» âù ÁéÇU¸Ü Üô·¤ ¿êÇU¸è ÕÁæÚU ¥æ
ÖõÚUæ ¥æç¼ ×ôãËÜæ ×ð âðãô ÕâñÌ »ðÜ ç·¤‹Ìé ¥læßçÏ ÂýæÚUèÙ
¥æŸæØ SÍÜ Üãõ¦ÚUæðæ »¢Á ·ð¤ Ùæ× âù ÁæÙÜ Áæ§Ì ¥çÀUÐ §
¥Ü» ÕæÌ ÀñU ·¤ Áð ¥æ§ ¥æðçã ÆUæ× ×éç³·¤Ü âù wz ßæ x®
ÂçÚUßæÚU ³æðá ÚUçã »ðÜ ¥çÀUÐ Õæ¼ ×ð ÁÌÙ ÃØßâæØ ×ð ßëçh
ÖðÜñ·¤ Ìù ¥æÕæ¼è ·ð¤ ÕÉU¸ôÌÚUè ·ð¤ Îð¹ñÌ § ÁæçÌ ÚUæÁ Ù»ÚU,
Ö»ßÌèÂéÚU, ÁØ Ù»ÚU, ÙÚUæÚU, ÕðÙè Â^è, ÛæÛæ¢æÚUÂéÚU, ×ÏðÂéÚU,
Ö¼éÜè, ¼ðßÏæ ¥æç¼ SÍæÙ ÂÚU ÕâñÌ »ðÜÐ Áãæ¢ ÏçÚU ×ÏéÕÙè ÿæð˜æ
×ð Üæã çÙ×æü‡æ·¤ Ì·¤Ùè·¤ ·ð¤ÚU ÂýàÙ ÀñU·¤ Ìð ÂýæÚ¢UÖ ×ð °·¤ÚU
çÙ×æü‡æ ×æçÅU ¥æ Üæã·¤ ¿ÂÇU¸æ ·ð¤ ç×Üæ ·¤Ù ·¤°Ü Áæ§Ì ÀUÜ
Üðç·¤Ù w®±è´ ³æÌæŽ¼è ·ð¤ Ìðâ¥ ¼àæ·¤ ×ð ßæ Ìæ·¤ÚU Õæ¼ ×æçÅU
°ß¢ Üæã·¤ ¿ÂÇU¸æ ×ð ÚUôÓæÙ °ß¢ ÚU¢» âðãô ç×Üæ¥æðÜ Áæ° Üæ»ÜÐ

मिथिलांचलक लहठी उद्योगक विशेषता रहल छैक जे एहि मे पूरा काज हाथ टा सऽ कएल जाइत अछि जाहि मे 80 प्रतिशत महिलाक भागीदारी रहैत छन्हि। दु:खद बात इ जे विगत दू तीन वर्ष सऽ एहि उद्योग मे भारी उथल-पुथल भेल तकर मौलिक कारण इ रहल जे पीढ़ी दर पीढ़ी सऽ काज करैत शिल्पकार दोसर धंधा दिस आकर्षित भेल गेल तकर पाछू के कारण इहो छैक जे कच्चा मालक स्थानीय स्तर पर अकाल भऽ गेलै। लहठी मे प्रयुक्त कच्चा माल बाहर सऽ आनय पड़ैत छैक जकर दर सेहो उच्चतम रहैत छैक। विदित हो कि लहठी मे कच्चा मालक प्रयोग लाहक चपड़ा, स्टीकर, रंजन, मीना आ चमकीला तारक रूप मे कएल जाइत अछि। उक्त सामानक मूल्य मे 20-25 वर्षक अंदर अप्रत्याशित वृद्धि भेलैक। परिणाम इ भेलैक जे ताही अनुपात मे लाह सऽ बनल चूड़ी आदि महग सेहो होइत गेलैक आ स्थानीय ग्राहक एहि सऽ विमुख होइत गेल।

विगत 15-20 वर्ष सऽ लहठी उद्योग सऽ जुड़ल महिला सुशीला देवी कहैत छथि लाहक चपड़ा पहिने 40-45 रुपैया प्रति किलो भेटैत छल आइ तकर मूल्य 160 सऽ लऽ कऽ 200 रु प्रति किलो भऽ गेल छैक। ठीक तहिना 50 ग्राम स्टीकर के मूल्य 9-10 रुपैया छलैक जे आब 40-45 रुपए भऽ गेलैक। एक पुडिया मीना सेहो 9-10 रुपैया मे भेटि जाइत छल मुदा तकर मूल्य सेहो बढ़ि गेलै। वस्तुत: कच्चा मालक आसमान छूवैत दर एहि उद्योग के बंद करवा लेल विवश कऽ देलक स्थानीय शिल्पकार के।

कारण जतेक रहल हो मुदा एक बात सत्य जे एहि लचरैत उद्योग सऽ एक दिस जतय मिथिलांचल के राजस्वक घाटा भए रहल छैक ओत्तहि कएक टा शिल्पी परिवार भुखमरी के कगार पर ठाढ़ अछि। आब पुन: शेष बिहारक लघु उद्योग मे जान फुकवाक प्रयास भए रहल अछि तखन देखी जे ओहि पारम्परिक लहठी उद्योग पर सरकारक कुंभकरणी नींद कहिया टूटैत अछि?



ज्वलंत प्रश्न

मैथिलीके वर्गिय चिन्तनसं मुक्त करही पड़त

राम भरोस कापडि 'भ्रमर'



एहि बेर काठामाण्डूमे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक आयोजन करैत कतेको एहन समस्या सभ आगांमे आएल जे हमर पूर्व अनुमानकें आर मजबूत करैत गेल। जाहिमे एकटा छल- वर्गिय आग्रहसं पीडित व्यक्ति वा समूहक क्रियाकलाप। मैथिलीकें सभ जाति, वर्गक भाषा कहनिहार सभक हेतु ई सेहो चुनौती जकां बुझाएल रहए जे ठीके मैथिलीक माने सभ जातिक भाषा होइछ? आ से जं नहि होइछ तं लोक एखनो जे बजैत अछि से कोन भाषा भेल? की उच्च वर्ग कहौनिहार लोक मात्र मैथिली बजैत छथि? इतर वर्गक भाषा कोन छिऐ? प्राय: तकरे गलतफहमीक शिकार भऽ मैथिली भाषी क्षेत्रमे आन भाषा सभ प्रवेश करब शुरू कएलक अछि? जेना मगही!

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अनेकों अर्थमे सफल आयोजन छल। संचार क्षेत्रके जिम्मेवारी लेल पदाधिकारीकें ककरो खबरि धरि नहि कएनहुं जाहि तरहें काठामाण्डूक मिडिया एहि सम्मेलनकें सकारात्मक रूपें लेलक ताहुसं एकर सफलताकें एकटा आयोजककेंरूपमे हम सभ आकलन कएलहुं अछि। ई दोसर बात थिक अंग्रेजी, नेपालीक पत्र-पत्रिकामे जतेक सकारात्मक समाचार विचार, सम्पादकीय धरि छपैत हो, गोरखापत्रमे उधारीमे भेटल एकटा पन्नाक मैथिली पृष्टमे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनकें 'बुढ़ियाक फूसि' कहि लिखबामे कोनो मैथिलकें संकोच नहि भेलनि। सम्मेलनक पहिल उपलब्धि तं विद्यापति पुरस्कार कोषक

स्थापना अछि, जे तत्काले भेल छल। तकराबाद संस्कृति मंत्रालय एकटा कार्यदल बनौलक जे अपन अवधारणापत्र मंत्री के बुझा चुकल अछि। मंत्री महोदय अगामी कातिकमे विद्यापति पुरस्कार प्रदान करबाक आश्वासन सेहो देलनि अछि। ई सम्मेलनक पैघ उपलब्धि मानल जएबाक चाही।

प्रसंग भाषाक प्रति सहकार्यक अछि। अपना संगे लऽ चलबाक प्रवृतिक अछि। काठमाण्डू नेवारी सभक बोलबाला बला जगह छैक। नेपाली कि नेवारी। एहनमे मैथिलीक कोनो कार्यक्रम समस्त मैथिलक हेतु एक सूत्रताक काज कऽ सकैत छल। हमरा सभक आशो सएह छल। काठमाण्डू प्रवासक अपन छोट अवधि (लगभग दू वर्ष) मे काठमाण्डूकें नीक जकां नहि जानबाक क्षतिपूर्ति मैथिल सभक विराट उपस्थितिसं भऽ जा सकैत अछि सएह विश्वास एतेक पैघ काज करबाले' प्रेरणा देने छल।

मुदा जखन काज प्रारंभ भेल तं जे जे रंगताल देखबामे आएल मोन झूड़ भऽ गेल छल। जे जवावदेही लेन छलाह, पाछां हटि गेलाह। ने कएलनि, ने कहलनि। भरोसमे काज विगरल। जे नहि कर' चाहलनि, से त देखार छलाहे। जे विगाड़बाक लेल सप्पत खएने छलाह ओ अन्तिमोक्षण धरि अपन कुचालिसं वांकी नहि रहलाह। तथापि कार्यक्रम जं अत्यन्त सफल भेज तं राष्ट्रपति आ उपराष्ट्रपतिक कारणें, जे हमरा सभक कार्यक्रममे अपन निर्धारित उपस्थितिकें मजबूतीसं रखलनि।

काठमाण्डू सम्मेलन सेहो एक बेर एहि मान्यताकें मजबूत कएलक अछि- मैथिली एखनो किछु लोक वा वर्गक चहरदेवारीसं टपि नहि सकल अछि से भ्रम पालने लोक सभक कमि नहि छैक। नेपाल हो वा भारत, मंचसं लोकके भ्रममे पाडबाक हेतु एक आध तेहन लोककें बीछि कऽ उपयोग करब एकबात भेल, मोनसं स्वीकार करब दोसर बात। मैथिलीक प्रतिनिधि मंच सभ एखनो ताही वर्गिय चिन्तनक लपेटमे पड़ल अछि। जकरा तत्काल रोकल जएबाक चाही। आन भाषाक आगां मैथिलीक दुर्दशाक कथा इएह

¥‹ÌÚU±üÚÅ¦þUèØ ×ñçÍÜè â•×ðÜÙ ¥Ùð·¤ô´ ¥ÍôZ ×ð´ âÈ¤Ü ¥õÚU ...

अछि–तथापि जानि बूझि कऽ एकर प्रयोग अपन क्षुद्र स्वार्थक हेतु कएल जाइत रहल अछि।

नेपालक जनगणना सम्पन्न भेल अछि। गत दश वर्ष पूर्व भेल जनगणनामे मैथिली लगभग 13 प्रतिशत अर्थात् 25 लाखक संख्यामे बजनिहार दर्ज भेल। तहिया मारि नेपालीसं मात्र छलैक। एहि बेर तं मगही, भोजपुरी, थारु आदि भाषाक संग सेहो प्रतिस्पर्धा छैक। सर्लाहीमे मैथिली बाजल जाइत अछि, मुदा ओत्त मगही, वाज्जिका, लिखाओत, धनुषा धरिमे इतर वर्गक एकटा पैघ समूह अपन मातृभाषा मगही लिखएबा लेल पूर्ण तैयारी मे छल। लिखएबो कएलक हएत। पूर्व दिशक थारु जे मैथिली भाषी क्षेत्रमे छथि, मैथिली बजैत छथि मुदा ओ लिखओताह थारुए। तखन मैथिलीक दुर्गति हएत कि नहि! तकरा लेल गोलैसी कर' बला मुंह बन्न क' चुप छथि। मात्र ठिकदारी लेलासं नहि, तकरा हेतु आगां बढब जरूरी छैक।

एखन हमसभ प्रायस कर' चाहैत छी– मैथिलीक एकटा एहन व्याकरण अबैक जे मानक शब्द आ प्रवृत्तिकें मात्र प्रतिनिधत्व नहि करैक, ब्राह्मणेत्तर वर्ग अथवा ताहुमे छोटका जाति सभमे बाजबला शब्द सभकें एकटा मापदण्ड बना ओकरो व्याकरणक हिसावसं शुद्धि प्रदान कएल जाइक। एकटा हद धरि तेहनो बाज बला शब्द आ उच्चारणकें भाषा वैज्ञानिक लोकनि मान्यता दऽ देथिन्ह तं मैथिली पढ आ बाज' मे सहजता भऽ जएतैक। एहिसं मैथिली पढनिहारक बड़ पैघ वर्ग तैयार भऽ जाएत।

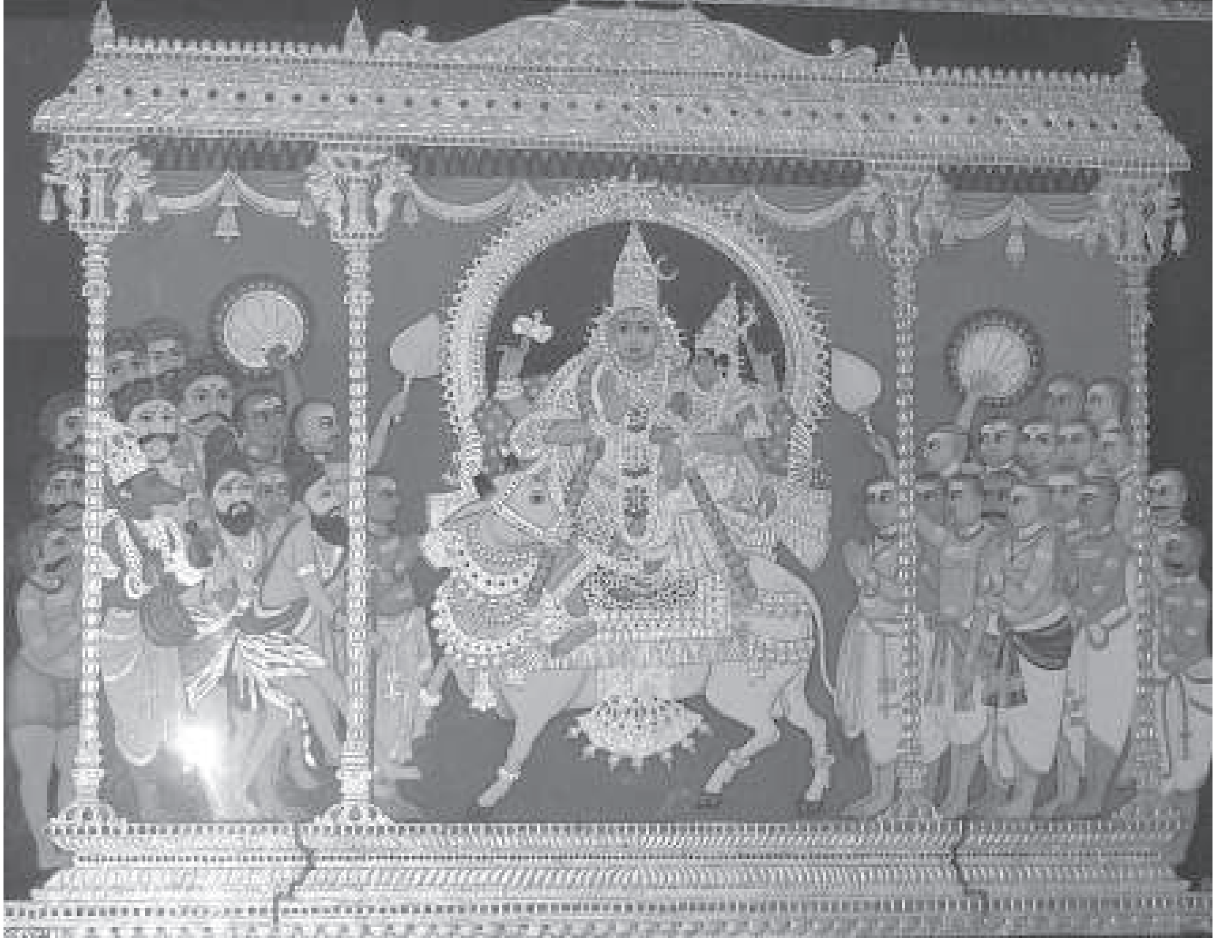
एखन जाहि तरहें मैथिलीक पोथी सभक हविगत छैक, पत्र-पत्रिकामे दुर्दशा छैक से पढबामे असहजताक कारणें बेसी छैक। आन भाषाक पत्र-पत्रिकामे छपल सामग्रीक उत्कृष्टता पाठकके आकर्षित करैत छैक मैथिलीमे किए नहि! किछु गोटे कहैत छथि आन भाषाक पत्रिकामे छपल सामग्री सपारिश्रमिक उपलब्ध कएल जाइछ, तएँ ओ वेसी मेहनतसं तैयार भेटैत छैक। मैथिलीमे से नहि! मुदा मैथिलीमे नीक परिश्रमिक दऽ छपैत 'आंगन' (नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाण्डू) मे आएल रचना एतेक झूड़ होइछ जे कपार पीटि लेबाक मोन होइत छैक। मैथिलीक लेखक मेहनत कर' नहि चाहैत छथि।

विनु छपने किताबक सूची वायोडटामे राखब चलनि भऽ गेल छैक। एक्कटा रचना कएकटा पत्रिकाकें उपलब्ध करा' देब से सहज भऽ गेलैक अछि। एहु प्रवृतिमे सुधार हयब जरूरी छैक।

जहाँ धरि बहुरंगी पत्रिकाक गप छैक तं 'मिथिला दर्शन' त नीक लेआउटमे निकलैत अछि। मधुबनीक विद्यापति चौकपरक पत्र-पत्रिका विक्रेताक ओत्त नवंबरमे जखन दू मास पूर्वक 'दर्शन' देखलिए आ पुछलिए त बड़ निराशाजनक उत्तर देने रहथि। एहि सभक कारण भाषाक सहजीकरण नहि हयब आ एकटा बड़का वर्ग एहि भाषासं अपनाकें अलग राखब थिक।

जे किछु गोटे संयोगेंसं मैथिली क्षेत्रमे काज कऽ रहलाह अछि ओ सभ ताही वर्गिय चिन्तनमे ग्रसित किछु व्यक्तिसभसं निरन्तर प्रताड़ित होइत रहल अछि। अपना बुत्तापर जं कतहु पहुचियो जाइत अछि, तकरा अनावश्यक रूपें विवादमे पाड़बाक, पएर घिंचबाक काज छोड़ल नहि जाइछ। एहनमे एहि भाषा प्रतिक सामूहिक सद्भाव आ एकबद्धता संकटमे पड़ब अस्वभाविक नहि।

नेपालक प्रथम वर्गसं लऽ एम.ए. धरि मैथिली पढाइ होइत (eof n¥lR>52 na)



छात्रोपयोगी

प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क काव्य सौष्ठव

डा. इन्द्रकान्त झा



मिथिला, मैथिलीक उन्नायक प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन मैथिली साहित्योध्यानक ओ पुष्प छथि जे नानाप्रकारक सुगन्धीसँ साहित्यिक जगतकैँ सुरभित करैत रहल अछि। हुनक व्यक्तित्व बहुआयामी छल। ओ बहुभाषा विद छलथि। संस्कृत, हिन्दी, बंगला आदिक ग्रन्थक अध्ययन, चिन्तन एवं मंथन सँ जाहि काव्य रूपक गाछक अवतरण भेल ताहि सँ विविध फल टपकल। सभक स्वाद फराक-फराक अछि। मुदा सभ मे मिठास छैक। कोनो मे गूड़क तँ कोनो मे चीनक तँ कोनो मे मिठाई सभक भिन्न-भिन्न स्वाद। ओकरा स्वाद भेटलैक सभ सँ बेसी मैथिलीक साहित्यकार कैँ। मैथिलीक अखर कट्टू सँ विद्वान धरि हुनक काव्यरूपी वृक्षक छायामे बैसैत, उठैत रहल। किछु गोटे ओहि वृक्ष मे अपन साहित्यक जल सँ सिंचलनि तँ किछु गोटे साहित्यकार बनि गेलाह।

कवि मनीषी पं. सुरेन्द्र झा सुमनक आवास बनि गेल मैथिली, हिन्दी आ संस्कृतक

अनुरागीक केन्द्रस्थल। होमय लागल साहित्य रक जुटान। साहित्यिक हास्य विनोदक किलकार सँ गुंजायमान होमय लागल वातावरण , वा सन्तिकता सँ गुंजय लागल भौरांगण, भौंरा गायन सुनलक मिथिलांचलक मैथिलीक साहित्यकार आ प्रवासी मिथिला मैथिली भाषानुरागी व्यक्ति। सभ जुमय लगलाह सुमनजीक आवास पर। सभकेँ साहित्यिक सुगन्धी भेटैल गेल। व्याहत गतिये साहित्यकार आ राजनीतिज्ञ लोकनि अबैत गेलथि। किछुगोटे सिखलनि लोकल्याणकारी व्यक्तित्व श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' सँ तँ किछु साहित्यकार बनलाह हुनक चरणाविन्दक कृपा सँ। जे अयलाह सभ किछु ने किछु संबल लेने गेलाह। किछु गोटे ओकरा बँटलनि तँ किछु अपनि संग रखलनि। मुदा आनन्द रस सँ रसाप्लावित भेलाह सभ।

कविक कवि काव्यजगत-पुजारी, मनीषी पंडित सुरेन्द्र झा 'सुमन'क काव्यरूपी फुलवारी मे विचरण करब। विचरण करु नहु-नहु, नयन दौड़ा आ ताकू तँ पहिने भेटत कविता आह्वान करु:-

अरुण किरण रेखासँ जागल
जगमग नवल प्रभात
सिहकय लागल नहु नहु खेलइत
संगी सुखद वसाता
हसइत कूल डारि पर झुलइत
नचइत सरिता कूल।
जल तरङ्ग पर चकमक करइत
पथ पर कण-कण धूल॥
कोर बैसि सुतल हम प्रथमे
गुन गुन स्वर्गिक गान।
मायक ममता मे कविता की
करइत अछि आह्वान।

कविताक आरम्भ कवि प्रभातक प्रकृतिक मनोरम चित्र सँ करैत छथि। प्रात:कालीन सूरुजक ललाओन मे समस्त सृष्टि तन्द्रा सँ जगैत अछि। ताहिकालक मे अन्यन्त सुखद मादक बसात मन्द गति सँ सिहकैत छैक। धारक कछेर पर गाछक डारि पर झूलैत फूल आह्लाद सँ हँसैत रहैत अछि। वाट घाटक धूराक कण-कण भानुक किरण मे चमकय लगैत अछि। कवि देखैत छथि कहैत छथि जे सर्वप्रथम हम माइक कोरा मे बैसि स्वर्णिम गीत सुनने छलहुँ। की ओ कविताक आह्वान बा बजाहटि नहि छल?

हँ, छल की नहि, मुदा कविकेँ कविता सोर पारलक। कोना बजौलक कतय बजौलक तँ हुनकहि मुँह सुनू:-

सहजहिँ मलय समीर आबि
पुलकित कयलक उद्यान
आमक लता आलिंगित कय
कुहकय कोकिल कीर।
नव वसन्त यौवन सँ मातल
जड़-जंगमहुँ अधीर॥
नखशिख कुसुमित लता-कुञ्जमे
बैसल प्रणय - विभोर।
प्रयेसीक नयनक संकेतेँ
कविता करइत सोर।

कवि समस्तीपुर जिलाक बल्लीपुर गाम सँ आयल छथि। कविता सोर पाड़ैत अछि तँ दौड़ि जाइत छथि सुदूर देहात। देखैत छथि हर कोदारि खुरपीक पुजारी अर्द्धनग्न शरीर। ताकय लगैत छथि कविता:-

कुञ्ज-कुञ्ज सँ कोलाहल सुनि
जनपथ देखि समक्ष।
हर कोदारि-खुरपीक पुजारी
अर्द्धनग्न कन लक्ष।
क्षुधि पिपासित रक्त शुष्क कय
जोति कोड़ि जी दाबि।
सुजला सुफला जनिक कठिन
गीत बन्दना गाबि॥
कृषक श्रमिक केर श्रमजल चुबइत
पावन गंगा नीर।
सांग-भात लय ठाढ़ि खेत मे
कविता कमला तीर।

कविक ध्यान कृषक आ जन-वरिजना पर चल जाइत अछि। हर कोदारि आ खुरपी भजनिहार लाखक लाख अर्द्धनग्न, भूखल-पियासल देह। ओ अपन गातक शोणित कँ सुखबैत खेत कँ जोतैत-कोरैत छथि। एकर फलस्वरूप धरती माताक कोरा मे फसल लहलहा उठैत अछि। ओहि श्रमिकक घाम गंगाजल अछि। अपन श्रमिक पतिक हेतु साग-भात लय कमलाक कछेर पर कविता कामिनी ठाढ़ि रहैत अछि।

नजरि दौड़ाबैत छथि तँ देखैत छथि विधवाक उजड़ल उपटल घर आ चित्र अधीर:-

पति परलोक बसल घर उजड़ल
चिन्तित चित्र अधीर।

कमौआ बेटा कँ मलेरिया ग्रसित गलल शरीर। अन्नपूर्णा कँ कोशीक धार मे बहैत। जीवनमे सर्वत्र हाहाकार। आँखि सँ जे नोर बहैत अछि ताहि सँ सगरो उमड़ल बाढ़ि आ करुण स्वर मे कोशीक कछेर पर कविता कामिनी ठाढ़ि देखल जाइत अछि:-

मास-मास सँ जकर कमासुत सुत ज्वर गलित शरीर
जकर अन्नपूर्णा भसिऐले कोशिकीक मझधार
जीवन तट पर एक शब्द
सुनइछ जे हाहाकार॥
ओहि अनाथ विधवाक अश्रुहिक
सगरो उमड़ल बाढ़ि।
करुण क्रन्दने कविता कनइछ
कौशिकीक तट ठाढ़ि॥

कवि करुणाद्र छथि। चल गेलथि महाकवि विद्यापति गाम देखय। गाम प्रगतिहीन लगैत छनि। कलम सँ लिखा गेलनि।

एखनहु धरि विस्पी-आङ्गन मे
मिथिला बहबय नीर।
कविता मिलित कण्ठ सँ गबइछ
हमर दुखक नहि ओर।

दुख दर्द आ पीड़ा सँ पीड़ित कवि समाधान चाहैत छथि। आशावादी छथि कवि पीड़ाक अन्हार कँ भानुक उदयक सँ प्रकाशक किरण छिटकाबेत छथि।

उदित भानु रजनीतम चिरइत
नव नव लय आलोक।
मुदा देखैत छथि ठाढ़ हरवाह कँ। नाना
प्रकारक हृदय मे भावक आलोड़न-विलोड़न
होइत छनि।

मुदा देखि पड़ैछ भारतक खंडित रूप हृदय मे भावनाक तुफान उठैत छनि। भावक आलोड़न विलोड़न मे ठाढ़ पबैत छथि तीन टा हलधर एगो त्रेताक तँ दोसर द्वापरक आतेसर

नीलम कान्तिवला हरवाह। एहि तीनू मे श्रेष्ठ छथि युगयुगान्तर सँ रहैत आएल तेसर हलधर। ई पूर्वक दुनू सँ श्रेष्ठ छथि। कवि विभिन्न प्रकारक प्रमाण दय एकरा प्रमाणित कय देने छथि।

छी युग युग सँ अहाँ हलधर।

एक हलधर बलराम भेलाह द्वापरक अन्त मे। ओ दमन हेतु हर उठबैत छथि आ ई शान्ति अहिंसाक व्रत धारण कयने छथि–

दमन हेतु उठबथि हर ओ
व्रत अहाँक अहिंसा शान्ति।

ओ क्रोधक कारण यमुना कँे जोतबाक हेतु हर उठौलनिक आ युद्धोधनक पक्ष लेल । ई हरवाह धर्महिक चालि चलैत रहलथि। ओ कृष्णक सहोदर छथि मुदा ई कृष्णक स्वरूप छथिः–

कृष्ण सहोदर ओ छथि सह जहिँ
कृष्ण अहाँक स्वरूप।

त्रेताक दोसर हलधर छथि राजा जनक जे खेतक उपजा सीताकँे अपन घर मे सुशोभित कयलनि। ओ भोगक संग योगक निर्वाह कएल। मुदा ई हरवाह स्वप्नो मे ने भोग कए सकलथि। रहि गेलाह योगी। तखन हुनक समता कतय सँ पओताह जनकपुरक श्रीमान् अर्थात् जनक। –मुदा ओ विदेह कहबैत छथि आ ई माटि जोतनिहार किसान कहाकए संतुष्ट रहैछः–

त्रेताकेर हलधर भोगक संग
योग कयल निर्वाह।
किन्तु अहाँक स्वप्नहुने भोगमे
हे ! योग हरवाह॥
समता अहाँक कतय सँ करत
जनकपुरक श्रीमान्?
किन्तु विदेह वएह कहबैछथि
माटिक अहाँ किसान।

कतेक दुर्भाग्य बात अछि जे एहन श्रेष्ठ योगी आ संसार कँे अन्न उपजा कँे जीवन देनिहार हरवाह कँे लोक गमार कहैत अछि दू चारि आखर जोड़िनिहार कँे कविः–

गढ़ि आखर दस–पाँच धन्य कवि
कहबी अहाँ गमार।

कवि सुरेन्द्र झा सुमन कँे प्राचीनता आ नवीनताक संगम ठाढ़ कएल गेल अछि, मुदा

> ãÜæð×Ø Ûæ»Ü âæÿæãÜ ̂ØÚÜ·¤ ÁéÂÜæÌÐ âæÿæãÜç ̂Ø·¤ ãÜæ¿Ø çßÚÜæðÎ·¤ ç·¤Ü·¤æÚÜ â¡ »éÜÂÁæØ×æÜ ãÜæð×Ø Ûæ»Ü ßæÌæßÚÜ‡æ, ßæ âç‹Ì·¤Ìæ â¡ »éÜÂØÛæ»Ü ÖæñÚÜæÜ»‡æ, Öæñ´ÚÜæ»æØÜ âéÌÜ·¤ ç×çÌÜæÜ¿Ü·¤ ×ñçÌÜè·¤ âæÿæãÜ ̂Ø·¤æÚÜ¥æ Âý´ßæâè ç×çÌÜæ ×ñçÌÜè ÖæÚÜæÜéÚÜæ»è ÃØç•ÌÐ âÖ ÁéÿØ Ü»Üæ»ãÜ âé×ÜÁè·¤ ¥æßæâ ÂÚÜÐ âÖ·¤ð¡¤ âæÿæãÜç ̂Ø·¤ âæ»×ÏÌè ÖðÅÜÚÜ»ðÜÐ ÃØæãÜÌ »çÌØð âæÿæãÜ ̂Ø·¤æÚÜ¥æ ÚÜæÂÜèçÌ™æÜæð·¤çÜ ¥ÕÚÌ »ðÜçÍÐ ç·¤ÀéÜ»æðÅÜðÜ çâ¹ÜçÜ ÜæðÜ·¤ËØæÜæÜè ÃØç•ÌÌ ßŸæè âéÜÚÜ¼ýÛæ ÛæéÌÜÌ â¡ Ì¡ ç·¤ÀéÜ âæÿæãÜ ̂Ø·¤æÚÜÑÜÜæãÜ ãéÜ·¤ ¿ÚÜ‡æçß‹Î·¤ ·¤ëÂæ â¡Ð

हलधर आ किछु अन्यान्य शीर्षक हुनक कविता सँ हमरा लगैत अछि प्राचीनता नवीनताक भार सँ पिचा गेल अछि।

अस्तु, कवि निकलल छथि चार–चाँचर दिश तँ देखलनि श्मशान। लिख देलनि ओहि पर कविता। भारतीय दार्शनिक लोकनिक विचार सँ संसारक प्रत्येक वस्तु अनित्य अछि, किन्तु सुमनजीक दृष्टि मे श्मशाने टा शाश्वत अछि। ओ श्मशान कँे साम्यवादी मानैत प्रौढ़ छी आ एक शिक्षक। वेदान्ती, तांत्रिक, स्थितप्रज्ञ आदि कहैत छथि। श्मशान हृदयमे पूंजीपति आ श्रमिक–राजा सभक लेल समान भाव रहैत छैकः–

पूँजी श्रम मे नहि भेदभाव
अछि अहांक राज्यमे साम्यवाद।
राजा रंकक अछि तुल्यमान
अछि साम्य एतहि व्यवहारवान॥
छी समता तत्त्वक मूर्त्तिमान
आचार्य प्रवर हे श्मशान॥
वादी प्रतिवादी मिलन एतहि
सभ क्रोध विरोधक समन एतहि।
भाषा भूषा गत बेस भेष
आस्तिक नास्तिक नहि भेदभाव॥
छी एक जगमय एक तान
चरितार्थ एकता हे श्मशान।
हे स्थितप्रज्ञ साधक महान।
गीता ज्ञाता अहँ हे श्मशान।

हठयोगक शिक्षक तँ छीहे अहाँ, कठिन परीक्षक सेहो अहाँ सनदोसर नहि भेटैछः–

फूलक शय्या पर कुसुम–वृत्त
छिलइतछल जनिकर अङ्गहन्त?
से दाबि कठोर कोर पहाड़
नहि बुझचि कनेको कष्ट भार॥
हे हठयोगक शिक्षक महान।
छी क्रान्ति परीक्षक हे श्मशान।

की–की ने बनौलनि श्मशान कँे। शिक्षा देल समाज कँे ताहि सँ संतुष्ट नहि भेलाह तँ बना देल श्मशान कँे त्रिदेवः–

अछि संग प्रेत तन भश्म अंग
मृत्युञ्जय प्रलयंकर असंग
घूमँ अछि श्यामल अहँक मूर्त्ति
सब तीर्थ कमण्डलु विधिक पूर्त्ति॥
अहाँ ध्यान त्रिदेवक मूर्त्तिमान
आद्यन्त – हीन छी हे श्मशान।

एहि कविता मे हिनक प्रौढ़ कल्पना, प्रखर प्रतिभा दृष्टिगत होइछ।

कवि जखन अदृश्य कँे दृश्य बनौलनि, मानवीकरण कयलनि आगू देखलनि कल्याणकारी तरूकँे ठाढ़। मानव नहि महामानव बुझेलनि। मानवक जीवनक आदर्श दोसरक उपकार मे देखलनि। तँ तरू रूपी महामानवक सम्पूर्ण जिनगी अंग–प्रत्यंग, ओकर फूल–पात,जीवनक उपार्जित अंश परोपकार मे लगा देल। स्वयंकँे एक तपस्वीक रूपमे प्रतिस्थापित कय देल जाइत अछिः–

तरुण तपस्वी मग्नमनाछी
चिर साधकतरु ! अहँ जन्महिसँ
तप मे लग्न कोना छी !!

एहन तपस्वी कँे घर–आँगनक कोनो प्रयोजन नहि छनि। तँ खुलल आकाश मे ग्रीष्मक घोर– निदाघ, पावसक घनकोर वर्षा एवं शिशिक जाड़क कंपन मे दिन गमायब आनन्दक विषय बुझैत अछि। कोनो तपस्वीक

लेल जाहि उपादन आ कार्यपद्धतिक प्रयोजन नहि होइछ तकर साकार रूपक तरू छथि। हिनका हृदय मे सभक कल्याणक भावना विराजित रहैत छनि। निन्दा आ स्तुति मे भेद नहि बुझैत छथि। जे अपन श्रमबिन्दु सँ पटबैत अछि आ जे काटै त अछि - दुनू कैं एकेरंग अपन छाया प्रदान कय बनि जाइत छथि स्थितप्रज्ञ:-

स्तुति निन्दा मे भेद ने मानल
रिपु-हित बुझल समाने।
पटबथि बा काटथि दूहू कैं
छाया सँ सम्माने।

कवि छथि राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ। हुनक साम्यवादी विचारधारा छनि। जाति-पाँति सँ उपर छथि। एहि तरु कैं समदर्शी बना दैत छथि। फल कैं द्विज अन्त्यज मे निर्विविकारी बनि बाँटि अस्थि कैं दोसरक हित मे लगाय दधीचि बनि महादानीक पद प्राप्त कय लैत छथि।

अमर विदित छथि परहित
निज अस्थिक दय दाने।
किन्तु अहाँ आजीवन तिल-तिल
कय सर्वाङ्ग प्रदाने।
समदर्शी! अहाँ द्विज अन्त्यज कैं
कयल तुल फल दाने।
फल दा फूल लुटाबी, दलहुक
शय्याहित कय त्यागे।
त्वचा औषधिक हेतु खिचाबी
इन्धन सारवा भागे।

कविक एहने साम्यवादी विचार धाराक प्रवर्त्तक छी सुमनजी। एकर समर्थन कविक हुनक गंगावर्णन सँ भय भेटैत जाइत अछि।

गिरिक शिखर सँ सागरधरि एकहि
मुक्ति साम्य सन्देश देल स्वच्छन्द भावसँ
स्वर्ग राज्य मे भेद ने राखल, नृपतिरंक मे,
भक्तिक श्रम मे ज्ञानक पूजपतिक अडकमे
क्रातिकारिणी कयल अहँ भव बन्दी बन्धन

हिमालय उच्चवर्ग प्रतीक अछि तँ सागर निम्नवर्गक। मुदा गंगाक दृष्टि मे दुनू समान। गंगा स्वर्ग आ मर्त्यलोकक हेतु एके रंग पवित्र छथि। गंगा मे स्नान कयनिहार राजा आ दरिद्र कैं एके रंग फल भेटैछ। वास्तविक मे गंगा क्रान्तिकारिणी आ साम्यवादी छथि। तैं ने द्विज अन्त्यज कैं एकहि घाट मे जल पियाबैत छथि। अन्त्यज हेतु गंगाक दर्शन सुलभ कय देल। जल सँ सभक उद्धारक बाट प्रशस्त देखि यम समाज मे खलबली मचि गेल-

द्विज- अन्त्यज कैं एक घाट जल अहाँ पियौ लहुँ
दलित दलहुँ कैं पानिपरसि हरिपद पहुँचौलहुँ,
स्वर्ग मन्दिरक रुद्धअर्गला खोलि सहज मति,
अधी-अन्त्यज सुलभ कयल जननी दर्शन गति,
अहां सुधारिका धरणि मे प्रथम प्रथम अयलहुँ जखन
यम-समाज मे मचि गेल रिक्त रक्त हलचल तखन।

स्वयं सुमनजी विश्वविद्यालय मे काज कयने छलनि। तैं विश्वविद्यालयी शिक्षा सँ प्रभावित भय गंगा कैं ओ विश्वविद्यालयक रूप देखलनि। एहि विश्वविद्यालय मे नामलखौनिहार क वयसक कोना सीमा नहि होइछ ने चारि वर्ष धरि पढ़लाक उपरान्त ज्ञानक होयबाक कोनो समय सीमा। बल्कि एतय तैं प्रवेश मात्र सँ स्नातकक उपाधि प्राप्त कय लैत अछि। ई विश्वविद्यालय अगणित अध्यापक, अनुसन्धान सँ सजल-धजल आ आर्यलोकनिक तत्त्वचिन्तन सँ भरल पुरल अछि:-

परम पुरातन भगीरथ श्रम सँ संचालित
विश्व अविध्या हरण हेतु परिपद उद्घाटित
जन निर्वाध प्रवेश, जल कण-कण अध्यापक
नर-नारी, शिशु-युवा-जीर्ण पल भरिमे स्नातक
युग-युग सँ जन आर्य जनतत्त्व चयन कयलनि परम
करथु अविद्या दूर से विश्वक विद्यालय चरम।

कवि प्रत्येक पद मे गंगाक प्रति असीम श्रद्धाभावक प्रदर्शन कयने छथि। गंगात्रिदेव सदाचारिणी छथिन ओ तीनू प्रकारक ताप सँ मुक्ति देनिहार लोक मंगलकारी छथि। कोनो महाकविक हृदय जखन भाव-विभोर होइछ तखन छन्दबद्ध कविता स्वत: नि:सृत होइत अछि। गंगा सँ कविक निवेदन छनि जे हुनक मरुस्थल मे शीतल भक्ति रसक संचालन होअइ।

गंगा अमृत मयी छथि। गंगा मे स्नान कयला सँ जन्म-जन्मान्तरक पाप कटि जाइत अछि आ अन्तकाल मे मोक्षक प्राप्ति होइछ। एतवय नहि देवाधिदेव शिवक गंगाक बदौलत विष पचौलनि। हिमालय भीषण शीत सँ ठिठुरि मरणासन्न भय जाइतथि जँ हुनका गंगाक अमृतमय जल नहि भेटल रहितनि। जँ गंगा पृथ्वी पर नहि अनिता तँ पृथ्वी ज्वालामुखीक प्रभाव सँ भय रहितथि। ध्वस्त भय गेल कवि गंगाक प्रभावक वर्णन करबा मे आधुनिकता प्रदर्शन बड़ कलात्मक ढंग सँ कयने छथि।

कविक डेग आगू बढ़लनि तँ कानन भेटलनि।

बड़ घुमलहुँ। अब कनेक ठमकि कय चलू। रस काव्यक आत्मा थिक। सुमनजी रससिद्ध कवि छथि। हुनक रसमय काव्य साओन भादव कालजयी कवि अछि। प्राय: ऋतुक वर्णन प्रत्येक महाकवि करैत छथि। महाकवि कालीदासक ऋतुसंहार ऋतुवर्णनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि। विद्यापतिक वसन्त वर्णनक मानवीकरण प्रशस्त अछि। मुदा संस्कृत सँ लय आधुनिक भाषाक कवि सभ वर्षा वर्णन जे देखैत छी, ताहि सँ सर्वथा भिन्न अछि साओन-भादवा एकटा वर्षा ऋतु मे कवि। 2 गोट रसक वर्णन कय अद्वितीय प्रतिभा प्रतीक बनल छथि। ई हुनक विशिष्ट कवि कौशलक द्योतक काव्य अछि। प्रत्येक रसक चित्ताकर्षक आ सम्मोहक वर्णन सहृदय कैं स्वत: आकर्षित कय लैत अछि। एहिमे प्रकृतिक मानवीकरण कयल गेल अछि। एक ठाम शृंगार रसक संयोग वर्णन करैत कहैत छथि चिरविलासिनी प्रकृति प्रिया केर सरस वयन ई साओन भादव तैं दोसर ठाम विप्रलंभ शृंगारक वर्णन करैत चिरवियोगिनी प्रकृति-प्रिया केर भरल आँखि ई साओन भादवा।

गद्य काव्य मे हास्य सम्राट छथि प्रो. हरिमोहन झा तँ पद्य काव्य मे प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन हास्यक अनुपम काव्य पुरुष एक हास्य क्रिएट करैत छथि मानवक क्रियाकलाप सँ

तँ दोसर प्रकृतिक उपादन सँ मैथिली मे हास्य विनोदक उद्रेक करैत छथि:-

ओढ़ि मेघ-दल कारी कम्बल,
झाँपि चन्द्रमुख अनचिन्हारि छल
धन-पथ सँ रहि रहि कन डेरिएँ
ताकि हँसयबय अति चंचल
बिजुरी-घट जनु हासछटा
प्रियतम सङ्ग परिहासक अनुभव
हास्यमयी सहचरी प्रकृति केर
अङ्गित इङ्गित साओन-भादव॥

हँसैत चलू तँ देखब काव्यपुरुष कैँ 'अर्चना' लेने ठाढ़। अर्चना मे भारतक अतीतकालक संस्कृतिक प्रति असीम श्रद्धा आ अटूट आस्था व्यक्त कयलनि अछि। ई एक भक्ति प्रधान काव्य अछि। एकर आधार मूलत: मिथिलाक सभ्यता संस्कृतिक प्रतीक छैक। एकर वर्णन मे कवि जाहि पौराणिक गाथा उल्लेख कयने छथि ओ इतिवृत्ति मात्र नहि, बल्कि अपन अनुपम काव्य-चमत्कारक बलैं अत्यन्त आकर्षक ओ आह्लादक भय गेल अछि। कवि अपन हृदयक श्रद्धा कैँ गंगा सीता एवं मिथिलाक प्रति आधुनिकताक पुट दय प्रकट कयने छथि।

पौराणिक रहलहुँ पर गंगा सुमनक कलमक कृपा सँ आधुनिक रूप धारण कय लैत छथि।

वेद ओ वेदांगक धरती मिथिला भारतक छोट-छीन प्रतिभा अछि। उपनिषदक एतय गहन मनन-चिंतन होइत रहल अछि। न्यायशास्त्रक ई जन्मभूमि थिकीह। आध्यात्मिक क्षेत्र मे मिथिलाक गुणगान समस्त संसार करैत अछि।

अस्तु, कवि कैँ भारतीय संस्कृतिक प्रति आत्मीयता छनि आ जननी जन्मभूमिक प्रति स्वर्गहुँ सँ अत्यधिक प्रेम।

हँ तँ देखि लेलहुँ सुमनजीक भक्तिकाव्य तँ कनेक आगू बढ़ू तँ देखब हिनक अन्तर्नाद आई राष्ट्रीय एकताक परिप्रेक्ष्य मे लिखल हुनक राष्ट्रीय भावनाक प्रतिकात्मक पोथी अछि। एहि मे कविक राष्ट्रहित एवं राष्ट्र एकताक जेहन गम्भीर अभिव्यक्ति भेल अछि, तेहन अन्य कोनो विकसित भाषा मे नहि भेल अछि राष्ट्रहित मे कवि रणक तुमुल नाद कयने छथि। कवि कैँ भारतीय स्वतंत्रता सेनानीक प्रति अद्‌भुत श्रद्धा छनि। तैँ प्राचीनकाल सँ लय वर्त्तमान काल धरिक प्रमुख राष्ट्रनिर्माताक स्मरण - वन्दन करैत छथि।

Âýæð. âæÚðU¤¼ýÛææ âé×ÙÁçãUÙæ ·¤çßÌæÜð¹Ù×ðÂÅéUÀUçÍ ÌçãUÙæ »læÜð¹Ù ×ð çâhãUSÌÐ ¥æð °·¤çãU Üð¹Ùè â¡ ·¤Íæ, ©UÂ‹Øæâ ¥æ ¥æÜæð¿Ùæ çÜ¹ÜçÙÐ ãéUÙ·¤ ©UÂ‹Øæâ ¥çÀU ©U»Ùæ·¤ ÎØæÎßæÎ, ¥æÜæð¿Ùæ^×·¤ Âæð°Íè ¥çÀU ×ñçÍÜè ·¤æÃØ ÂÚU â¢S·ë¤Ì·¤ ÂýÖæßÐ °·¤ÚU ¥çÌçÚU•Ì ¥çÀU ¥Ùð·¤ Âæð°Íè·¤ ÖêçÑ·¤æÐ ÕãéU×é¹è ÂýçÌÖæßæÙ, ÕãéU¥æØæ×è ÃØç•Ì^ß, ÕãéUÖæáæçßÎ Øé»Îýc¼ýcÅUæ ¥æ Øé» òcÅUæ ·¤çß·¤ ·¤çß×ãUæ·¤çß Âýæð. âéÚðU¤¼ýÛææ âé×Ù °·¤çãU â¢» â×æÁ âéÏæÚU·¤, ÚUæcÅ™ÖQ¤Ì, ÚUæÁÙèçÌ·¤, Â˜æ·¤æÚU, ·¤çß, ·¤Íæ·¤æÚU, ©UÂ‹Øæâ·¤æÚU °ß¢ ¥æÜæð¿·¤ ¥æçÎ ÀUçÍÐ

एहि क्रम मे अहाँ देखब राष्ट्रभक्ति सम्बन्धी दोसर रचना 'भारत वन्दना'। एहि मे भारत-जननीक अखंड स्वरूपक अतीव सजीव चित्र अंकित कयल गेल अछि। ई काव्य संग्रह छप्पय छन्द मे लिखल गेल अछि। एकर सभ सँ प्रमुख आ अनुपमेय भारतक स्वरूप वर्णना एहन कल्पना आइधरि कोनो राष्ट्र कयनो ने होयत। कवि अपन भारत मे सात लोक भूलोक सहित उपरक सत्यलोक कैँ अखण्ड भारतमे समाहित कयने छथि:-

भूपद भुविव्याहत स्वभूमि पद महत् जनपदक योग
तप-बल सत्य सनातन भारत खण्ड अखंड नियोग।

बढ़ब तँ बढ़ैत रहू। देखू हुनक 'अंकावली' जाहि मे भेटत हुनक आध्यात्मिक चिन्तन, दार्शनिक सिद्धांत आ तकर व्यवहारिक प्रयोग। जतरा चारू धाम मे चारू धामक वर्णन। 'कथा भूतिका' मे विभिन्न स्रोत सँ संग्रहीत 16 गोट कथा अछि। ई हुनक कथा काव्य थिक। 'बुद्ध बोध' मे गौतम बुद्धक वंश, जन्म, लालन, पालन, वाल्यकाल, शिक्षा-दीक्षा, स्वभाव, यशोधराक पाणिग्रहण, राहुलक जन्म, सांसारिक राजसुख सँ विकर्षण, तत्त्वज्ञान आदि गौतम बुद्ध सँ सम्बद्ध विषयवस्तुक सरस सरल भाषा मे वर्णन।

बहुत देखलहुँ हुनक काव्य संग्रह। देखू हुनक खण्ड काव्य 'उत्तरा'। एकर आधार महाभारतक कथा अछि, मुदा सभ ठाम कविक कल्पना, मौलिक भावना देखब। 'दत्तवती' महाकाव्य अछि हुनक। एहि मे विश्वक वर्त्तमान राजनीति तथा स्वातंत्र्योत्तर अपन देशक राजनीतिक गतिविधिक विस्तृत वर्णन अछि। कवि क्षेत्रीय भावना सँ बहुत ऊपर उठि राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय भावनाक वर्णन बड़व्यापक रूपैं कयने छथि।

प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन जहिना कविता लेखन मे पटु छथि तहिना गद्यलेखन मे सिद्धहस्त। ओ एकहि लेखनी सँ कथा, उपन्यास आ आलोचना लिखलनि। हुनक उपन्यास अछि उगनाक दयादवाद, आलोचनात्मक पोथी अछि मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव। एकर अतिरिक्त अछि अनेक पोथीक भूमिका।

बहुमुखी प्रतिभावान, बहुआयामी व्यक्तित्व, बहुभाषाविद युगद्रष्टा आ युग स्रष्टा कविक कवि महाकवि प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन एकहि संग समाज सुधारक, राष्ट्रभक्त, राजनीतिक, पत्रकार, कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं आलोचक आदि छथि। ओ स्वयं गांधीजीक विषय मे कहने छथि जे गान्धी जी की नहि छलाह? तहिना हम कहब जे सुमनजी मिथिला, मैथिली जगतक की नहि छलाह।

- दूरभाष नं. 20612-2673161
मोबाइल - 07209025722



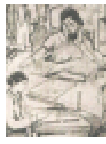




विशेष लेख

आशा मिश्र : स्त्री-विमर्शक विविधता

पंचानन मिश्र



श्रीमती आशा मिश्र मैथिली कथा जगतक सुपरिचित लेखिका छथि। 'सबसँ पैघ विजय' आ 'थाहैत स्वप्न' दू टा कथा संग्रह आओर नवीनतम प्रकाशित उपन्यास छन्हि 'उचाट।' एकर अतिरिक्तहुँ यथेष्ट संख्यामे कथा यत्र-तत्र छपल छन्हि। कथा ओ उपन्यास विधा सँ विलग संस्मरण, अग्रलेख, समीक्षा, शब्द चित्र आदि हिनक रचना मैथिली साहित्यक सम्पदा थिक। साहित्य लेखनक परिधि से फराक ई एक कुशल चित्रकार सेहो छथि आ महाकवि यात्रीजीक 'चित्रा'क कैक लोक प्रसिद्ध पांती आधारित रेखाचित्र सेहो बनौने छथि। जे-से। हिनक सर्वांश कथानक स्त्री केन्द्रित अछि। स्त्रीक एकाधिक स्वरूपक ई दिग्दर्शन करवैत छथि। मध्यमवर्गीय मानसिकता सर्वत्र स्थान ग्रहण कएने अछि। हिनक स्त्री पात्र अन्ततः स्वावलम्बी, मजबूत ओ व्यक्तिवप्रधान व्यक्तिक रूप मे सोझां अबैत अछि तेँ हिनक नारी उपार्जनशील, आत्मनिर्भर ओ प्रगतिशील छवि कँ सेहो रह-रहाँ त' नहि मुदा ठाम-ठूम बनौने देखि पड़ैत अछि। हिनक स्त्री विमर्शक विषयगत तथ्य युगानुरूप थिक। सामाजिक प्रतिबन्ध ओ आर्थिक पराश्रयिता कँ स्त्रीक उन्मुक्त विकासमे प्रबल बाधक कँ ई पक्षधर थिकीह। एतए हिनक साम्यता प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका बर्जिनिया वुल्फक पोथी 'ए रुम ऑफ वन्स ऑन'क एहि पांती सँ खैत अछि जे 'नारी समाज के पाछाँ हटबाक प्रवृत्ति एवं अक्षमताक लेल उत्तरदायी थिक आर्थिक ओ सामाजिक प्रतिबन्ध। वास्तविकता अछि आ जेना कि आशा मिश्र सेहो स्वीकार करैत छथि जे स्त्रिगणक सामाजिक, जैविक, नैतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विश्लेषण नहि होएबाक प्रमुख कारक रहल अछि पूर्वाग्रह, संवादहीनता ओ कालवाधितपन। ओना स्त्री विमर्श कोनो नव अवधारणा नहि थिक। विकसित कल्याण - अकल्याणक आधार पर चिन्तन मनन होइत

रहल अछि। ईसा पूर्व पांचम शताब्दी मे प्लेटोक 'रिपब्लिक' मे स्त्री प्रसंग पर चर्च भेटैत अछि। कहल जाइछ जे वैदिक युगमे भारत मे नारीकेँ यथोपयुक्त सम्मान आ मर्यादा प्रदान कएल जाइत छल। इस्लामक आविर्भावक बाद ई मर्यादा एकाएक लुप्त भ' गेल। भारतीय धर्मग्रंथ ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तरीय ब्राह्मण, वशिष्ठ धर्मसूत्र, हिरण्यर्कश गृह्यसूत्र, आपस्तम्ब, धर्मसूत्र, बोधायन धर्मसूत्र आदिमे स्त्रिगणक सामाजिक भूमिकाक उल्लेख अछि। मध्यकालीन भारतमे सेहो मीराबाई 'बरजी म काहू की नहि रहूँ' लिखि स्त्री विमर्शकेँ ससारैत बूझि पड़ैत छथि। आधुनिक कालमे पुनर्जागरण अर्थात् लगभग डेढ़ सए वर्ष पूर्व ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक विधवा - बेमेल विवाहक हुंकार सँ पूर्व एक सीमित अवधि धरि स्त्री चिन्तन मन्द बूझि पड़ैछ। ओना इतिहास त' ईहो कहैछ जे कोनो कालावधि मे स्त्री विमर्श नहि कएल जाइत छल। ताहि समय स्त्रीगण अपन पति, पिता आ पुत्र सँ कोनहुँ सवाल नहि पूछैत छलीह। अ-सूर्यम्पश्या स्त्रीगण केँ दुनिया ओ राज्य व्यवस्थासँ कोनो तरहक संस्थागत सम्पर्क नहि रहैत छल। मुदा लेलिन सन महान व्यक्ति सेहो भेलाह जे स्त्री 'क' मनुष्य' बूझि पूंजीवादी सिककड़िसँ मुक्ति दियौलनि। एकैसम शताब्दीमे स्त्री विमर्श क विवेच्य तथ्य बेसी उदार भऽ गेल अछि। सामाजिक परम्परा सँ गाँथल जाति, लिंग ओ धर्म आधारित विषमता केँ अस्वीकार करबाक इच्छा पहिने सँ कतहु अधिक नोखगर, तीक्ष्ण आ धारदार बनि गेल अछि। सच त' थिक जे स्त्री विमर्शक विषयवस्तु, ओकर सीमा, ओकर प्रकार युगानुरूप परिवर्तित होइत रहल अछि। आइ सती प्रथाक उन्मूलन, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अन्तरजातीय विवाह, सीमा धरि बाल विवाह, बेमेल विवाह आदि अप्रासंगिक भऽ गेल अछि किऐक त' समाज एकरा समाहित क' लेने अछि।

आशा मिश्र सिद्धान्ततः दक्षिणपंथी बूझि पड़ैत छथि। वामपंथी विचारधारा हिनक कथा साहित्य केँ न्यून रूपेँ स्पर्श करैत अछि। हिनक स्त्री पात्रक दाम्पत्य जीवन कतहु ओझराएल त' अन्यत्र सोझराएल देखि पड़ैत अछि। भौतिकवादक आकर्षण सँ असंतुलित पारिवारिक जीवन मे हिनक पात्र, आरवधिकए स्त्रीगण जांतल, छटपटाइत ओ बेचैन बूझि पड़ैत छथि। हिनक स्त्री विमर्श एकपक्षीय, एकभगाह, एकदिशाह नहि अछि। ई समाजक बनाओल 'फ्रेम' मे रहि, परिवारक ऊहा-पोहक बीच, पति-पत्नीक स्वीकार्य सरोकारक मध्य स्त्रीगणक समस्या, समाधान एवं उत्तरोत्तर विकासक चिन्तन करैत



छथि। स्त्री विमर्श त' स्वमेव सुस्पष्ट अवधारणा अछि। स्त्री आ पुरुष सृष्टिक आदिकाल सँ दू खाम्ह रहल अछि जाहिमे एक खाम्ह तात्कालिक कारक सँ घनाएल। नोनिआएल आ पिराएल बनि कमजोर होइत रहल अछि। आशा मिश्र एहि असक्त खाम्ह अर्थात् स्त्री पक्षक वेदना, कष्ट, अ अवसादकेँ वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे मंथन करैत सिसकैत रहबा लेल नहि छोड़ि दैत छथि अपितु ओकरा मे साहस, धैर्य आ कर्मठताक प्रवाह आनि दैत छथि। ओ अन्त घरि कुंठा, अपग्रह आ हीनताक महाजाल मे लबझाएल नहि रहैत अछि।

मैथिलीक आरंभिक रचना स्त्री विमर्श केँ छोपैत रहल अछि। मैथिली पाठक छगुन्तामे चकभाउर देने ठाढ़ रहलाक अनुभूति कएने छथि। हुनक तरहत्थी पर 'बुर्जुआ बुद्धिजीवी' जौ छीटैत छलाह। जनिक शब्दकोशमे उदारता, निरपेक्षता ओ उन्मुक्तता घुसिअयबाक सभ दिन मात्र प्रयासहि करैत रहि गेल। बुर्जुआ बुद्धिजीवीक चिन्तनधारे एतूका गामकेँ कूड़ लगौलक, परिवार ओ समाजक सिरा पर कील ठोकैत रहल आओर समग्र संस्कृति क स्वरूपकेँ फूट करैत रहल। मैथिलीक आधुनिक लेखन एहि बुर्जुआवादक जाँत तऽरआब दर्राइत नहि रहि गेल अछि।

आशा मिश्रक प्रगतिवादिता मे विषमता केँ स्वीकार करितहुँ नैराश्यपन नहि अछि। अतीतक कारी स्याह रूप क्लान्त त' करैत छन्हि मुदा ओकरा विस्मृत नहि करैत छथि किऐक त' आगाँ बढ़बाक इएह सम्बल होइत छन्हि। महान लेखिका शिवानी लिखने छथि :

'सड़ी रुढ़ियों और विषाक्त परम्पराओं से जूझते-जूझते जर्जर जीवन आसन्न मृत्यु के भय से इतना क्लान्त हो जाता है कि अतीत को एक बार फिर खींच दूसरों को दिखाने की न इच्छा ही शेष रह जाती है, न अवकाश। मेरी असमाप्त कहानी भी सदा असमाप्त रहेगी। इसकी गरिमा का उत्स सदा अर्जुन की उन दो कलातीत प्रतिज्ञाओं में छिपा रहेगा- 'न दैन्यं न पलायनं।' (शिवानी) : सुनहु तात यह अकथ कहानी) आशा मिश्रक कतेको पात्र अर्जुनक प्रतिज्ञाकके शिरोधार्य करैत बूझि

पड़ैत अछि। ई प्रतिज्ञा हिनक स्त्री विमर्शक गूढ़त्व अछि। स्त्री विमर्शक कलेवर मे आधुनिक जीवन मे स्थिति, लीव-इन रिलेशनशिप, महिला आरक्षण सँ स्त्री-पुरुष प्रतिद्विन्दता, नारी सशक्तीकरण, आर्थिक सुदृढ़ता आदि भविष्य मे समाविष्ट हैत, से आशा।

स्त्री विमर्शक विषयगत तत्त्व मे अगवे सुख-दुख, हर्ष-विषाद, अन्त:-वाह्य आदि मानवोचित अनुभूतिएताऐ समाहित नहि अछि अपितु ओ समस्त भौतिक, निर्मित आ युगानुरूप कारकहुँ कँ विवेचन कएल जा सकैत अछि जकर अमिट सरोकार, प्रभाव ओ चेन्ह स्त्रीजीवन पर पड़ैत आयल अछि। शृंगार, पसाहनि, रंग-ढौरब आदि स्त्री जीवन शैलीक आदिकालीन प्रवृत्ति रहल अछि। एहि प्रवृत्तिकेँ एहि उपक्रम कँ, एहि क्रियात्मकता कँ स्त्रीक विभिन्न परिस्थितिक प्रतीक रूपमे चिहिन्त कएल गेल अछि। स्त्री विमर्शक परिधिकेँ विस्तृत ओ औचित्यपूर्ण करैत आशा मिश्र शृंगारक तुलनात्मक ओ समकालीन स्थिति पर फरिच्छ प्रकाश देने छथि:

'कनियाँ आ कनियाँक सखी लोकनिक शृंगारक तैयारी देखि प्रौढ़ा महिला लोकनिकेँ अपन विवाह मोन पड़ि रहल छलनि। एक महिला बजली- हमरा लोकनिक समयमे त' तेहन शृंगार होइ जे कनियाँ के आर विकट बना देल जाइत छलै। पसाहनि कयल मुँह रंग आ पसेना मिलि कऽ एक भ' जाइत छलै।

दोसर महिलाक अनुभव छलनि- हमर विवाह वृहस्पति दिन भेल छल। गर्मीक दिन छलैक। वृहस्पतिक शेष शुरू होयबा सँ पहिनहि तेल लगा क', बीचला सींथ एकदम सोझ होइ तकर ध्यान रखैत जुट्टी बान्हि देल गेल। जुट्टीमे रंग-बिरंगक फीता कसि देल गेलैक। स्नोपाउडर, करु तेल लगयलाक बाद रेशमी नूओ पहिरा देल गेल। विवाह वेदी पर जाइत-जाइत माथक तेल कपार पर चूबि रहल छल। काजर पसरि कए मुँह कँ काजर बिलाड़ि बना देने छल। आ, पसेना संग पाउडर मुँहक ऊपर आबि चित्ती साटि देने छल। रेशमी साड़ी मोचड़ा क' साग-पात सन भऽ गेल छल। धन्य कहियो तहियाक पुरुषकेँ आजुक वरत' एहन कनियाँ कँ देखि पड़ा जेतै। (सम्मोहन)

समाजमे स्त्रीक भूमिकामे वर्ग विभाजन, जातिगत समीकरण, छोप-अछोप आदि मध्यकालीन भारत मे परिवेशजनित विवेच्य प्रश्न रहल अछि आ स्वरूप परिवर्तन कए आजहु खाम्ह गाड़ने अछिए। भारतीय समाजक विश्लेषणक दू टा अहम छोर अछि दलित आ स्त्री। आशा मिश्र दलित आ स्त्री कँ एकहि तराजू पर जोखैत छथि। दुहूक उत्पीड़न, शोषण आ अवहेलना एक्के धरातलक विषयवस्तु थिक तैयो लेखिका दलित स्त्रीक मनोवेग, आत्मश्लाघा आ असमंजस्यक स्थितिकेँ दलितेत्तर स्त्रीगण सँ भिन्न चित्रित कएने छथि। ओना सामंती समाजक पारिवारिक परिवेश सकल स्त्री जातिक सृजनात्मकताक शत्रु थिक। एहि परिवेशसँ बहरएबाक प्रयास ओ संघर्ष हिनक कथा मे जत-तत विद्यमान अछि मुदा दलित स्त्री सर्वत्र अत्याचारक शिकार होइत देखि

दूटप्पी - साक्षात्कार



स्त्री विमर्श तऽ शाश्वत अवधारणा थिक - आशा मिश्र

- मैथिलमे पहिल प्रकाशित रचना?
  1989 ई. मे 'बाबूजी : एक स्मृति तर्पण।'
- हिन्दीक कोन-कोन पत्रिकामे रचना प्रकाशित?
  मनोरमा, नवनीत।
- यात्रीजीक 'चित्रा'क चित्रांकन?
  1984 ई. मे 'चित्रा'क पांती पर आध दर्जन रेखा चित्र बनौलहुं।
- भविष्यमे बहराएवला पोथी?
  क्षेत्रे-क्षेत्रे धर्मम कुरु (पिताक जीवनी)
- आ, स्त्री विमर्श?
  होइत रहल अछि, होइत रहबे करत।
- अहाँ देश-विदेश घुमलहुङ्ग मुदा यात्रा वृतान्त नहि लिखलहुं?
  लिखलहुँ त' मुदा प्रकाशित नहि भेल अछि।
- कोनो व्यंग्य रचना?
  'छोटा सा घर होगा' (मनोरमा)
- अनुवाद प्रसंग?
  2002 ई. मे साहित्य अकादेमीक गुवाहाटी मे अखिल भारतीय महिला कथाकारक मे शामिल भेलहुँ आ असमिया, उड़िया, पंजाबी सहित छओ भाषाक कथा क मैथिली अनुवाद कयलहुँ जे अप्रकाशित अछि।
- कथा-उपन्यासे धरि लेखन प्रधानत: केन्द्रित?
  निर्विवादत: सत्य।
- मैथिलीक जीवित प्रिय कथाकार उपन्यासकार?
  नीता झा, लीली रे आ जीवकान्त।
- पहिल कथा पाठ?
  बोकारो मे 'थाहैत स्वप्न'।

पड़ैत छथि, भावनात्मक भयोदोहनक शिकार होइत बूझि पड़ैत छथि। आकांक्षाक पंखकेँ पांगि जएबाक शिकार होइत अवतीर्ण होइत छथि:

'मुनीमजी चश्मातर सँ कनखिआएल आँखि सँ देखितै बजलाह – पानि त' चलिते छै, मुदा ई बच्चा कँे पानि नहि पिआओत। आ, दूध तऽ नहि छुआइ छै सरकार। एकटा ब्राह्मणी भेटवो केली, मुदा आठ दिन' पहिने हुनकर बच्चा मरि गेल छनि। एहि सँ पहिनहुँ एकटा बच्चा मरि गेल छलनि। हमर घरवाली साफ कहलनि जे एहन मरछुलाहिक दूध अपन छोटे सरकार कोना पीता?

मालिकक पोताकँे स्तनपान करबैत काल लिलिया माएक सर्वांग शरीर सिहरि उठल। एहि दुखिताहि, भुट्ट-खाँट, दुष्वरि पातरि बौआसिन जमींदार मालिकक पतोहू, ओकर मलिकाइनि आओर ओकरा सन रुपवती आ कर्मठ स्त्री खबासिनी।' (ग्रंथि)

बड़ नान्हिएता दृष्टान्तमे आशा मिश्र असमानता, समाजक सर्वोच्चयता, मातृत्व, वर्ण व्यवस्था आदि कँे स्त्री विमर्शक सतह पर अनैत थिकीह। लिलिया माए पिछड़ल जाति समुदायक थिकीह। हुनक स्तनपान कँे आरम्भमे कुलीन व्यवस्था, जातिगत कुंठा, स्तरीय मान्यता कँे ध्यानमे राखि पारिवारिक विरोध होइत अछि मुदा नवजात 'कुलदीपक'क प्राण रक्षा लेल परिस्थितिजन्य विवशता, अविकल्पहीनता, पर्यायहीनता आदिक कारणसँ ओकरहि शरणागत होइत जाइत छथि। लिलिया माएक आत्मसंघर्ष, ओकर आहत होइत भावनात्मक आवेग, ओकर विचलित मनोमस्तिष्कक गत्यात्मकताक कोनो प्रश्रय, कोनो महत्त्व, कोनो प्रयोजन नहि बूझल जाइत अछि। स्त्रीक छविक सम्बन्धमे विचारक एक निरन्तरता भेटैत अछि। ई निरन्तरता कोनहुँ ने कोनहुँ रूपमे संघर्षक रूप धयने रहैत आयल अछि। ई आत्मसंघर्ष भनहिं लेखिकाक व्यक्तिगत अनुभूतिक अभिव्यक्ति किऐक नहि भेल होअय मुदा एकर पाछाँ सम्पूर्ण समाजक स्त्रीक सामाजिक सरोकार कँे लऽ कए चलि रहल संघर्ष उपस्थित रहैत अछि।

आशा मिश्र यौन प्रसंग कँे सामाजिक अन्तरविरोध सँ जोड़ि कए देखलनि अछि। समाजमे व्याप्त अन्यान्य शोषण, प्रताड़ना, उत्पीड़न आदि के समान स्त्रीक यौन शोषण कँे ओ एक सामाजिक अपराध जकाँ प्रस्तुत कएलनि अछि। हिनक यौन शोषण मे एक भाग जँ आक्रमक अछि, विद्रोह अछि, कठोरता अछि तँ दोसर दिस पलायन, सहनशीलता मो वलात् समर्पण थिक। इएह स्थिति, यौन शोषण सँ विक्षिप्त स्त्रीक स्वरूप स्त्री विमर्शक संदर्भ मे निर्णायक मोड़ पर ठाढ़ नजरि अबैत अछि। स्त्रीक संदर्भ मे आशा मिश्र जे दृष्टिकोण अपनौलनि अछि ओ नव विमर्शक संकेत त' दैत अछि मुदा ओ स्त्री विमर्शक संदर्भ मे मार्क्सवादी सिद्धान्तक प्रत्युत्तर दैत बूझि पड़ैत छथि। मार्क्सवादी विमर्श मे स्त्रीक देह कँे लऽ कऽ मंथन नहि कएल जाइछ वरन् ओकर आत्मा, ओकर लालसा आओर ओकर आकांक्षाक प्रति परम्परागत धारणा पाओल जाइत अछि। ओ एहि 'मिथक' कँे खण्डित करैत छथि। यौन नैतिकता पर प्रश्न उठबैत छथि। तैयो आश मिश्रक स्त्री पात्र सभमें अपन सीमा निर्धारणक क्रममे विवशता, लाचारी ओ भयातुरता स्पष्ट देखबामे अबैत अछि:



'अपना आंगनामे पर पुरुष सब नै अबैत छथि की? सांपो सँ बेसी जहर त' हुनकर आँखिमे रहैत छथि।

किन्तु बाबूजी एना कियेक ताकि रहल छथि? आइ हुनको आँखि सांपक सन कियेक लागि रहल अछि? (सांप)

ई देहक स्वायत्तताक कैक स्वरूप प्रस्तुत कएने छथि। कतहु स्त्री अगर्व मानसिक यौन शोषणक क्रूर अनुभूतियेता करैत बुझि पड़ैत छथि त' दोसर ठाम बलात् सेक्स, अनिच्छा समागम त्रासदीपूर्ण कामक्रीड़ाक चित्रण कए एक पराधीन, मजबूर ओ दबाएल स्त्रीक पीड़ाक दर्शन करबैत छथि:

'कोनो स्त्रीकँे माथ दुखयला पर जौं घरवला हाथो छुवि दैत छैक त' क्रोध चढ़ि जाइत छैक।

आ कैंसर सन रोगमे देहक ई गंजन?

मनो कयला पर मोहन बौआ मानैत हेथिन?

(उचार)

'पति प्रेम की होइत छैक, हम कहियो नहि बूझि सकलहुँ। हुनका हमर देहक झिंझोरनाइ अ हमरा बेटी सबकँे जन्म देनाई यदि प्रेम क परिचायक अछि त' ओ हमरा बड़ प्रेम करैत छथि।' (दृष्टिकोण)

देहगाथाक क्रममे लेखिका मातृत्व ओ यौन आकांक्षा क' नव गढ़नि कँे गढ़ैत बूझि पड़लीह अछि। ई स्वरूप प्रचलित सामाजिक मान्यता पर आधारित अछि। जाहिमे संतानोत्तपत्ति, सन्तान पालन, वंश संरक्षण आदिक पारिभाषिक शब्दावलीक नाम पर विवाहक खतियानी तैयार होइत रहल अछि। इएह परम्परा बेमेल विवाह, बहु विवाह, बाल विवाह आदि कँे प्रश्रय दैत रहल अछि। आजुक स्त्री विमर्श मे भनहिं एहि अमाषिक प्रथा पर आक्षेप किऐक नहि करबाक यत्न भऽ रहल होअय, एकर प्रतिषेधक यत्न

किऐक नहि भऽ रहल होअय, एकर प्रतिरोधमे किऐक नहि जनमानस तैयार करबाक यत्न भऽ रहल होअय मुदा वास्तविकता एहुखन पूर्ववते विराजमान अछि:

'नहि देखल जाइत अछि त' बेटाक तेसर विवाह करा दियनु। कृपा क' एहि बेर ई नहि कहबै जे बच्चाक खातिर विवाह कऽ रहल छी। एहन नाटकवाज पुरुष सभकेँ मोन होइत अछि गरदनि दाबि कऽ मारि दी। नाम बच्चाक आ इच्छापूर्ति देहक।'

यैह त फर्क छैक पुरुष आ स्त्रीमे। अपना समाजमे पुरुष बूढ़ भेलाक बादो जुआन बनि विवाह क' सकैत अछि मुदा स्त्रिगणक लेल एकटा बच्चा भेलहि बूढ़ मानल जाइछ।' (उचाट)

हिनक स्त्री विमर्श मे स्त्री अपन देहकेँ कतहु इच्छानुसार संचालित, संरक्षिका ओ स्वामित्व प्राप्त कयने छथि त' अन्यत्र मुक्तहीन, बान्हल ओ जौड़ाएल छथि। हिनक स्त्री पात्र जेना-तेना, कोनो ने कोनो रूप मे, भनहिं आंशिक ओ परिच्छायाक सीमाटाएमे महान नारीवादी लेखिका प्रभा खेतानक संदर्भ केँ अनुगमन करैत बूझि पड़ैत थिकीह:

'महादेवी ने ठीक ही कहा है अंगार बनो। और अंगार बनने के लिए तपस्या की जरूरत पड़ती है। आधुनिक स्त्री की तपस्या पार्वती की तपस्या से भिन्न है। आज की पार्वती के लिए केवल पति ही काफी नहीं है। स्त्री भी न्याय और औचित्य की मांग करेगी। क्या मुक्त स्त्री ने अपनी देह को खुला छोड़ दिया है? आज भी अधिकतर औरतें इससे सहमत हैं? शायद हां, शायद नहीं?' (प्रभा खेतान : अन्या से अनन्या)

आशा मिश्रक मृणाल तपस्या करैत छथि। विधवा भए, जुआनिएमे संघर्ष करैत छथि। समाज सँ लड़ि न्याय मांगि जीविका प्राप्त करैत छथि। अपन सुन्दर काया केँ इच्छित व्यक्तिएता केँ समर्पित करैत छथि। ओना एहि संघर्षमे, एहि अवधिक जीवन यापनमे, एहि अन्तरालक कटु-मधु अनुभूतिमे हुनका समाजक विवाह, द्वैध ओ नकली स्वरूपक दर्शन सेहो होइत छनि। मुदा ओ त' लहलह करैत अंगार बनि गेल छलीह तें पूर्वापेक्षा परिपक्व,दुस्साहसी, आत्मस्वावलम्बी बनि जाइत छथि।

'एखनुक सब सँ पैघ समस्या छैक समाजक श्वेत वस्त्रधारी लोकक गिद्ध दृष्टिसँ अपन रक्षा कयनाइ।' (मृणाल)

हिनक कथामे नारीक आत्मसजगता पर बल देल गेल अछि। ई नोकरीपेशा स्त्रीक पारंपरिक समस्या आ कुशलता दुहू पक्षक चित्रण प्रामाणिकताक संग कयलनि अछि मुदा एहनो स्त्रिगणक छटपटाहटि अछि जे आधुनिकतावश अपना पांखि केँ खुजबाक तऽ अनुभूति करय चाहैत छथि ओ मुक्ताश में विचरण त' करए चाहैत छथि परंच सामाजिक विषमता ओ मानसिक यातना सँ सोझा-सोझी होएबाक लेल बाध्य होइत छथि। एहि यातनामे हिनक पात्र परम्परा, मान्यता ओ अस्मिताक नाम पर भनहिं आरम्भमे दबल, पछुआएल आ सशंकित बनल रहैत अछि, पछातिओ लक्ष्य प्राप्ति मे सफल भऽ जाइछ :

'अहीं आओर माँक आँगुर पकड़ि हम स्वावलम्बनक पथ पर चललहुँ। जौं नोकरी छोड़ेबाक छल तऽ हमरा अतेक किऐक पढ़ेलहुँ?' (समिधा)

समिधा कथाक नायिका मेधाक विवाह लेल पिता अपस्यौत रहैत छथि। एक वरागत नोकरीपेशा मेधाक विवाहेत्तर नोकरी छोड़ि देबाक शर्त रखैत छथि मुदा अन्तत: मेधाक सबल तर्क, स्थितिक औचित्यपूर्ण विश्लेषण एवं बदलैत परिवेशक विवेचनक आगाँ पिता विवाहक शर्त्त नहि मानैत छथि। मेधाक भूमिका, ओकर रणनीति, ओकर चातुर्य परम्परावाद, सामन्तवाद ओ एकाधिकारवादक महाजाल सँ विमुक्त होइत चिड़ै जकाँ अछि। एहने विमुक्तिक अनुभव प्रसिद्ध कथा लेखिका अजीत कौर मे पबैत छियनि:

'मैं भी शरीफ खानदानों की बहू-बेटियों की तरह बिना किसी शिकवे-शिकायत के चुपचाप इन परम्पराओं की रुढ़ियों की चिता में जल रही थी। जलते अचानक एक दिन मुझे होश आया और मैं उस चिता से निकल कर बाहर आकर खड़ी हो गई। मेरे लिए यह किसी करिश्मे से कम नहीं था।' (अजीत कौर : कूड़ा-कबाड़ा)

नारीवादी लोकनिकेँ सेहो प्रेमक कोनो बनल-बनाओल पैकेजिंग वा पारंपरिक नैतिकता स्वीकार्य नहि छन्हि। ओ सभ सेहो मानैत छथि जे प्रेम, मातृत्व आ दाम्पत्य सभ सँ पैघ नैतिक अनुभव अछि। आशा मिश्रक स्त्री पात्र उदात्त रूप मे सोझां अबैत अछि। ई उदात्त रूप मातृत्वक स्तर प्रदान करैत अछि। ओना मातृत्व ततेक लबझाएल झौँझड़ि अछि जे स्त्री मुक्तिक सामने सभ सँ पैघ चुनौती मानल जाइछ। स्त्री अपन अस्मिताक रक्षा लेल पति सँ सम्बन्ध तोड़ि लैत छथि। पुनर्विवाह सेहो कए लैत छथि। पहिलक पति सेहो विवाह कऽ लैत अछि। एकर उपरान्त बच्चाक भविष्य ओ वर्त्तमानक समस्या शुरू भऽ जाइछ। एतहि स्त्रीक उदात्त रूप मातृत्वक रूप मे सोझां अबैत अछि। आशा मिश्र स्त्रीक एहि उदात्त रूपकेँ सर्वोच्चता प्रदान करैत छथि। पुरुषसँ ऊपर स्थान विनिर्धारित करैत छथि। मानवीय सम्बन्ध मे स्त्रीकेँ अग्रतर मानैत छथि:

'नौ मास पेट मे रखनाइ, प्रसव कालक असह्य पीड़ा केँ बर्दाश्त करैत रक्त मांसक जीवित पिण्डकेँ जन्म द' ओकर स्पर्श, ओकर पालन-पोषण स्त्री केँ केहन अनिर्वचनीय सुख सँ ओत-प्रोत कऽ दैत छैक।

जखन अपन बच्चा नहि भेल त' दोसराक बच्चाक कतेक आस?

बच्चाक इच्छा कोन स्त्री केँ नहि होइत छैक।' (उचाट)

मातृत्वक सर्वोच्चताकेँ प्रमुखता देलाक बादहुँ आशा मिश्र बच्चाक पालन पोषण, देखरेख, लालन-पालन आदि पर युगानुरूप चिन्तन कएने छथि। नहि थोड़ त' बासठि प्रतिशत बच्चाक माए आइ साक्षर थिकीह। कैक स्त्री विभिन्न सेवा मे कार्यरत छथि। बच्चाक परिपालनक टेक्नीक बदलि रहल अछि। सुविधा बढ़ैत जा रहल अछि। एतवा होइतहुँ लेखिका माएक स्तनपान केँ स्वास्थ्य विज्ञान ओ जैवीय दृष्टि सँ आवश्यक मानैत छथि मुदा स्तनपान नहि करयबाक प्रवृत्ति पर आक्षेप करैत छथि:

'आइ-काल्हिक मौगी सब बच्चा के जन्म देत मुदा एक घोँट दूध ओकर कंठ तर मे नहि जाय देतै। कखनो फैशनक कारणेँ अपन दूध नहि पिआओत।' (उचाट)

हिनक स्त्री पात्र कतहु-कतहु युग-युगसँ स्थापित धारणाक सीमा-रेखा केँ फानि जएबाक प्रयास करैत छथि। जकर अन्त विशृंखलित भऽ जयबामे सेहो होइछ। एहि विचलित, स्खलित ओ आत्मसमर्पित वेदना केँ ओ दार्शनिक आयाम दऽ कए प्रासंगिकता सिद्ध करैत छथि। एतहिं स्त्री जीवनक सहज ओ स्वाभाविक विकासकेँ कुंठित करयवला प्रत्येक चीज सँ लड़ैत अछि ओ स्त्री जीवनक 'तयशुदा' धारणा पर प्रश्न चिन्ह लगबैत अछि। एहि क्रममे दाम्पत्य जीवनक घुटन ऊब ओ भीड़नाइक तीव्रता सँ अनुभव होइछ। अन्तत: मध्यवर्गीय पारिवारिक ऊष्मा, घरसँ भेटल संस्कार ओ नैतिकताकेँ अनाधुनिक एवं अप्रासंगिक बुझला लेल विवश भऽ जाइछ:

'अहाँकेँ अपन पुरुषत्व पर कोनो चोट बर्दाश्त नहि होइछ। जखनि कि हम एकटा, मात्र एकटा बच्चा लेल देहक गंजन करबा रहल छलहुँ।' (उचाट)

स्त्रिगणक अन्तर्वेदना, ओकर उच्छ्वास, ओकर आकुलताक पुरुष शासित समाज मे कहियो मूल्यांकनक श्रेणीमे नहि राखल गेला। एहि मानवीय व्यथा दिस ध्यान देबाक प्रयोजन नहि बुझल गेल। बेमेल विवाहक अन्तर्वेदना, मातृत्व ग्रहण नहि कऽ पएबाक अन्तर्वेदना, विधवा जीवनक त्रासदीक अन्तर्वेदना, पारिवारिक उत्पीड़नसँ नि:सृत अन्तर्वेदना, पतिक अमानुषिक व्यवहार सँ उत्पन्न अन्तर्वेदना आदि नारी जीवनक विषम स्थितिक चित्रांकन आशा मिश्रक कथानक मे सहजहि भेटि जाइत अछि। दिव्याक सुकान्त संग भेल विवाह प्रसंग (पसीझैत हिमशिला), सोनूक मौसीकेँ मातृत्व नहि पएबाक संदर्भ (उचाट), रजनीक विधवा जीवनक उल्लेख (कामरि) आदि प्रत्येक स्थितिक दृष्टान्त हिनक कथा मे उपलब्ध अछि।

स्त्रिगणक लेल कोन-कोन काजक मनाही अछि, कोन-कोन काजक अनुमति अछि, एकर निर्णायक कहियो क्यो महिला नहि बनलीह।'समाजक ठीकेदार' कहबासँ जनिक बोध होइछ ओ सभ पुरुषे थिकाह। स्त्रिगण सामान्यत: जे कोनहुँ काज करबाक लेल आगाँ बढ़ैत छथि किंवा पाछाँ हटि जाइत छथि, ओ सब एखनहुँ बहुलांशमे पुरुषक पसन्द सँ तय कएल जाइछ। ईहो सत्य जे समाजक नीतिकवाक्यमे स्त्रिगणक लेल जतेक प्रतिषेध अछि, तकर एकहु प्रतिशत प्रतिबन्ध पुरुष पर लागू नहि होइछ। ओना आजुक समय मे, एहि शताब्दी मे, वैश्वीकरणक युग मे समाजक प्रतिबन्ध, प्रतिषेध, मनाहीक मोजर नहिये जकाँ रहि गेल अछि। स्त्रिगणक स्वतंत्रता, आकांक्षा ओ गतिशीलता अबाध भेल जाइछ, उन्मुक्त भेल जाइछ। आशा मिश्र स्त्रिगणक एहि परिवर्तित यथा स्थितिकेँ, स्त्रिगणक नवसंरचनाकेँ स्त्रिगणक अस्मिताक पोख्ता होइत दशाकेँ अपन कथा मे स्थान देने छथि। हिनक मृणाल अपन मोन-मोताबिक जीवनक गढ़नि गढ़ैत अछि।



हमर समाजमे कला साहित्य, शिक्षा, विशिष्टता आदि सँ स्त्रिगणक प्रतिभाक मूल्यांकन नहि होइत अछि। घर-द्वार साफ करब, प्रतिदिन कपड़ा खींचब, कपड़ा केँ तहियाएब, भोजन बनएबाक क्रममे समुचित तेल-मसालाक प्रयोग मे जे पारिवारिक प्रतिभा झलकैत अछि, लोक तकरहि स्वीकार करैत अछि। दैनिक जीवन यापन मे पति अपन स्वाभाविक चर्या लेल पत्नी पर निर्भर भेल रहैछ। आशा मिश्रक कथा मे नारीक तथाकथित प्रतिभा पर प्रकाश देल गेल अछि। जे स्त्रिगण सँदर्भित प्रतिभाक प्रदर्शन नहि करैत छथि, परिवारक काजहिटाकेँ लक्ष्य नहि बुझैत छथि, तनिक खिधांस होइत अछि। अपमान सहय पड़ैत छनि।

'मौसी नवकी माँ बनितहि प्रदीपक छोट की माए जकाँ उस्सठ भ' जएतीह।' (उचाट)

ईहो एक अनिवार्य प्रश्न अछि जे स्त्रीक संघर्ष केँ हमरा लोकनि ओकर निजता, ओकर स्वमेव, ओकर व्यक्तिगत संघर्षक रूप मे चित्रण करैत छी अथवा ओही केर पाछू भारतीय समाजक बहुआयामी द्वंद्व सेहो विचारणीय रहैछ। आशा मिश्रक कथा मे पुरुषक विरोध मात्र विरोध लेल नहि वरन् स्त्री अस्मिताक लेल तार्किक ओ गंभीर संघर्ष हिनक साध्य रहल अछि। जाहिमे नारीक उत्थानक कामना निहित अछि। समाजक विरोधाभास, अन्तरद्वंद्व, अनुपयोगिताकेँ कात करैत, ठेलैत, स्थानच्युत करैत ई स्त्रीक उज्ज्वल भविष्यक कारक सब केँ प्रधानता दैत छथि तेँ हिनक स्त्री पात्र स्वावलम्बन दिस बढ़ैत अछि, स्वतंत्र अस्तित्व लेल अपस्यांत रहैत अछि। ओ जनैत अछि जे एक्के पराभव, एक्के दु:ख, एक्के कष्ट केँ दू व्यक्ति दू तरीका सँ भोगैत अछि। ताहू मे स्त्री आ पुरुषक सोचबाक-विचारबाक ढंग त' एकदम्मे भिन्न होइछ।

'आब लड़की सब बूझि गेलै जे अपने सभ नहि पढ़ब-लिखब त' केहनो काबिल भाइ कियेक ने होथि, रक्षा नहि करता। तेँ अपने पढ़ि-लिखि क' आत्मनिर्भर बनू आ

ताकतवर बनू। नहि ते बकौर लगैत रहत।' (दंशमुक्ति)

'स्त्री कोना दासी आ पुरुष कोना स्वामी बनैत गेल तकर व्याख्या रेणुका दी' करैत छथि त' लगैत अछि ठीके आत्मनिर्भर भेने बिना अपन अधिकारक मांग अर्थहीन छैक।' (उचाट)

आशा मिश्र नारी जीवनक कतेको समस्या कें एक संग चुनौती दैत छथि- लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक उत्पीड़न, दाम्पत्य जीवनक जड़ता, कुल मर्यादा किऐक त' ई सब आचार संहिता स्त्रीकें दासी बनएबाक काज करैत रहल अछि। एहने परिवेश कें स्वीकार कए स्त्री अपन सर्जनात्मक क्षमता कें नहि त' विकसित कऽ सकलीह अछि आ ने अक्षुण्ण राखि सकलीह अछि:

'नारी एखनो दोसर वर्गक नागरिक मानल जाइत छथि। केहन दुर्भाग्य छैक जे नारी सदिखन संदेहक घेरा मे घेरायल रहैत छथि?

विवाह नामक संस्था धीरे-धीरे अर्थहीन भेल जा रहल अछि। लोक विवाहक समय सभ सँ बेशी महत्व समाज कें दैत छैक मुदा समाज कतेक स्वार्थी आ असमाजिक भऽ गेल अछि जे बेटीक पिता लोकनि कें अनुभव भऽ रहल छनि।' (उचाट)

देहक स्वायत्तताक अतिरिक्त स्त्रीक एक सामाजिक भूमिका सेहो होइत अछि। एकर दू स्थिति भऽ सकैछ, पहिल जे स्त्री अपना कें एहि स्तर पर विसर्जित कऽ देअय जे हुनक व्यक्तित्व क विसर्जन भऽ जाय। दोसर जे क्षोभग्रस्त भऽ कए अपन भीतर नुका जायब। हिनक कथा नारीक दुनू भूमिकाक निर्वाह करैत अछि:

'विवाहक अर्थ आइयो पूर्ववते अछि। बेटीकें खयबा पहिरबाक कष्ट नै होइ। किन्तु खयनाइ-पहिरनाइयेटा एक नारीक अभीष्ट छै की? ओकर इच्छा, आकांक्षा, भावना कथूक कोनो महत्त्व नहि?' (पसिझैत हिमशिला)

'अरे रच्छसवा एक्सीडेंट मे अतेक लोक मरलै तौं हूं कियेक न मरि गेलैं? हे भगवान ई जरलाहा लेल अहाँ कें कतौ जगह नहि रहल? हे भगवती ईहो कियैक नै मरि गेल, हम खीर-पूड़ीक परसाद चढ़बितौं।' (प्रसाद)

'पसिझैत हिमशिला' कथाक प्रमुख पात्र दिव्या अपन माए बापक आदेशानुसार अपन व्यक्तित्व कें अर्थहीन मानि पूर्णत: अनिच्छित व्यक्ति सुकान्त सँ विवाह करैत छथि। 'प्रसाद'क पात्र सिलिया अपन पतिक क्रूर आ असहज व्यवहार सँ व्यथित भऽ कए जीवनक उल्लास कें समेटि लैत अछि।

आशा मिश्रक स्त्री विमर्श सामाजिक समरसताकें प्रश्रय दैत अछि। ई सोशल इंजीनियरिंगक पक्षधर थिकीह। हिनक कथा अगवे स्त्री जातिकें चिन्हैत अछि। ओ जाति, धर्म, वर्ण, आदि आधार पर स्त्री-स्त्रीकें फुटबैत नहि अछि, फराक नहि करैत अछि, विभाजन नहि करैत अछि तैं मलाहिन कुजड़िन, चूड़ीवाली, खबासिन (उचाट) आदिक चर्च सेहो ससम्मान करैत छथि।

स्त्रीक मनो-मस्तिष्क सँ जुड़ल तथ्य सेहो हिनक स्त्री विमर्शक परिधि मे आयल अछि। परिस्थितिवश स्त्रिगण अपेक्षाकृत मानसिक तनाव, दबाव ओ अस्थिरताक बेसिए अनुभव करैत छथि। हिनका लोकनिक तटस्थहीनता, अनमनापन ओ नैराश्यपन कें आशा मिश्र अपन कथा भूमिक जजाति बनौने छथि। हिनक इएह जजातिक विशेषता, विविधता ओ विलक्षणता स्त्री विमर्श कें चर्चित करैत अछि:

'मौसी कहने रहथिन - सब किछु रहितहुँ लगैत अछि जेना किछु नहि अछि। एतेक टा संसार मे एसगर रहि गेल होइ। किछु करबाक मोने नहि होइत अछि।' (उचाट)

हिनक स्त्री पात्रक विलग परिचितिक कारण अछि जेना कि साहित्यकार डॉ. विभूति आनन्द कहैत छथि 'आशाजी अपन भाशा छनि, अपन लय छनि, भाव-भूमि सेहो अपन छनि। ई कतहु सँ ने तऽ आयातित अछि, ने प्रभावित ओ प्रायोजित। कतहु-कतहु तँ ई मैथिली कथा साहित्य मध्य एहि कारणेँ एक नवधारा फोड़ैत सन सेहो लगैत छथि। हमरा जनैत इएह हिनक निजता अछि।'

हिनक स्त्री पात्र कैक पारंपरिक आचार पद्धति, पुश्तैनी रीति-रिवाज, 'खानदानी' गरिमाक छद्मस्वरूपक अनुपालन मे अवमानना, अस्वीकार ओ असहमति प्रकट करैत सेहो देखि पड़ैत अछि। हिनक सकल पात्र एकहत्थी घोघ तनने सोझां नहि अबैत छथि। विधवाक आधुनिक जीवन शैलीक दिग्दर्शन करबैत थिकीह जतय पूर्वाग्रह नहि अछि, पूर्व प्रचलन नहि अछि, पूर्व दैनिकता नहि अछि। ई अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता कें प्रवाहित करैत छथि तैं पत्नी पारिवारिक समस्या मे पति कें परामर्शदात्रीक रूपमे सेहो उभरलीह अछि। एतए धरि जे परम्परागत मान्य प्रथाकें भंग करैत बूढ़ि-बुढ़ानुस स्त्रिगणो समसामयिक विषय पर अपन अभिमत व्यक्त करैत देखि पड़ैत छथि। 'न्यूक्लीयस' जीवन पद्धतिमे स्त्रिगणक प्रस्थिति, अधिकार ओ प्रभाव सर्वथा नव ढंग सँ सृजित भेल अछि। स्त्रीक एहि स्वरूप कें, सशक्तिकरण कें, स्वीकार्यताकें आशा मिश्र मानकपूर्ण ढंग सँ चित्रित कएने छथि। स्त्रीक विकसित, प्रगतिशील आ नवीन स्वरूपक अनुभूति करबैत काल आशा मिश्र ग्राम्य जीवनमे एहि परिवर्तन सँ चलि आएल अनादर, असंलिप्तता ओ अपनत्वहीनता कें सोझां आनब नहि बिसरैत छथि:

'हमरा गाम पहुँचला किछु घंटा बीति चुकल छल। लेकिन बस पांचे-छ टा महिला हमरा सँ भेंट करए आयल छलीह। पहिने तऽ ओतेक काल मे सब जाति आ धर्मक महिला तथा बच्चा सभ सँ आंगन भरि जाइत छल। बेटी तऽ सभक होइत छै तैं आशीर्वाद आ उपालंभसँ भरि दैत छलीह-

गामकें बिसरि गेलौं बाउ....?

गरीब काकीकें के मोन पाड़ै छै....?

कतेक प्रेम आ अपनत्व रहैत छल हुनक आँखि मे।'

(टुटैत लैंडस्केप)

पछिला शताब्दीक सातम दशकक उपरान्त मिथिलांचलक सामाजिक संरचना कें तिर्री-तिर्री होयबाक जे प्रक्रिया आरम्भ भेल छल, आइ परिणतिक शिखर पर पहुँचल लगैत अछि। कोसी, महानन्दा आ बूढ़ी गंडक नदीक बेसिनमे भऽ रहल एहि सामाजिक विचलन सँ जे सुखद, उत्साहवर्द्धक ओ सापेक्ष परिणाम आयल अछि से थिक अधिकतर स्त्रिगण मे

आत्मविश्वासक प्रतिष्ठापन। स्त्रिगणक अपन क्षमता पर आत्मविश्वास, जीवनशैली पर आत्मविश्वास, अपन भूमिका पर आत्मविश्वास आजुक स्त्री विमर्शक सकारात्मक तथ्य थिक। आशा मिश्र एहि आत्मविश्वास कैँ 'स्वीट रिव्ल्यूशन' कैँ, आन्तरिक दृढ़ता कैँ अपन कथानक मे प्रबलताक संग स्थान देने छथि। 'अपन-अपन भगवान' शीर्षक कथाक पात्र रमा आत्मविश्वासक प्रतिनिधि थिकीह :

'आत्मविश्वास! हमर जनैत आत्मविश्वासेक रूप ईश्वरक वास्तविक रूप छनि तैँ आब कोनो बाधा हमरा विचलित नहि क' पबैत अछि।'

आशा मिश्रक स्त्रिगणक आत्मविश्वासी स्वरूप सकल स्त्रीजातिक प्रतीक अछि। एकरा क्षेत्रीय, स्थानीय आ प्रान्तीय सीमाक स्त्रिगणक स्वरूप नहि कहल जा सकैत अछि। ई आशा मिश्रक स्त्री विमर्शक वैश्विक विवेचन छन्हि। उपभोक्तावादक विश्लेषण छन्हि।

हिनक उपन्यास 'उचाट' स्त्री विमर्श कैँ विराट, फरिछाएल, पारदर्शी चिन्तनक स्तर प्रदान कएने अछि। उपन्यासकारक दार्शनिक चिन्तन सँ कथा अनछुअल आ बंचित नहि थिक। कथा मे प्रयोजनानुसारैँ सुख, त्याग, दु:ख, प्रसन्नता, आनन्द आदिक पारिभाषिक व्याख्या कएल गेल अछि। मानव मन केर भूत, वर्त्तमान ओ भविष्यक भूमिका कैँ निहितार्थ करैत काल एवं द्वंद्वात्मक परिणति कैँ आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक ओ आर्थिक विकासक संग सन्नद्ध कएने छथि। हिनक स्त्री विमर्शक मानवीय पक्ष थिक जे जीवन मे आचार, विचार, व्यवहार, चिन्तन आदि कैँ सारस्वत प्राथमिकता देल जए चाही। सामाजिक पक्ष थिक जे व्यक्ति केन्द्रित होइतहुँ ई पारिवारिक अछि, सामाजिक अछि। समसामयिक पक्ष थिक जे ई प्रगतिकामी अछि।

आशा मिश्र पितृसत्तात्मक अवधारणाक आधुनिक व्याख्या करैत छथि। आजुक समय मे सन्तानक प्रति परिवारक जे सदस्य कर्त्तव्य पालन करैत छथि वस्तुत: तनिके 'पिता' क मान्यता भेँटैत छन्हि। 'उचाट' क प्राइम पात्र

ÒãU×ÚUæ›ææ×Âãé¡U¿Üæç·¤ÀéU ƒæÚÅUæÕèçÌ ¿é·¤ÜÀUÜÐÜðç·¤ÙÕâ
ÂæÆ¿ð-ÀUÅUæ×çãUÜæãU×ÚUæâ¡ÖðÅU ·¤ÚU° ¥æØÜÀUÜèãUÐÂçãUÜð
Ìù¥æðÌð·¤ ·¤æÜ×ð âÕ ÁæçÌ ¥æ Ï×ü·¤ ×çãUÜæ ÌÍæ Õ‘¿æ
âÖ â¡ ¥æÐ›ÙÖçÚUÁæ§Ì ÀUÜÐÕðÅUè Ìù âÖ·¤ ãUæðâ§Ì ÀñU Ìñ´
¥æææèßæÎ ¥æ@ÂæÜ¢Öâ¡ ÖçÚU ÎñÌ ÀUÜèãUÐ
›ææ×·¤ð¡¤çÕâçÚU›ðÜÕ´ ÕæßU....?
›ÚUæÕ ·¤æ×è-ð¡¤·¤ð×æÙÂæç¶UÀñU....?
·¤Ìð·¤Âýð×¥æ¥ÂÙ ßÚUãñUÌ ÀUÜ ãéUÙ·¤¥æ¡ç¹ ×ðÐÓ
(ÅæÅÌÜ¢çÞçÅ)

सोनूक पिता शुरूये सँ 'सेकेण्ड ग्रेड' स्टेट्स मे परिणत भेल चित्रित छथि। एतय धरि जे सोनूक जीवनक स्वरूप कैँ फूट भेल ओकर तीनू पित्तीक आचरण कोनहुँ महत्त्व नहि रखैत अछि। सोनूक मात्र पितामही (बाबी) अन्त:सलिला बनि उभरैत छथि। ओकर जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव, निर्देश आ छाप पितामहियेक देखाओल गेल अछि। पितृसत्तात्मक समाजक अर्वाचीन धारणा कैँ संशोधन, पुनर्विचार ओ पुनरीक्षित करबाक संकेत आशा मिश्र दैत छथि।

ई कोनो पौराणिक कथा नहि बाँचैत छथि। कोनो दन्तकथा नहि सुनबैत छथि। कोनो लोक कथाक पारायण नहि करैत छथि। ई त' मिथिलासहित उत्तर भारतीय 'काऊ बेल्ट'क आजुक कालावधियेटाए नहि, 'पोस्ट मण्डल ऐरा'क परिस्थितिसँ जनमल व्यक्ति, समाज आ सरोकारक कथा कहैत छथि तैँ हिनक स्त्रीविमर्श नॉन-सेलेब्रेटी अछि। लो-प्रोफाईल अछि। कॉमन अछि।

हिनक स्त्री विमर्श सुधारवादी, उन्मूलनवादी ओ परिवर्तनवादी दृष्टिकोणक परिचायक छन्हि। अगवे दोषारोपण, आलोचना, आ छिद्रान्वेष कैँ ओ स्त्री जीवनक निस्तार नहि मानैत छथि। ओ समाज कैँ समूल रूपैँ आगाँ राखि जन-जनकैँ साकांक्ष, सचेत ओ नि:शंक होएबाक सन्देश देमय चाहैत छथि:

'तखने माँ, जे केबाड़क करोट सँ सब गप सूनि रहल छथि, घोघकैँ कनी आगाँ खींचैत बजली-छोटक बात पर नै जाइ जाथु। बच्चा अछि एखन। बौआक गरदनि मे उतरी छनि। अहीं लोकनि उद्धार करबनि। जेना जे हेतै, अहीं लोकनि करै जेबै।' (बजैत आँखि)

आई स्त्री सेहो अर्थतंत्रक एक सबल कारक बनि उभरि रहलीह अछि। समाज, परिवार ओ व्यक्ति धरि एहि स्वरूपक, एहि आचरणक, एहि कार्यक स्वीकार्यता भेटल अछि एकर पाछाँ आक्रोश, ईर्ष्या, प्रतिद्वंद्विता आदि कतहु देखबा मे नहि अबैत अछि। एहि बदलैत परिवेशक अनुभूति लेखिका करबैत छथि:

'तोहर त' घरवाली आ बेटियो किछु ने किछु कमाइये लैत छौ।' (थाहैत स्वप्न)

धर्मक प्रभाव सदति अटूट रहल अछि। ई पुरुषक अपेक्षा स्त्री जीवन कैँ विशेषत: प्रभावित कएने रहल अछि। पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड, धार्मिक आस्था आदि अपेक्षाकृत स्त्रिगण मे अधिक पाओल जाइछ। समयानुसार धर्म कैक विकृतिक शिकार होइत आ ग्रसित भेलीह स्त्रिगण। अन्धविश्वास, अन्धभक्ति, अन्धानुकरण आदि सँ स्त्रिगण अवसाद, प्रतारण एवं उपेक्षाक चांगुर मे पड़ि जाइत गेलीह। आशा मिश्र ओहि सब कुरीति, कुप्रथा, कुसंस्कार आदिक चर्च करैत छथि जे स्त्री जीवन कैँ दलमलित कएने रहल अछि:

'धर्मक नाम पर महिलाक शोषण

आदिकाल सँ चलल आबि रहल अछि। सती प्रथा, बाल विवाह। विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध, विधवा भेला पर केश कता कऽ बेलमुण्ड बनवा देब आदि एहन अत्याचार अछि जे धर्मक नाम पर होइत रहल अछि।' (उचाट)

स्त्री विमर्शक अधीन गाम ओ शहर मे वास केएनिहार स्त्रीक जीवन शैली, प्रभाव ओ विचारक आधार पर विभाजक रेखा अंकित कएल गेल अछि। जौं गमैया स्त्रिगण एहुखन ढेंग सँ बान्हल छथि तँ नगरीय स्त्री मुक्ताकाश मे विचरण करयवाली:

'ओकरा आश्चर्य लागि रहल छल जे मौसाजी पुरुष, ताहू मे घरक मुखिया भऽ क' अपन अँइठ बासन अपनहिं भानस घरमे राखि आयल छलाह। गाममे घरक स्त्रिगण यदि दुक्खित रहथि त' अइँठ वासन ओतए पड़ल-पड़ल सुखा जाएत, माछी भिनभिनाइत रहत मुदा की मजाल जे पुरुष सब हाथ धोयबा काल अपन अइँठ वासन कल तरमे राखि देताह।' (उचाट)

आशा मिश्र प्रतिपल बदलि रहल समाज, परिवार आ व्यक्तिक क्रियाकलाप कँे बड़ लगीचसँ देखैत छथि। ओ पहिलुक आ आजुक स्थिति, अवस्था आ स्वरूपक फर्क कँे बतबैत छथि। इएह अन्तर वास्तविक अछि:

'हमरा लोकनिक जमाना मे त' चारि-पाँच टा संतान भेलाक बादो घरवलाक मुँह ठीक सँ नहि देखि पबैत छल, आब छौड़ी सब होमयवला वर सँ अपने गप करत, तखने विवाह करत।' (लालसा)

हिन्दीक प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी अपन आत्मकथामे लिखने छथि 'इसमें कोई संदेह नहीं कि मैं आज बिल्कुल अकेली हो गई हूँ। पर राजेन्द्र के साथ रहते हुए भी तो मैं बिल्कुल अकेली ही थी। साथ रहकर भी अलगाव की उपेक्षा और संवादहीनता की यातनाओं से इस तरह घिरी रहती थी कि कभी अपने साथ रहने का अवसर ही नहीं मिलता था।' (एक कहानी यह भी : मन्नू भण्डारी) मन्नू भण्डारीक कथा दाम्पत्य जीवन अलगाव, मतान्तर, गुमसुम आदि स्थितिक द्योतक अछि मुदा आशा मिश्रक स्त्री पात्र प्राय: पति-पत्नीक बाजाभुक्खी बन्द, एक-दोसरक टोक-चाल नहि करब, दू बिछान पर राति बीताएब आदि स्थिति देखबा मे सामान्यत: नहि अबैत अछि।

आशा मिश्रक कथामे दाम्पत्य जीवनक तीन प्रभेद देखबा मे अबैत अछि। पति-पत्नीक दुनू मिलि-जुलि प्रसन्नतापूर्वक जीवन कितबैत छथि। दोसर, पति प्रसन्न रहैत छथि तऽ पत्नी नाखुश। तेसर, पत्नी खुश देखि पड़ैत छथि तँ पति मुँह विथुत कएने। एहि सन्दर्भ मे हिनक तीन कथा 'परदा', 'निर्णय' आ 'शेष जिनगी'क विवेचन कएल जा सकैछ।

हिनक प्राय: अधिकांश कथानक मध्यवर्गीय समाजक समस्या, चिंतन ओ क्रियाकलापक चतुर्दिक घुमैत रहैत अछि। स्त्री पात्रो मध्यमार्गीय बाटहुँ पर चलैत अछि। ओ विद्रोह नहि करैत अछि। विप्लवी नहि बनैत अछि। आन्दोलित भऽ कए अपन ऊर्जा, क्षमता ओ अर्हताक आहुति नहि दैत अछि। ओ जनैत अछि जे परिवर्तन क्रमश:, शनै: शनै: आ स्तरीय होएत। हिनक महिला पात्रक सतत लगन, श्रम, जिजीविषा, निरन्तरता, विरोध अन्तत: फलीभूत होइत अछि। तँ कर्मक आधार पर बांटल गेल घर-बाहरक जिम्मेदारी क विभाजन सँ स्त्री-पुरुषक बीच असमानता, शोषण, प्रताड़नाक जे दीर्घकालीन प्रक्रिया चलि रहल छल ताहि सँ निजात भेटैत बूझि पड़ैछ। यहां से लेख का दूसरा हिस्सा जोड़ना होगा।

आशा मिश्रक नारी विमर्शक अनुशीलन करैत काल कतेको ओहि विषाह स्थितिक भान होइछजे आजुक विश्वव्यापी मल्टीनेशनल कमर्शियल युगहुँमे 'आध आबादी'कँे भोगैत रहबा लेल विवश कयने अछि। हिनक कथावस्तु 'मेनस्ट्रीम'क सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह करेत बूझि पड़ैछ। सामाजिक विकास क मुख्यधारासँ जुड़ल स्त्रिगण जखन पंचायतीय राज-लोकल बोडिज मे पचास प्रतिशत आरक्षण पाबियो कए अपन अस्तित्वक समग्र अर्थ नहि जानि पऔलीह अछि तखन कात-करोटमे कुहरि रहल सर्वाधिक जनसंख्याक दुर्गति पर चिन्तन करब कतेक प्रासंगिक होयत। हिनक अधिकतर नारी पात्र मेनस्ट्रीममे अयबाक लेल खाढ़ीसँ बनल पुरुषक सोंगरक आश्रय धरैत छथि। अपन नारी पात्रकँे सुशिक्षित, साहसी ओ कर्मठ बनैबितहुँ ई ओहि सनातन सत्यक अवमानना नहि कए सकलीह अछि जे समाज में स्त्रिगण कँे कोनहुँ पुरुष क आश्रयक अभावमे जीवन बिताएब दुष्कर भऽ जाइछ। एहि सुरक्षा कवचक प्रयोजनओ अगवे संतानोत्तपत्तिक खातिरेताए लेल नहि मानैत छथि अपितु वासनात्मक मनोवेग, आधुनिक जीवनयापनक भौतिक सुविधा प्राप्ति, देश समाज ओ व्यवसायक विकृतिसँ सुरक्षा, सामाजिक मान्यता, दाम्पत्य औ गृहस्थ जीवनक परम्परागत... स्वरूपक इच्छा-अनिच्छा सँ सम्पुष्टि लेल अपरिहार्य बुझैत थिकीह। स्त्रिगणक एहि सुरक्षाकवचक महात्म्य ओ सर्वोच्चता दिस संकेत करैत ओ कैक निहितार्थक व्याख्या कयने छथि। ललमटिया सिन्नूरक मोटगर रेखा माथक बीचाबीच पाड़ितहुँ स्त्रिगणक जीवन सर्वात्मना संतोषमय नहि बीतैत रहल अछि। एहि ललकी मोटगर चिर्रीसँ वंचित स्त्रिगण त' 'माया त्यागी' बनबाक नियति भोगैत अछि। हिनक मेनस्ट्रीमक कोटिमे नवराजनीतिवाद आदिक गर्भ सँ उपजल स्त्रिगण, भनहि जे संख्यात्मक दृष्टिएँ कनगुरिया आंगुरक पोरकँे छूबियो नहि सकलीह अछि तनिकहुँ समकालीन अवसाद, प्रतारण एवं उपेक्षाक प्रस्तुति करैत 'तन्दूरीकाण्ड'क स्मरण करबा दैत छथि।

हिनक पुरुषक चारित्रिक वैविध्य सेहो विवेच्य अछि। ई कर्मकाण्ड कँे, कुटुम्बीय सम्बन्धकँे, पारिवारिक संरचना मे पुरुषक पदसोपानकँे, भोगवादक नांगट सत्यकँे, शताब्दीसँ परिपोषित झांपल द्वैध आचरणकँे मर्यादा आ सामाजिक अस्मिताक नाटकीयताकँे उत्कृष्ट शालीनता आ अनाक्रमकताक संग सोझां रखने छथि। हिनक इएह उपस्थापन कला, तकनीक एवं शैली एतूका स्त्रिगणक अन्यतम रहस्यकें ओकर भीतरक निश्छलता, पवित्रता ओ समर्पणक

शोधल चित्रसँ साक्षात्कार करबै छ। ओ व्यक्ति, परिवार आ समाजक पारस्परिक विकास लेल लिंगात्मक संघर्ष कैं, स्त्री पुरुषक द्वन्द्व युद्ध कैं, एक-दोसरक प्राधिकार स्थापना लेल घोड़ दौर करबाक प्रवृत्तिकेँ केंद्रिय विषय नहि बनौने छथि। आशा मिश्र स्त्रिगणक संघर्षक स्वरूप दिस संघर्षक योजना प्रणाली दिस, संघर्षक तकनीक संघर्षक तरुआरकेँ पाथर पर घसैतकालक मन:स्थिति दिस ध्यान आकर्षित करैत छथि। हिनक संघर्ष लक्ष्य सुनिश्चित अछि। ई लक्ष्य विद्यालयसँ कारपोरेटजगतक ऊँचगर राउंड कुर्सीक यात्रा कथा थिक। लेखिका समाजक बदलैत ढाँचा दिस संकैत करैत छथि। परिवार गामक सीमान जकाँ बंटि रहल अछि। लघु इकाई अवधारणा लगभग जड़ि रोपि चुकल अछि मुदा सत्ते एहि सँ चेतना जागि रहल अछि? चेतना जगबाक प्रक्रियाकेँ, गतिकेँ, क्रियाकेँ एखनहुँ अभीष्टपूर्तिकारक नहि स्वीकार करैत बूझि पड़ैत छथि। हिनक स्त्री-संघर्ष इतिहासक ओहि चिरन्तन सत्य दिस इंगित करैछ जखन सभ युगमे गणकेँ अपन जीवन ओ अस्तित्वक लेल स्त्री तरुयारि ध'कए किंवा 'रूपकुँवर' बनि संघर्ष करय पड़ल अछि। स्त्रिगणकेँ विपरीत स्थितिमे सामना करबाक उपाय बताओल जयबाक नाम पर केश मुण्डन-श्वेतवस्त्रमे कात-करोट ठाढ़ रहबाक अंधकालीन 'नीतिज्ञान' हिनक आक्षेपसँ अनछुअल नहिं अछि।

स्त्रिगणकेँ कायद पलायनवादी एवं कुण्ठाग्रस्त अन्तिम सांस धरि बनल रहबाक घोंटाओल जाइत गाड़ाकें विवेच्च विषय बनौने छथि। हिनक स्त्री पात्र संघर्ष क्रम मे के केन्द्रित रहैत छथि। संघर्षक उपजीव्यकेँ प्राथमिकता दैत छथि। एतय ई कार्ल मार्क्स हुनक सहयोगी फ्रेडरिक एंजल्सक विचारधारा क लगीच बूझि पड़ैत छथि। आशा मिश्र आर्थिक आत्मनिर्भरताकेँ आजुक स्थितिमे पूंजी बुझैत छथि, परिवार-दात्म्पत्य जीवनक शान्तिपूर्ण संतोषजनक संचालन लेल कारक मानैत छथि। दरअसल स्त्रीरेँ सेहो सामाजिक, जैविक, नैतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप सँ पुरुषक ओतबहि जरूरति होइछ जतवा पुरुषकेँ स्त्रीक अत: आवश्यक अछि जे दुनूमे खुजल, विनु पूर्वाग्रहकेँ, समान रूप सँसंवाद कायम कयल जाय। ई तखनहि भए सकैछ जखन समाज लिंगत भेद कैं दूर करय आ स्त्रिगणक समुचित भागीदारीक भावनासँ हर क्षेत्र मे काज लेल जाय। आशा मिश्रक स्त्री संघर्ष सच कहल जाय तँ स्त्रिगण सशक्तिकरणक बहुआयामी पत्रक विश्लेषण पूर्वाभ्यास थिक।

अपन अधिकतर कथा ओ उपन्यासमे स्त्री जीवनक गूढ़त्वकेँ विवेचना करितहुँ 'बाजारवाद'क आक्षेप सँ यथासाध्य फराकहिँ रहलीह अछि। हिनक नारी पात्र' सेक्स सिंवल'क परिधिमे नहि अबैध बूझि पड़लीह अछि। समाजक तत्कालीन रूपरेखा खींचबाकाल बजारकेँ लुभयबाक लेल, पाठकक उन्मक्त संख्यावृद्धि लेल, लूपलाइन इंट्री लेल, नारीक बुनियादी समृद्धिकेँ उपस्थापन लेल अपन सृजनधर्मिता कैं बन्हकी राखब उचित नहि बुझलनि अछि। स्त्रीकेँ उपभोगवस्तुक स्थापित मानसिकतासँ तालमेल रखितहुँ, पुरुष समाज द्वारा स्त्रिगणक कतेको विसंगतिकेँ गैर-जरूरी बुझबाक प्रवृत्तिकेँ स्वीकार करितहुँ, नारीक प्रति दोषाह मापदण्ड निर्धारणक यर्थार्थकेँ अंगीकार करितहुँ ई अगवे पुरुषकेँ ललका घेराबामे ठाढ़ नहि कयलीह अछि, नारी देहक मार्टमकाए सोझां नहि परोसलनि अछि, नारीक आचरण श्वेत-श्याम पक्षकेँ फूहड़-उत्तेजक गढ़नि नहि देलीह अछि। स्त्री-पुरुषक समन्वयवादी हिनक चिन्तन एक शालीनताकेँ जन्म दैत अछि ई ओहि परम सदयकेँ अनुगमन थिक जे स्त्री ओ पुरुष दुहूक संयोग, सहभागिता आ समिश्रण श्रृष्टिक निरन्तरताक स्त्रोत थिक। बाजारवाद ब्रांडेड लेबलसँ हिनक पात्रक विमुक्तिक ईहो कारण थिक जे परम्परा आ आधुनिकताक सांगोपांग विशृंखल नहि बताओल गेल अछि। स्त्रीक देहक चर्च करितहुँ ओकर अंग प्रत्येककेँ 'इफेल टावर' नहि बनय देलीह। हिनक नारी शैम्पेनक रंगीन गिलास धयने मदोदत्त नहि छथि, हिनक नारी कैं तेसर पहर रातिमे अचेतावस्थामे ऊंघि कए घर नहि पहुँचाओल जाइछ, हिनक नारी 'पैन अमेरिका' मे ओंगठि' 'प्ले ब्वाय' पर आँखि नहि गड़ौने रहैछ किऐक त' लेखिका पूर्णरूपेण जनैत छथि, हुनक अनुभूति छन्हि, हुनक आकलन छन्हि जे एहि देशक स्त्रीवर्गक संख्या मध्य 'सेलेब्रेटी वीमेन'केँ प्रतिशतमे गणन करब संभव नहि अछि। दू भाग मे विभाजित एहि देशक चेहरा, दू भाग मे विभाजित स्त्रिगण, दू भागमे अर्थ, समाज ओ प्रस्थिति मे बँटिल नारीक बीच ई तथाकथित आधुनिका, प्रगतिकामी आ उन्मुक्त स्त्रिगण बहुसंख्यक पाठकक संवेदना, मनोभाव आ अन्तर्द्वंद्वक प्रतिनिधित्व किन्नहुँ नहि कए सकैत छथि। उदारीकरण तीव्र प्रवाह मे भनहिं बजारवादक पर्याय बन जाथु, मार्केटिंगक सन्सेक्स दोबर क' देथु, प्रान्त, देश क सीमा टपि परदेश मे प्रतिस्थापित आशा मिश्र स्त्रिगण होयबाक अर्थ, अभिप्राय आ तात्पर्यक ताकहेर करैत छथि। ई प्रश्न युग-युग सँ अपन प्रत्युत्तर, अपन जवाब, अपन सार्थकताक संधान करैत रहल अछि मुदा विडम्बना थिक जे आजहुँ अनुत्तरित अछि। एहि रहस्यकेँ, एहि अपारदर्शिता कैं, एहि उत्सुकताकेँ ओ भनहिं सम्यक उत्तर नहि दैत बूझि पड़लीह अछि मुदा स्त्रिगणक साधिकारकेँ, ओकर अनिवार्यताकेँ, ओकर संदर्भिताकेँ अंश धरि फरिछौट करैत बूझि पड़ैत छथि। ईहो सत्य जे आइ धरि स्त्री पुरुषमे उन्नैस-बीसक निर्णय पर एकमतता नहि अछि। पुरुष पक्षक अपन अकाट्य तर्कक दावा कयल जाइछ त' स्त्रीपक्ष जननीक महाशस्त्र लए तैयार रहलीह अछि। कैक तथ्य दिग्भ्रमित करैत आयल अछि। सच त' थिक जे आई स्त्रिगण राजनीतिमे छथि, बजारमे छथि, बुद्धिजीवी सेहो छथि, प्रशासनमे छथि तैयो ओ 'सेकेण्ड सेक्स', 'वीकर सेक्शन', 'अनप्रिलिवेज्ड' आदि शब्दावलीमे लेपटायलि छथि। आशा मिश्र स्त्री-पुरुषक प्राथमिकता लैल अदौकालीन मतभिन्नताक झोंझड़िसँ बहरार जीवनोदेश्य पर केन्द्रित होइत छथि। ओ नारीकेँ मातृत्वक अनिवार्यता प्रदान करितहुँ ओकर आकर स्वाभिमान, व्यक्तित्व औदार्यक स्वीकार्यताक प्रस्ताव स्वयं अनैत देखि पड़ैत छथि। हिनक स्त्रीपात्र पर्याय मे

जीबैत अछि, विकल्पमे जीबैत अछि, समानान्तर माध्यम ताकि अनैत अछि। पात्रक इएह क्रियाशीलता हिनक स्त्री-विमर्शकेँ सृजनकारी, उत्पादक एवं क्रियात्मक बनबैत अछि। विकासशील विश्वक समस्त समाज एहि पद्धतिसँ कांख तऽ र दबन चलि रहइल अछि। आशा मिश्र विश्वस्तरीय मान्य धारणाकसँ अपन स्त्री पात्रकँ बटोही बनाबए चाहैत छथि। मिथिलाकोहिक पछुआयल समाजकेँ 'त' एकर बेसिए अपेक्षा थिक आ अपन साहित्यकेँ क्षेत्रीय आंचलिक परिशिष्ट जोड़बाक कर्त्तव्य ज्ञान स्त्री विमर्शक माध्यमसँ एतूका स्त्रिगण कँ उदारवादी व्यवस्था संग सन्नद्ध करबाक चेष्टा थिक।

आशा मिश्रक विधवा स्त्रीपात्रमे महान कथाशिल्पी राजकमल चौधरीक सदुगुण पबैत छियन्हि जे शिक्षाक प्रवेश सँ स्त्री-विधवा स्त्रीक जीवनमे उत्साह, स्वाभिमान ओ आत्मबलक अदम्य रूप देखैत छिऐक। राजकमलक विधवा पात्रक प्रति यशस्वी लेखक डा. देवशंकर नवीनक अवधारणा सेहो हिनक चरित्र चित्रण सँ अधिकाधिक साम्य रखैत अछि।

''ई सभ विधवा यौवनक उत्तप्त दुपहरियामे जीवनक आयामकेँ जाहि मजबूरीसँ नापि रहलीह अछि, तकर विश्लेषण सूक्ष्मताक संग कयल गेल अछि। ओकर विश्लेषण सूक्ष्मताक सँ भेल अछि। ककरहु देह आ मोनक मांग मजबूत करेत अछि। ककरहु जीवन रक्षाक साधन किंवा इच्छा-अभिलाषाक पूर्ति हेतु मोनकेँ पूंजी बनबय पड़ैछ/जीवनक अपरिहार्य शर्त्तक पूर्ति खातिर अन्हार सड़क पर क्यो कामुक पुरुषक तलाश मे क्यो ठाढ़ रहैत थिकीह, त' ककरो विधुर ससुरक सभ उचित-अनुचित कामनाक पूर्ति करय पड़ैछ। यौवनोन्मादक उत्तप्त ज्वाला, उम्रक वसन्त, आ मोनक झूलामे झुलसैत, बिहुँसैत आ झुलैत ई विधवा सभ, मिथिलाक नारी परिदृश्यक एहन आंकड़ा कथाक माध्यम सँ उपस्थित करैछ। नारीक प्रति पुरुषक द्वैध नजरि दृष्टि आ मनोवृत्तिकेँ आशा मिश्र कतहु-कतहु बेकछयबाक यत्न कयने छथि। पुरुष वस्तुत: नारीक एकहि चामकेँ दू चश्मासँ परखबामे माहिर रहलाह अछि। 'अपन स्त्री' आ' दोसरक स्त्री' ई धारणा नहि जानि कहियासँ चीनक देवाल बनल अछि। अपन स्त्रीकेँ दोसरक कुदृष्टि तिलमिला दैछ मुदा दोसरक स्त्री पर कामातुर दृष्टि सँ आनंद लेबाक वस्तुस्थिति कँ लेखिकाक संकेत सहजहिं भेटैछ। तकर परिणाम थिक जे स्त्री अपनत्व आ उपभोक्तावादी विचारक तुला पर लटकल रहल अछि। ई स्थिति स्त्रीक जीवन मे विभ्रम, अनास्था आ अशान्ति उत्पन्न कऽ दैत अछि। कखनहुँ ओ स्वयं नहि बूझि पबैत छथिजे हुनक साध्य की थिकन्हि, हुनक आप्त के थिकाह। समाजमे ई स्थिति पहनहुँ छल, आइयो थिक आएखनुक परिवेशकेँ देखैत काल्हुक सूर्योदयकेँ सेहो देखत। आशा मिश्रक फाइवर ताग सँ बुनल निस्सन जालमे समाजक एहि अनवरत यथार्थक उपस्थापन भेल अछि। ई उपस्थापन समाजक दर्पण थिक।

ई स्त्रीक 'शुचिता'क पारिभाषिक व्याख्या करैत बूझि पड़ैत छथि। अदौ सँ शुचिताक अर्थ स्त्रीक शरीरकेँ परपुरुषक स्पर्श सँ अलग रहब रहल अछि। विडम्बना अछि जे आजहुँ धरि सकल स्त्रिगण शुचिताक एहि संकीर्ण, अप्रतिकर एवं असैद्धांतिक धारणासँ उबरि नहि सकलीह अछि। आशा मिश्र नारी देहक शुचिताक संग आरो कैक तथ्यकेँ समाहित करैत छथि। स्त्रीक जैवीकीय प्रभागक विवेचन करवेताए ओ शुचिताक श्रेणी मे नहि रखैत छथि। हिनक नारी पात्र मोनक शुचिता चाहैत अछि, वातावरणक शुचिता चाहैत अछि, सम्बन्धक शुचिता चाहैत अछि, विचारक शुचिता चाहैत अछि। एहि शुचिताक पालन करबा लेल हिनक पात्र नैतिकताक भीत ठाढ़ करैत अछि, मनोवेग पर चाबुक उठबैत अछि, यथासाध्य परम्परित व्यवस्थाक हितकर पक्षक आश्रय लैत अछि, नीक-बेजायक स्पष्ट फर्क बुझैत अछि। कतहु-कतहु लेखिका शुचिताक 'यूटोपिया' अगवे स्त्रिगणहिंपर बोझबाक औचित्यक सेहो खाम्ह गाड़ने छथि। समाज पर, परिवार, सभ ठाम जखन स्त्री-पुरुष दुहूक अनिवार्य उपस्थिति रहैछ, क्रियाशीलता रहैछ, दायित्वक विनिर्धारण रहैत तखन अगवे स्त्रिगण शुचिताक होलिका किऐक बनैत रहलीह अछि? आशा मिश्रकेँ भोगल यथार्थक रचनाधर्मी कहबामे मतभिन्नता नहि होयबाक चाही। ई जे किछु देखलनि, जे किछु सुनलनि, जे किछु अनुभव कयलानि तकरहि साहित्यक आवरण प्रदान कयने छथि। ई आवरण पारदर्शी थिक। विमिश्रित थिक। अविकल थिक। तेँ हिनक पात्रक गात्र-गोत्रक कुंठा, हीनग्रंथि, आवेशपूर्ण प्रतिक्रिया आ सांसारिक असफलता तथा एहि सभ सँ स्वाभाविक रूप मे उपजल दुखातिरेकक एकण अभिशप्त जीवन आओर वैविध्यपूर्ण स्त्रीक हाथ मे थम्हाओल लाल गुलाबक मोहक सुगन्धक अनुभूति, प्रतिक्षारत पति लेल सांझमे हुलसि कए केबाड़ खोलैत पत्नीक उल्लास एवं अरुणाक आगौ झुलैत जर्जर परदहुँ सँ सुवासक अहसास हिनका कादो-माटि सँ लथपथाएल रहबाक विशेषता प्रकट करैत अछि। हिनक अनुभूति, चिन्तन अ दृष्टिकोण कँ रचनाधर्म संग तादात्म्य पबैत छियनि। अन्तरविरोधक सीमा रेखा प्राय: नहिये पाड़ल जा सकैछ। जतय कतहु कल्पना, स्वप्नदृष्टा आ अपार्थिवक सहयोग लेने छथि ततहु एकटा सकारात्मक भावभूमि थिक, सृजनात्मक परिवेश थिक, समीचीनताक औचित्य थिक।

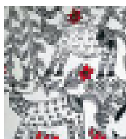
आशा मिश्र लगभग दू दशक सँ मैथिली कथा जगत कँ श्री सम्पन्न करबा मे समर्पित छथि। करौट लैत समाजक करौट लैत लेखनी हिनक विशेषता छन्हि। हिनक रचनामे व्यापकता ओ गहराइ दुनू वर्त्तमान अछि, दुनू विलग नहि अछि अन्यथा एक कँ अभाव मे दोसर संकीर्णताक शिकार भऽ गेल रहैत। अनुभूतिक गहराइ तखनहिं सृजनात्मक बनि सकैछ जखन ओकर पाछाँ ऐतिहासिकता विराजमान होअय। आशा मिश्र स्त्रीक जाहि जाहि पक्ष कँ स्पर्श कएलनि अछि, विवेचन कएलनि अछि, संकेत देलनि अघि ततहि ओकर अतीत, भूत आ विगतक स्मरण करब प्राय: नहि विसरलीह अछि। हिनक स्त्री विमर्श पाकड़िक अजोघ गाछ थिक जकर सिरा अन्तहुँ धरि निकलब बन्द नहि होइत अछि। ओ आकर्षक सिरा शीतलता प्रदान करैत अछि, प्रमोद दैत अछि, अपन दीर्घता कँ प्रदर्शित करैत अछि।



पोथी

जैविक संस्कारमे फलित 'उचरि बैसू कौआ'

चन्द्रेश



1983 सँ सक्रिय लक्ष्मण झा 'सागर'क साठिगोट कविताक संग्रह थिक 'उचरि बैसू कौआ'। पहिल कविता थिक 'कविताक मादे।' एहिमे कविताक परिभाषा अछि। ओ जनैत छथि जे कविता की थिक? किएक तँ 'हमरा लेल बुइया थिक कविता? (14)। सनसनाइत अंतड़ीक आवाज थिक कविता। मनोमस्तिष्ककेँ उद्वेलित – आन्दोलित करैत विचारक प्रवाहमे मूल्यबोधक थिक कविता। मुदा, 'कविता चित्कार थिक... हुँकार थिक...।' कथिक? की हल्ला-गुल्लाक चित्कार, की करुणाक? की चित्कारमे स्पष्ट ध्वनिक अभिव्यक्ति भेल अछि? ई सभ जनितो बुझितो ओ स्पष्ट कहैत छथि जे कविताक मादे जे 'पात चटैत नेनाक/जीहक स्वाद थिक कविता (14)।' कोनो कवितामे त्रासदीबोधकेँ मूल स्वर बनायब अबस्से प्रशंसनीय थिक, मुदा आक्रोशक स्वर अति भऽ खौंझाइत मोनक अभिव्यक्तिमे उपलाइत आबय। ई सभ बात कवि नीक जकाँ जनैत-बुझैत छथि आ आत्मसम्मानक प्रति सजग छथि। ओ देशक आजादी पर प्रश्नचिन्ह उठबैत छथि। की यैह थिक आजादी? एकर सार्थक अभिव्यक्ति अछि 'पन्द्रह अगस्त' मे। ई पन्द्रह अगस्त ककरा लेल? किएक तँ 'तोरा सभ से' एखनो न-9 अगस्त मे। पन्द्रह अगस्त स्वतंत्रता दिवस नहि, क्रान्तिक दिवस। आजादीक जश्न लोक भूखल पेटें नहि मनबैत अछि। अर्थात् देश आजादी अछि तँ गुलाम। कारण आजादी

गुलामीक शत्रु थिक। आजादी जाहि अर्थे दिखाओल गेल छल तकर अभाव अछिए। आर्थिक दयनीयता, नैतिकतामे कमी आ स्वभावगत ईमानदारी पर बट्टा लगिते अछि। जँकि स्वार्थक रुधिया आरो चाकर आ गहीँर होइत गेल अछि तेँ ई दु:स्थिति अछि। संघर्ष आ प्रतिरोधक अनुगूंजमे कविक चौकन्न दृष्टि सजग, सचढ़ ओ प्रतिरोधक स्वरेँ लोक मानसक स्वरकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि जे आह्लादपरक अछि। अपन आत्म सम्मानक प्रति सजगता, सतर्कता, सचढ़ता ओ निर्भीकता नहि रहत तेँ मानवीय मूल्यबोधपरक ह्रास होयबे करत। तेँ क्रूर विडम्बनासँ साक्षात् करबैत जीवन वास्तविक तथ्य ओ सत्यकेँ प्रकटकऽ पाठकसँ सोझे संवाद स्थापित करबौलनि अछि।

संवादपरक रचना 'हथचिट्ठी' थिक जाहिमे संवादक माध्यमे स्त्रीक पतिक नाम संवाद आयल अछि। घर-परिवार आ गाम-समाजक सन्देश एहिमे अछि। मिथिलाक ललनाक चित्र उरेहल गेल अछि जे खगतमे रहितो, विवशताक जीवन जीवाक लेल विवश होइ तो सभ किछु अपने सहेजैत-भोगैत अङेजैत अछि। ओ नि:स्वार्थ गाँव घर-परिवार, सर-समाज, धीया-पूताकें डेबैत अछि। ओ कोहुनाकऽ जीवन गुदश्त करैए। अर्थात् अभावक भावमे रहिले परदेशिया पतिकेँ स्थिति-परिस्थितिक जानकारी करबितो कखनो असन्तोषी भावेँ जीवाक लेल बाध्य नहि करैत अछि।

'कविक आत्म-समर्पण' मे सामाजिक व्यवस्थाक प्रति खौंझाइत मोनक चीत्कार अछि। ई कलुषित समाजमे आइयो तथ्य-सत्यक बिनु परबाहि कयने छुच्छ आदर्श ओ नैतिकताक अढ़मे एहन व्यवस्था बनौने अछि जे उपेक्षित ओ उत्पीड़ित वर्ग आइयो आक्लान्त अछि। ओकर-हृदयक टीस ओ पीड़ा व्यथित भऽ मानव समाजक अङ्ग बनितो ओ शोषक वर्गसँ अवडेरल अछि। किएक? ओ चाहियोकऽ कहिया घरि विवश बनल रहत? कहिया घरि विवशताक ससरफानीमे ओ कस-कसाइत रहत? द्रष्टव्य थिक हिनक विधवाक सम्बन्ध मे - 'आने हमर कविते/ हुनक हाथमे लहठी/आ थारीमे माँछ परसि सकत खाए। जे स्वयं लाचार अछि से कतेक की कऽ सकत? कवि लिखैत छथि, लिखताह तेँ सामाजिक-क्रान्तिक हेतु लेखनीकेँ हथियार बना दिशा प्रदर्शित करैत छथि। एहिमे-क्रान्तिक बीज अछि। मुदा, समाज बदलत कोना? जाहि मुंहपुरुषक हाथमे सामाजिक व्यवस्था अछि, लोकक रीति-नीति, आचार-विचार, बात-व्यवहार ओ व्यवस्थादि अछि से की बदलय देत? कलम कोनो हथियार नहि थिक जे क्रान्ति लऽ मानत वा आनन-फाननमे एहि बलेँ डेराकऽ काजक सिद्धि करबा लेत। कलम तेँ उत्प्रेरक थिक जे लोककेँ हथियार उठयबाक लेल विवश करत। ओ सुनगुनी आनत, वातावरण तैयार करत आ लोककेँ उकसाकऽ क्रान्ति पथ पर बढ़बाक लेल प्रेरित करत।

गाम-घरक बिसरल नेह-छोहमे हिनक कतिपय कविता आयल अछि। मायपरक अनुभूतिमे 'माय हमर गंगा' कविता थिक। 'सत्ते माय हमर गंगा थिकीह... (16)'। माय गंगा छथिए, बनले रहैत छथि। कोनो सन्तानकेँ जन्म देबासँ मनुख बनयबा धरिमे मायक योगदान अवर्णनीय रहैत अछि। कोना ने रहत? पेटमे जे नौ मास धारण करैत अछि। ओ सन्तानक मोनक बात परेखि लैत अछि। ओ सपूतकेँ तँ सहजहिँ, कपूतोकेँ ओहिना ममता प्रदान करैत अछि। मुदा, सन्तान? मायक गुण आ बातक संगहि संतान व्यक्तिवादी सोचमे सभ किछुकेँ बिसरि जाइत अछि। ओ अपने मे समेटल बटोरल परिवारे धरिमे निहित भऽ जाइत अछि। जतय सन्तानकेँ पैरुख भेला पर अपने धीया-पूताक लटारम्भसँ फुरसति नहि भेटैत छैक ततय माय आइयो गामे रहि सभ किछु सहैत-भोगैत अछि। ओ अपन सन्तानक सम्पत्तिक ओगरबाही करैत ओकर पसिन्नक वस्तु-जात पठबैत ओहिना दु:ख दर्दकेँ बिसरि सिनेह भावेँ सभ किछु सहेजैत अछि। ओ समाङ्गे हलैत अछि तैयो ओकर जीह सनताने पर टाङ्गल रहैत छैक। ओ सदति अपने सखा - सन्तानक मोहमे बाझल रहैत अछि। तात्पर्य जे बेटाक सम्बन्ध-सूत्र टूटैत छैक, मुदा माय आइयो बँचौने छैक आ बँचयबाक भरिसक प्रयासरत रहैत छैक। मायक सिद्धान्त आ व्यवहारमे तालमेल छैक आ विचार उच्च छैक।

'अपन अर्द्धशताब्दी पर' कवितामे माइक चिट्ठीक माध्यमे कविक भक्क की टूटैत छैक जे अतीतक भुतिआयल-बिसरल क्षण अलगहे मोन पड़ि जाइत छैक। ओकरा ज्ञानक बोध भऽ जाइत छैक। ओ जनैत-बुझैत अछि जे दियासलाइक एकटा काठी किछुओ कऽ सकैत अछि। ओहिसँ कतेको काज लेल जा सकैत अछि-नीक आ बेजाय दुनू ढङ्गक। तेँ कहैत छथि- 'हम काठी खड़रब, दीपशिखा लेसबाक लेल (19)'। अर्थात अज्ञानतारुपी अन्हारसँ लड़िकऽ इजोत पयबाक लेल। एहिमे जनकल्याणक भाव सन्निहित अछि। संघर्षक संग मानवीय मूल्यबोध आ हेरायल-बिलायल प्रेम संरक्षित आ सुरक्षित अछि।

'एक लग्गा सुरुज' मे औनाइत मोनक विवशता चित्रित भेल अछि। एहिमे 'कमली' आ 'बेचनी'क माध्यमे नारी मोनक विवशता उभरि आयल अछि। मुदा, आश्वस्तिक छिटकैत स्वर अछि जे जिजीविषाक द्योतक थिक। तेँ 'अपन खड़-खड़ तरहत्थी सँ। ता, हमर पीठक घमौड़ी। कुरिआऊ......(21)'।

'हमर खरबना डीह' एहि भाव-भूमि पर आधारित अछि जे 'लोक आब मनुक्ख सँ बेसी। जमीनेक भाग्य किएक देखैत अछि (28)'। गामकेँ सहरीकरण कऽ अपसंस्कृतिक कीटाणु घोंसिअयबाक दर्द उभरि आयल अछि।

'असमक प्रवासमे' असमक भयाक्रान्तता चित्रित भेल अछि। ओहि ठामक भूमिगत संगठन सभक ताण्डवसँ शासन-प्रशासन ओ जनता धरि भयभीत अछि। ओहि संगठनकेँ चाही स्वाधीन असम। ओ भारतक स्वतंत्रतासँ नहि माने-मतलब राखिकऽ असमक स्वतंत्राक बिगुल बजौने ए। एहि भयातुर वातावरण ओ परिवेशमे ओहो निरीह बनि आमे लोक जकाँ अपन बगय-बानि होबैत, डेराइत-चेहाइत तकैत अछि अपन स्वत्व, देशक तिरंगा।

सिनेह आ प्रेमक रूपकेँ झलकबैत 'होटलमे रहैत' आयल अछि। एहिमे स्नेहिल

आवेशक क्षणकेँ संठबाक आ परसबाकमे विभेद करैत बिकछाओल गेल अछि। होटलमे परीकथा पढ़ब आ घरमे सृजनक गीत लिखब। कतेक अन्तर अछि दुनूमे? होटलमे एकाकीपन जीवन-जीयब आ घरमे धीया-पूताक संग मटरगश्तीक सुखमे समय बीतायब। सादगीमे पठनीयताक सुआद जगबैत मनुक्खक जीवन आ सम्बन्धक नव अर्थ ध्वनित करैत अछि जे, जीवनक मर्मक तह फोलैत अछि। एहिमे सृजनधर्मा मनुक्ख नहि रहिकऽ आत्मविलासिताक क्रममे यन्त्रचालित भऽ गेल अछि तकरे देखाओल गेल अछि।

एहि प्रकारेँ लक्ष्मण झा 'सागर'क कवि-व्यक्तित्वकेँ देखैत/परेबैत छी तँ 'उचिर बैसू कौआ' मे बेसी कविता एकरंगाहे अछि। अर्थात् व्यवस्थाक प्रति विद्रोह। ई युग सत्यक माङ्ग थिक आ समय-सापेक्ष अछि। प्रेम आ सिनेह जे आजुक जीवनमे निघटल जाइए तकरा जोगयबाक सेहो भरपूर प्रयासमे अपन काव्यरचनाक आस्वाद बनाओल अछि। जँ कतिपय ठाम व्यक्तिगत जीवनक सत्यतामे आत्मपरक कविता अछि तँ ओहिमे सामाजिक जीवन प्रतिध्वनित भऽ उठैत अछि। हिनक विचारमे मानवीय मूल्यबोध उभरिका आपन अछि। जहिना स्त्रीक स्त्रीत्व शक्ति थिक तहिना पुरुषक पुरुषत्व एहि पर बेस जोर देलनि अछि। ओ समाज आ देशक निर्माणमे व्यक्तित्वबोध पर जहिना बल देलनि अछि तहिना टूटैत सम्बन्ध-सूत्रकेँ भखरबसँ बँचयबाक भरपूर प्रयास कयलनि अछि। ओ लोक हितमे लोकक बात कयलनि अछि। जीवनक सत्यता जे सामाजिक व्यवस्थासँ पीड़ित अछि अर्थात् सामाजिक क्रूरता ओ विसंगतिजन्य विद्रूपता पर ओ जमिकऽ चोट कयलनि अछि। ओ कविता लिखैत छथि, बुझैत छथि आ कवितामे ओ जीवैत छथि। हिनकामे कविताक उत्स छनि। मुदा, जँकि हिनक अधिकांश कविता एके मूल-गोत्रक अछि तँ विविधताक अभाव बुझि पड़ैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे ओ विविध परिवेशमे नहि लिखलनि अछि एकर अर्थ ई नहि जे ओ विविध परिवेशमे नहि डूबिकऽ जे मनोविश्लेषणात्मक अनुभूति उभरिकऽ जयबाक चाही से संकेत, प्रतीक ओ बिम्बक माध्यमे तेना भऽ कऽ उभरिकऽ नहि आयल अछि जे अयबाक चाही। तँ हिनक कविता विशेषे सपाटतामे भऽ आयल अछि। जतय ओ सोझ ढङ्गे अपन बातकेँ ठाइँ-पठाइँ राखि दैत छथि तहिये ठाम-ठीम जे संकेत, प्रतीक ओ बिम्बक प्रयोग अनायासे भऽ आयल अछि से चमत्कृत करैत अछि। मुदा, सब ठाम एहि प्रयोगकेँ ओ सावधान भऽ सुरक्षित संरक्षित ओ सम्पोषित नहि कऽ पबैत छथि। तँ सपाटतामे काव्य-सौन्दर्य धूमिल होइत अछि। ओ तीनू कोटिक कविता लिखैत छथि। उत्तम, मध्यम आ निम्न कोटिक। हमरा तँ हिनकासँ उत्तम कोटिक रचनाक अपेक्षा रहैत अछि से ओ जनैत-बुझैत लिखितो छथि। मुदा, एहन कोटिक रचना कमे निखरिकऽ आयल अछि। ओ श्रमक मोल बुझैत-जनैत छथि तँ श्रमपरक महत्ता स्थापित करैत कविताक सृजन भेल अछि। कतहु-कतहु तँ मोनक व्यथा उभारबाक क्रममे हीन मानसिकताबोध प्रकट भऽ जाइत अछि जे नहि होयबाक थिक। कारण, आजुक जीवन ततेक संश्लिष्ट भऽ आयल अछि जे ताहि अनुपातमे मनुक्खक सेहो बहुत किछु बुझय-गमय लागल अछि। जहिना युगमे काल-सापेक्ष गतिएँ तीव्रताक संग परिवर्तन आबि रहल अछि तहिना लोकक मानसिकता सेहो बदलि अछि। कौआसँ कौआक गेल्ह बुधियारबला बात परिलक्षित भऽ रहल अछि। तखन फेर वास्तविकतासँ मुँह मोड़ब कतेक उचित होयत? ओना ओ वास्तविकता सँ मुँहो नहि मोड़ैत छथि, वास्तविकताक चित्रण करिते छथि आ वास्तविक सत्यकेँ लेखनीमे उतारिते छथि परञ्च जाहि अतल गहराइये डूबिकऽ मानसिकतामे होइत परिवर्तनकेँ सूक्ष्म ढङ्गे, विश्लेषित होयबाक चाही से नहि भऽ पबैत अछि। एहि लेल श्रम-साद्ध साधना अपेक्षित अछिएआ एकटा नीक जकाँ लक्ष्मण झा 'सागर' बुझैत छवि, लिखितो छथि।

ओ सामर्थ्य-बोध अर्जित कयने छथि। मुदा, जाहि कलात्मक कौशलमे काव्यक प्रस्तुति होयबाक चाही सँ एखनो बिरले कवि-व्यक्तित्वमे झलकैत अछि। तँ की? हिनक रचनात्मकतामे जे मानसिक भूख अछि, भावनात्मक ओ आत्मिक स्तर पर रचना-सृजनक प्रति राग अछि, जीवनमे संघर्ष करबाक अहि अछि से विशेषकऽ आह्लादपरक अछि। हिनक शब्द-शब्दक एक-एक पंक्तिमे राष्ट्रीयता ओ सामाजिक भाव-विचारादि भरल-पुरल अछि, मनुष्यत्वक गुणमे चेतनाक अनुगूंज अछि जे चिन्तनकेँ व्यावहारिक स्तर देबाक सामर्थ्य-बोध रखैत अछि। जेँकि कविमे आत्मविश्वास बोध भरपूर अछि तँ हिनक हृदयगत भावना निर्माण ओ संदेशपरक अछि। जीवनक प्रति ललक बोध हिनक अदम्य जिजीविषाक प्रतीक थिक। ओ मिथिलाक संस्कृतिकेँ भारतीय संस्कृतिक रूपमे प्रस्तुत कऽ गरिमामय अभिव्यक्ति देलनि छि। लोक चेतनाक संवाहक कवि जे आरोपित आदर्श आ पारम्परिक रुढ़िभंजक छथि से हिनक चिन्तन-बोध सहजहिं वैचारिक दृष्टिए प्रभावित करैत अछि। जेँकि संघर्षमे फलित मूल स्वर हिनक काव्यक थिक तँ हिनक रचनाधर्मिता समकालीन संवेदनासँ जुड़ैत समकालीन कविक रूपमे प्रतिष्ठापित करैत अछि। लेखनीक सहजते हिनक काव्य-सौष्ठवक विशेषता बनैत अछि। साठि गोट कविताक संकलन थिक समीप्य पुस्तक 'उचरि बैसू कौआ'।

- मनमीत कुटीर/राजपूत कालोनी
मौलागंज/दरभंगा-846004 (बिहार)
06272-231124, 09430640883



पोथी

टाका क मोल

डा. धनाकर ठाकुर



'टाकाक मोल' युवा नाटककार युवा आनन्द कुमार झाक 2000 ईस्वीक छपल हुनक पहिल नाटक छनि जेखन कि ओ स्वयं केवल 23 वर्षक छलथि।

समाजमे खासकए मध्यमवर्गीय समाजमे गरीब मिथिला परिवेशमे बेटीक विवाह सभसँ पैघ सामाजिक समस्या अछि जे एक दशक पूर्वहुँ छल जकर चित्रण कम पात्र रखैत जीवन्त रूपसँ केने छथि जेना कन्याक पिताक नामहि गरीब झा आ घटकक नाम 'दलाल कका'जे सुनिते श्रोताकेँ हँसी लागि जेतैह। नीलाम्बरक कहले 'लीलाम्बर बाबू' उच्चारणजन्य अशुद्धिक रहितहुँ मिथिला मे एहेन नाम सचमे कतहुँ कतहु छैको।

'बेटिए कोखिमे देलहुँ त धनीक घरमे किएक' सँ 'व्यवस्था'क नाम पर विषय रूप देखबैत अछि मनोवैज्ञानिक स्तर पर। बेटा होएत त एना करब – नीक स्कूल मे पढ़ाएब अदि तँ हर बापक मन मे आबि जाइत छैल।

मुदा विवाह की बिना घटकक होइत छैक तँ 'दलाल'क नाम दए देल अछि पात्रकेँ यद्यपि दू अभिरंजन अछि।

उम्हर कन्या सेहो एहि अवस्थामे स्वयं ककरो प्रति आकर्षित होइत छथि (प्रभा कँ प्रभाकरक प्रति –नाम चयन गुण अनुरूपहि अछि दूर पात्रकेँ) घटक के बहुत किछु सहए पड़ैत अछि – जेना समधिलग बाकी दहेजक पाईक लेल उलहन।

ÙæÅU·¤·¤æÚU Ùæç¢Ø·¤æ ·ð¤ ×ÁÕêÌ çSÍçÌ ×ð ÂýSÌéÌ ·¤ÚñUÌ ÀUçÍ ÒãU×ÚU ×êËØ Â‹¼ýãU ãUÁæÚU
×ð... ¥ãUæ¡ ·¤ÕðÅUæ â¢» ãU× çßßæãU ÙçãU ·¤ÚUÕ- ßÏê ßÚU-ÕçÚUØæÌè Õè¿@ UÌÚñU·¤ çãU•×Ì Áð
¥Õ ·¤çÌÂãéU â×æÁ×ð Îð¹æ§Ì ¥çÀU - Üð¹·¤·¤ âæð¿ ·ð¤ â¿ çâh ·¤ÚñUÌ ¥çÀU ¥æ
â¢»çãU ßÚU âðãUæð ¥ÂÙ çãU•×Ì Îð¹ßñÌ ÀUçÍ - ¿éÅU·¤è ÖÚU âðÙêÚUÓ çÎ¥ ×éÎæ ÜÇ¸U·¤æ
¿æçãUÌæðù ÙçãU Î° â·¤Ü âðÙêÚUÐ çßßæãU ÜðÜ ÂýSÌéÌ ãUæð§Ì ¥çÀU ¥æ ÒÅUæ·¤æ·¤ ×æðÜÓ ¹^×
·¤ÚU° ÜðÜ â×æÁ·ð¤ ·¤ãñUÌ ¥çÀU Á¹Ù ÎæÚUæðð»æ çÙØÌ ÀU·ð¤¡ ãéUÙ·¤ çÂÌæ·¤ â¢» ¥ÕñÌ ¥çÀU
×éÎæ çâÙð×æÁ·¤æ¡ çßßæãU ãUæð§Ì ÀñU·¤ Âýð×è Âýðç×·¤æ·¤ (ÂýÖæ - ÂýÖæ·¤ÚU·ð¤¡) ÙæÅU·¤·¤æÚU
Üð¹·¤ â×æÁ·¤ ·¤éÂýÍæ ·ð¤ ãñUÅUðÕæ·¤ ÜðÜ Âýð×·ð¤¡ ÂýSÍæçÂÌ ·¤ÚñUÌ ÀUçÍ ×éÎæ °Ùæ
âæ×æ‹Ø M¤Â¡ð ãUæð§Ì ÙçãU ¥çÀU ¥ÂßæÎ ÖÙçãU ·¤ÌãéU Îð¹æ ÁæÜ ¥æð âÁæÌèØ ßæ çßÁæÌèØ Áæð¸Ç¸U·¤
Õè¿ Âýð× ¥æ ÎêÙê·¤ ÖæÂ× Âýð× çßßæãU ·¤ÚU°¡Ð

बेटी पापिएके होइत छैक' मे वेदना नुकाएल अछि यद्यपि मजाक मे कहल हो। मुदा भगवान तक गरीबहि के वेशी बेटी दैत छथि' आ उम्हर खान्दान मे 'पचहन्तरिक हवा' मुदा आब लोक शिक्षित आनोकरी बल लड़का तकैत अछि' आ लड़का सँ पूछल तक नहि जाइत अछि ओकर विवाह बाप पाईक आधार पर तय करैत छथि। गिनती भनहि किछु हो कहल जाए वेशी कए जे आत्मसम्मान बढ़ाओत। एहेन बात सबके जे समाज मे सब दिन होइत अछि नाटककार सहजहि पात्रसँ कहा दैत छथि।

नाटककार कन्या आ हुनक प्रेमी द्वारा समाजक भीतर आदर्श स्थिति उपस्थापित करए चाहैत छथि।' 'हठात् परिवर्तन' होइत छैक। आ ई शब्द लेखक केँ अपन चारिम नाटक लिखए लेल प्रेरित करैत अछि।

नाटक मे सम्बन्ध जनित चुटकी पर्याप्त अछि जेना मौसीक बहिनक प्रति। गामक जीवन जेना खेत खरिहान कचहरी रजिस्ट्री आफिस मे उलझल रहैत अछि तकरहुँ दर्शन भेटैत अछि आ तहिना व्याप्त बेरोजगारी जत एक किरानी भेनाई जीवनक लक्ष्य बनि गेल हो।

विवाहक विविध मीलक पत्थर तय भेनाई, खानपीन अधिक सजीव चित्रण अछि। खेत लिखि लोक केना बेटीक विवाह करैत अछि तकरा पात्र सँ बजबैबत छथि नाटककार आ कोनो ब्यौते जखन रुपया नहि पूरैत छैक अपन मित्रादि सँ पैंच, सहयोग लेलाक बाद तखनहुँ कोना होइत अछि से बुझाइत अछि नाटकमे।

सभठाम चुटकी। 'महापात्र जकां बगैत छी विवाहक समय। कहियो कोनो श्राद्धभोज आधारित नाटक मे घटक जकाँ कियो व्यवहार कए सकैत अछि। ओना दलाल दलाली करिते अछि।

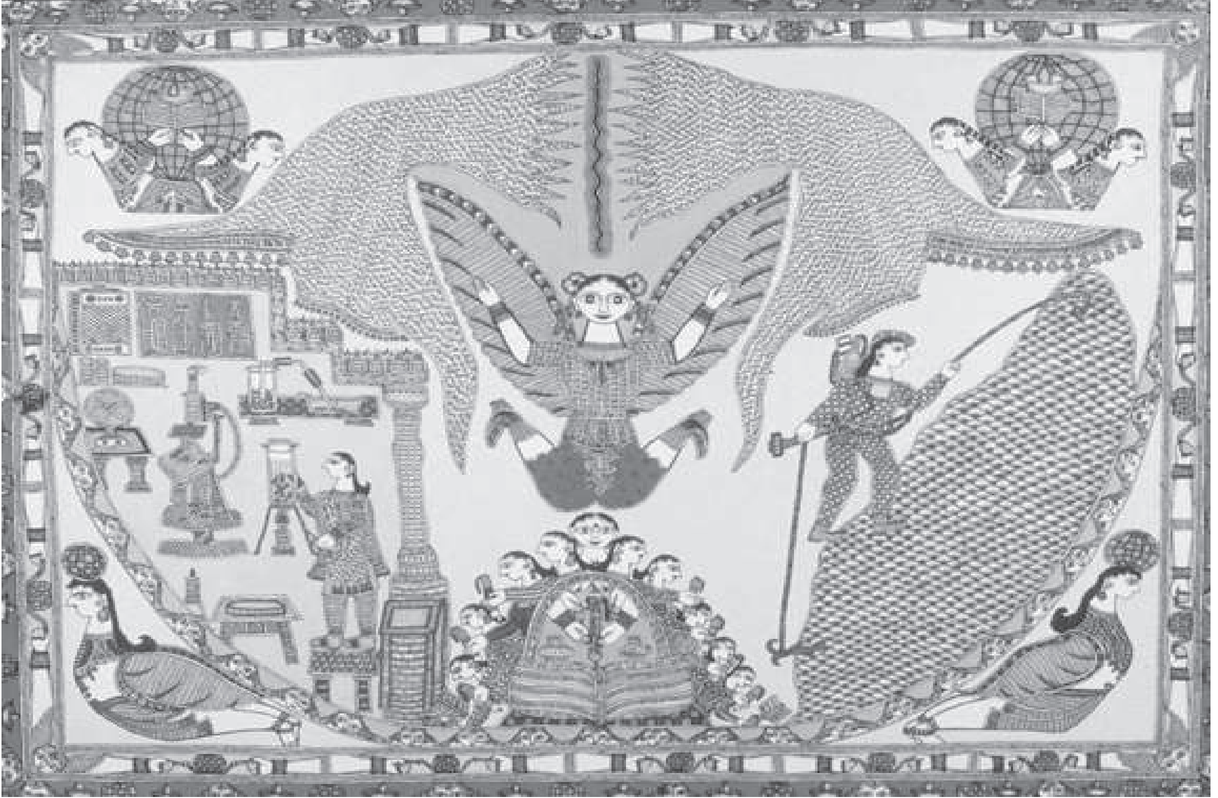
बाकी टाका दूरागमन तक..त विवाहक दिन तक.. डाला आज्ञा सभ होइत अछि। ओ फेर बरियाती कतेक जेताह... गोर लगाई... हजमा ओहिठाम धोती कोर-कुरा (मतलब माछ) 'टाका पूरा नहितऽ बरियाती घूमत'।

नाटककार नायिका के मजबूत स्थिति मे प्रस्तुत करैत छथि 'हमर मूल्य पन्द्रह हजार मे... अहाँक बेटा संग हम विवाह नहि करब- वधू वर-बरियाती बीच उतरैक हिम्मत जे अब कतिपहु समाजमे देखाइत अछि - लेखकक सोच के सच सिद्ध करैत अछि आ संगहि वर सेहो अपन हिम्मत देखवैत छथि - चुटकी भर सेनूर' दिअ मुदा लड़का चाहितोऽ नहि दए सकल सेनूर। विवाह लेल प्रस्तुत होइत अछि आ 'टाकाक मोल' खत्म करए लेल समाजके कहैत अछि जखन दारोगा नियत छकैं हुनक पिताक संग अबैत अछि मुदा सिनेमाजकाँ विवाह होइत छैक प्रेमी प्रेमिकाक (प्रभा - प्रभाकरकैँ)

नाटकक द्वारा लेखक समाजक कुप्रथा के हैटेबाक लेल प्रेमकैं प्रस्थापित करैत छथि मुदा एना सामान्य रूपेँ होइत नहि अछि अपवाद भनहि कतहु देखा जाए ओ सजातीय वा विजातीय जोड़ाक बीच प्रेम आ दूनूक भागब प्रेम विवाह करएसँ।

ओना यदि उक्त चित्रकेँ उपस्थापित लेखक करितथि तँ सामाजिक विरोध श्रोताक संख्याकैं कै पूछए सार्वजनिक पूजा स्थलीमे नाटकक अनुमतिए नहिं भेटतैन्हि तँ कुल मिलाकर एक सामाजिक दोष कैं हैटेबाक लेल सहज मार्ग चुनल गेल जे युवा लेखक मे साहसक कमी के रूप मे नहि देखक चाही। ओहुना लेखक परिवर्त्तन मार्गी छथि क्रान्तिमार्गी नहि आ कतहु कखनहुँ सँ 'हठात् परिवर्त्तन' देखाइत अछि तऽ ओ क्रमशः ठीक भए जाइत अछि।

सामाजिक परिवर्त्तन किछु साल वा दशकमे नहि होइत छैक टाकाकमोल बदलए छैक -बढ़ैत छैक समाजक आर्थिक स्थिति सुधरला पर। एहने परिवर्त्तनमे सैकड़ो वर्ष लगैत अछि मुदा एकर संकेत नाटकमे नहि आएल जे आखिर दहेज किएक? की ई बेटीक बापक सम्पत्तिक हिस्साक एक रूप नहिं जे कहियो रहल होयत? आ एहि लेल बनल कानून 'पतिपीड़क' सेहो क्रमशः भए रहल अछि।



विमर्श

भाषाक देहरि पर मुक्ति कैँ बाँचैत

अरुणाभ सौरभ



समकालीन मैथिलीक स्त्री-लेखन धारदार आ सशक्त अछि। दू-तीन पीढ़ीक रचनाशीलता एक्कहि संग प्रकाशित होइत छैक। एक तरफ जौं 'लिली रे' आ 'नीरजा रेणु' सन लेखिका ई भाषा मे अछि तँ दोसर दिस 'उषा किरण खान', 'विभा 'रानी', 'ज्योत्सना चन्द्रम' आ 'सुष्मिता पाठक' आ किछु नव-नव लेखिका संगहि अपन रचनात्मक प्रतिभा कैँ नियमित विस्तार द' रहल छथिन। उषा जी, विभाजी, ज्योत्सना जी आ सुष्मिता जी ई चारो लेखिका मैथिलीक समकालीन स्त्री लेखनक स्तंभ छथिन जाहि बलेँ माँ मैथिलीक नोर पोछा जैत छनि। एना नहि कि पहिलुका जकाँ मैथिली अपन करेज सँ अपना पोस पुत्र कैँ लगा कैँ हकरैत रहथिन। आब मैथिली कैँ बहुतो बेटी छै जे हुनका नैहरा-सासुर करा देथिन! मुदा मैथिली स्त्री लेखन दिसि सँ जे पोथी हमरा विशेष नीक लगैत अछि ओहि मे ऋतंभरा (नीरजा रेणु), जीजीविषा (लिली रे), स्वप्नगर्भा (ज्योत्सना चन्द्रम), 'भाग रौ आ बलचन्दा' नाटक (विभा रानी), अर्चिस (ज्योति सुनीत चौधरी), भामती (उषा किरण खान), मरीचिका (लिली रे)।

एत' उल्लेखनीय अछि जे लिलीजी, उषा जी आ नीरजा जी पर विशेष चर्चा भ' गेल अछि। मैथिली मे ओना तँ ठोस आ वैचारिक आलोचनाक बेगरता सभ दिन रहल अछि ताहि मे जेना-तेना ई तीनो स्त्री-गण अपन

[illegible]

लेखकीय क्षमता स्थापित क' चुकल छथिन। ओना आवश्यकता अछि हिनका सभ पर अलग-अलग चर्चा करबाक। हम नि:संदेह सभ पर विधिवत अध्ययन सँ उत्तीर्ण भ'क' लिखबाक प्रयत्न करब! मुदा अखन हम ज्योत्सना जीक साहित्य केर अध्ययन सँ उत्तीर्ण भेलहुँ अछि। एक खास-बात ई जे हिनक समकक्ष मे हम जौं विभा रानी कैं रखैत छी त' ई भेटत जे विभा जी नियमित आ मैथिलीक सभ पत्र-पत्रिका मे लगातार आबि रहल छथिन। खास क' अपन नाटकक मादे ओ विशेष रंग-शिल्पक परिचय दैत छथिन। अपन कथा मे ओ महानगरीय जीवनक हाउस वाइफक कथा बड्ड गंभीरता सँ कहैत छथिन। विभा जीक खासियतई छनि जे ओ गाम-घर सँ महानगर आएल स्त्रीक जीवनक कथा कैं बहुत गंभीरता सँ लिखैत छथिन। ओहि स्त्रीक सुख दु:ख, मर्यादा आ स्त्रियोचित गरिमा प्रदान करबाक हौसला विभा रानीक कथाक मूल स्वर थीक!

ज्योत्सना चन्द्रम स्त्री जीवनक आदर्श मैथिल परम्परा कैं रचनिहारि लेखिका छथिन! मैथिल स्त्री-जीवनक कलात्मक सापेक्षताक शब्द-चित्र हिनक कथा आ कविता दुओ विधा मे अबैछ अछि। 'झिझिरकोना' आ 'स्वप्नगर्भा' शीर्षक सँ दू गो कथा संग्रह हिनकर प्रकाशित छनि। एसगर-एसगर (नाटक) आ बोनसाइ (कविता संग्रह) सेहो प्रकाशित छनि। लगभग डेढ़ दुइ दशकक व्यापक रचनात्मक अनुभव छनि, मुदा साहित्यके वातावरण मे जन्म भेलनि, पलली-बढ़ली या बियाहल गेली सेहो! एना कही जे अपन जीवन कैं साहित्ये कैं द' देलथिन! मारकाण्डेय प्रवासीक सुपुत्री आ विभूति आनन्द केर परिणिता होयबाक गरिमा हिनुका प्राप्त भेलनि अछि। मुदा अपन लेखन मे पिता आ पति सँ सर्वथा भिन्न दृष्टि रखनिहारि अपना तरहक एकसरे कथाकार - कवयित्री छथिन - ज्योत्सना जी! एकटा कविता 'अद्‌भुत छी हम' मे ज्योतस्ना जी लिखलथिन जे-

'अपन एकटा गाम छल-
बाबाक गाम
अपन एकटा गाम भेल-
पतिक गाम
अपन एही दुनू गाम मे
अपन मोनक गाम तकैत छी
आ अपने - मे - अपने
अनचिन्हार भ' जाइत छी

वस्तुत: ई समकालीन मैथिल स्त्रीक वस्तु सत्य थिकैक! स्त्री जीवन केर कला-पक्षक प्रगतिशील कला के ओ पारंपरिक अंतर्वस्तुक धरातल पर चिन्हैत छथिन। तैं हुनका लेल अपन गाम चिन्हना कठिन छैक पिताक गाम, आकि पतिक गाम! इएह स्त्रियों जीवनक - यथातथ्य थिकैक, स्त्रीक अपन गाम कोन थिकैक पिता,पतिक गाम मे सँ दुनू ठाम ओ सार्वजनिक अभिव्यक्तिक छटपटाहटि मे ओझरायल मोन सँ अपन स्वर कैं बेर-बेर दबेबाक प्रयत्न करैत छथिन-स्त्री! मुदा जखन ओ स्तर फुटि जाइत छैक कंठ सँ आ अभिव्यक्ति देबाक ताकत जखन हाथ मे अबैत छैक तखने सँ ज्योत्सना जी सनक लेखिकाक आगमन होयत छैक भाषाक देहरि पर कननमुँह आ रुग्न कंठ स्त्रीक स्वर कैं चिन्हबाक निमित्त!

'स्वप्नगर्भा' ज्योत्सना चन्द्रम केर सोलह टा कथाक संग्रह थीक! जाहि मे लेखिका अपन परिवेश परम्परा, क्षेत्रीय अस्मिता आ जातीय चिंतन धारा मे रह' बला स्त्रीक निमित्तैं कथात्मक विमर्श कएलनि अछि। अपन परिवर्तनकामी दृष्टि सँ हिनकर पात्र कथा मे देवी, मा, सहचरी, प्राणी रहैत नीक-बेजाय मे फराक अबैत अछि। उक्त संग्रहक पहिल कथा 'अपन लयमे' मुजौनावाली आ सुदामदाइ अपन संस्कार आ पात्रता कैं बचाय अपन नोर कैं निश्चेष्ट नहि अपितु चेष्टा रूपैं बहए देब सँ नहि रोकि सकैत छलीह। कथाक प्रवाह आ लय बड्ड आकर्षित करैत अछि। 'अपना लय मे' कथा मे सभ किछु लइये मे चलैत अछि। मुदा अंत मे सभ ठाम फोन लेल मोबाइलक घंटी घनघना जाइत छैक। मोबाइल फोनक एहन घनघनी उत्तर आधुनिक जीवन मे परिवेशगत संस्कारी मनुख केर लय थी। ई लय थी एकटा नव जीवनक जकरा प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप कैं लेखिका स्वीकार करैत छथिन।

परिभाषा' कथाक शिवानी, नागर आ ग्राम्य जीवनक बीच अपन जीवन अर्थवत्ता तकैत छथिन। मनोवैज्ञानिक आ दार्शनिक धरातल

पर प्रबुद्ध मैथिल स्त्रीक भाव-धारा कैँ सम्पृक्ति एतहि भेटल अछि। असल मे शहर आ गाम मे कोन जीवन कैँ सत्य मानलथिन शिवानी? एही संदर्भ मे हिन्दीक मन्नू भंडारीक अमर कथा 'यही सच है' मोन पड़ैछ। मन्नू भंडारीक 'यही सत्य है' केर निशीथ आ संजय केर बीच मे दीपाक मन:स्थिति जकाँ ज्योत्सना जीक शिवानी अलग समय मे अलग सत्य कैँ स्वीकार करैत छथिन। एत' जीवनक परिभाषा देबाक कोनो अकादेमिक जटिलता नहि अपितु सहजहि जीवनक परिभाषा पाठक कैँ हाथ लागि जैत छनि। जे अंतत: आजुक समय सत्य थिकैक। समयक गर्भ सँ उत्पन्न विस्थापन, पलायन पर सेहो प्रतीकात्मक दृष्टि लेखिका रखैत छथिन।

'किशोर - मोनक द्वीप' केर नायक प्रत्यूषक माध्यमे टीन अजर सेंटीमेंट एण्ड कन्ट्रडिक्सन कैँ लेखिका बहुत सफाइ सँ पकड़थिन अछि। पुत्र आ माताक संबंध कैँ बहुत भावुक रूप मे लेखिका व्यक्त करैत छथिन। एही संग्रह मे जे अत्यंत भावुक आ मोन कैँ दलमलित क' दए वला कथा अछि ओ थिकै - क्लोज्ड अकाउंट।

'क्लोज्ड अकाउंट' कैँ हम ज्योत्सना जीक श्रेष्ठ कथा बुझैत छी। जतने नीक एकर गठन छैक ओतने नीक भाषा आ कथानको कैँ उचित विस्तार नीक जकाँ अइ ठाम भेटलनि अछि। निशांत, सलोनी आ मंथनक बीच केर संबंध कैँ बहुत भावुकता पूर्ण निर्वहन कयलनि अछि। 'चाक' कथा मे जीवनक घूर्णन गति कैँ, लय कैँ पकड़क असफल प्रयास कएल गेल अछि। ई बड्ड महत्वाकांक्षी कथा बुझनैछ। हलांकि लोक-धर्म केर निर्वहन एत' खूब कएल गेल अछि। गप्पू आ हुनकर माय (वाणीक) कथा 'चाक' घुमि रहल जीवनक कथ्य छी- एहि मे भावुकताक समावेश बेसी भेल अछि आ कथा-सूत्र कने कमजोर भ' गेल। मुदा लेखिका माय-बेटाक अपन जीवनक संबंध कैँ दृष्टांतक रूप मे व्यक्त करैत छथिन। ज्योत्सना जीक कथाक सर्वोच्च विकास हुनक मातृ रूप मे भेलनि अछि। तैँ माय कैँ ई सर्वोच्च स्थान देलनि - कथा मे! संपूर्ण



संग्रह स्वप्नगर्भा सभटा कथा पठनीय अछि।

मैथिलीक खाँटी भाषा-परम्परा सँ कने फराक हिनक पात्र अंग्रेजी - मिश्रित मैथिली बजैत छथि। मैंगलिश-मैथिल+इंगलिश-पब्लिक स्कूल बैकग्राउंड मे पढ़निहार लड़िकाक मुख सँ संवाद एकदम सहज लगैत अछि। संपूर्ण संग्रह मे कतहुँ सँ अकचका देब' वला चेष्टा नहि, आश्चर्य नहि, अतिशय प्रयोगधर्मिता नहि- अपितु सरल सहज जीवनक वस्तु सत्य कैँ स्वीकार करबाक प्रेरणा अछि। सामाजिक समासिकता मे रहैत सामान्य मध्यवर्गीय स्त्री अपन वर्ग चेतनाक संगहि सगठे उपस्थित भेल अछि से अत्यंत प्रशंसनीय। कथ्य आ शिल्प, रूप आ अंतर्वस्तु आदि धरातल पर ज्योत्सना चन्द्रमक कथा पाठक कैँ कथात्मक सम्मोहन सँ जरूरे बान्हबाक सामर्थ्य रखैत छनि। पोथी पढ़बा मे जिज्ञासा बनौने रहैत अछि। स्वप्नगर्भा नाम सँ 'कोना कथा एहि संग्रह मे नहि अछि - मुदा संपूर्ण संग्रह एकटा उल्लेखनीय एवम् स्त्री जीवन वृत्तक स्वप्न मे नचैत कथाक-विकास यात्रा थीक-अंगना सँ घर मे, देहरि पर... !

संदर्भ सूची

1. भाग रौ आ बलचन्दा : विभा रानी : श्रुति प्रकाशन, दिल्ली , पहिल संस्करण-2009
2. बोनसाइ : ज्योत्सना चन्द्रम : जखन-तखन प्रकाशन, दरभंगा पहिल सं-2001
3. स्वप्नगर्भा : वएह : वएह : पहिल सं. 2008
4. अर्चिस : ज्योति सुनीत चौधरी : श्रुति प्रकाशन सं. 2009
5. जीजीविषा : लिली रे : कर्णगोष्ठी, कोलकाता



पोथी

चिनवारक संदेश अछि 'तसमो मा ज्योतिर्गमय'

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'

मैथिली साहित्य जगतक प्रसिद्ध हस्ताक्षर
श्री मंत्रेश्वर झाक उपन्यास 'चिनवार'क संदेश अछि
तसमो मा ज्योतिर्गमय।
अन्हार सं इजोत दिस चलू।
अज्ञान थिक अन्हार।
हरनाथ बाबू अज्ञानतावश अपन पत्नीक इलाज डाक्टर सं नै करबैत अछि
आ पत्नी मरि जाइत छथिन।
अपन जेठ बालक हरनाथ कें छल-प्रपंच सिखबैत छथि
आ स्वयं ओकर शिकार होइत बुढ़ारीमे दुख भोगैत छथि।

बेटाक प्रतीक्षामे लोकनाथ कें भ' जाइ छनि कएटा बेटी
परिवार भ' जाइत छनि नमहर
आ परिवार चलएवाले'
जेठकी बेटी संगीता
पहुंचि जाइत छथि कोठा पर सोनागाछी।
चुल्हाइ अपन बालक कन्हाइ कें हुथैत रहैत छथि।
कन्हाइ आठमामे फेल भेला पर घर सं भगैत छथि।
कोलकाता पहुंचि जाइत छथि।

कन्हाइ पहुंचैत छथि सोनागाछी-संगीता बाइक कोठी
ओत' सं पहुंचैत छथि लखपतिक अपराधक संसारमे
कमाइत छथि अन धुन पाइ
पठबैत छथि गाम पर मनीऑर्डर
गाम पर पत्नी होइत छथिन
हुनके पिताक बलात्कारक शिकार
से जहिया सुनैत छथि कन्हाइ
सुतलेमे मारि दैत छथि बाप कें गोली
आ अपनो मारल जाइत छथि पुलिसक हाथें।

हरिराम करैत धनबादमे कोयला खदानमे नोकरी
हुनका सेवा निवृतिक बाद
बेटा लखन सेहो पबैत अछि ओही खदानमे नोकरी
कोयला चोरीक दलाली करैत-करैत अनाप-शनाप कमाइत अछि
भ' जाइत अछि सहयोगी आ पार्टनर
कोयला माफिया घोषाल बाबूक
आ हुनका बाद हुनक बेटी टीनाक
टीना सं करैत छथि बियाह
बंदूक आ टाकाक बल पर
करैत छथि रेलवेमे ठिकेदारी
भ' जाइत छथि सभ पार्टीक नेता सभहक भगवान
टीना लखपति कें छोडि चलि जाइत छथि।
फर्जी कागज बनबाय
लखपति बनि जाइत छथि टीनाक नाम परक सभ संपत्तिक मालिक।
चलैत रहैत अछि अबैध कारोबार
दैत रहैत अछि चुनौती कानून आ व्यवस्था कें
होइत अछि रेड पुलिस आ आयकर विभागक
मारल जाइत अछि निचला किछु रक्षक
मुदा बांचि जाति अछि अपराध जगतक सरगना
पबैत अछि संरक्षण मुख्यमंत्रीक घरमे
पांच करोड़क बदलामे।

सातमा धरि पढलि
कन्हाइक पत्नी लीलावती
एक राति भ' जाइत छथि अपने ससुर द्वारा
बलात्कारक शिकार
करैत छथि आत्म मंथन
लैत छथि निर्णय
नहि करतीह आत्म हत्या
नहि जेतीह कतहु भागि क'
नहि बनतीह ककरहु भार
अपने लडतीह अपन लड़ाइ
अपने करतीह अपन रक्षा

लीलावती नहि स्वीकार करैत छथि
घरवलाक अबैध कमाइक पाइ
आ कन्हाइक मृत्युक उपरांत
कन्हाइक अंतिम इच्छाक अनुसार
विद्वान नरनाथक मूंहें
सूनि क' विवाहक प्रस्ताव
नहि छिपबैत छथि
बलात्कारक घटनाक बात
आ सत्य सं करैत छथि
नरनाथ कें आकृष्ट

ज्ञानी नरनाथ सफल होइत छथि
जीवनकें सुफल बनयबामे
संतुलन गढबामे
आ जीवन संग्राममे विजयी होयबामे।

उपन्यासमे जीवनक विविध रूपक वर्णन भेल अछि, जेना
बाल-विवाह, शिक्षाक प्रति उदासीनता
बेटी कें बेटाक बरबार सम्मान नै देब,
गाममे नीक चिकित्सकक अभाव,
नशाक दुष्परिणाम, नोकरी ले' गाम सं पलायन,
कोयला माफियाक कुकृत्य,
राजनेता सभहक अपराध जगत सं साटि-घाटी आदि विषय
बाध्य करैत अछि बहुत किछु सोचबाक लेल
अपन गाम लें, समाज लें, प्रांत लें, देश लें।

शिल्प आ शैली आकर्षक अछि,
प्रस्तुति एतेक नीक अछि जे
पढलाक बाद
लेखक आ प्रकाशक कें
बहुत-बहुत धन्यवाद देने विना
अहां रहि नहि सकैत छी।

मो. - 9570635372

पोथीक नाम - **चिनवार उपन्यास**
लेखक - **मंत्रेश्वर झा**
प्रकाशक - **शेखर प्रकाशन**
पटना - 24
मो. - 9334102305
मूल्य - 60/- टाका

उमेश मण्डलक चारिटा कविता

1. के मैथिल?

जहानक परम सत्य
जेकरा अंग्रेजीया युनिभर्सल ट्रूथ कहै छथि–
''सुरूज पूवमे उगैछ।''
जौं बेर–बेर आदित्यसँ पूछल जाए
तँ की हएत...?

ओहो भऽ जेताह भक्
कि देखबए चाहै छथि
संसारक लोक...
की हम कर्तव्य पथसँ विमुख छी?
प्रत्यक्षकेँ प्रमाण की?
किअए देतीह वैदेही बेर–बेर अग्नि परीक्षा।
दशानन जौं सीयासँ
करितथि सम्पर्कक प्रयास
भष्मिभुत हएब निश्चित छल
भगवानोकेँ बूझल छलनि
तखन रघुवर किअए लेलनि
सीताक अग्नि परीक्षा?
मिथिलाक बेटी कतए गेलीह...
दोख ककर?

राजधर्म वा कर्तव्यबोध
भरिगर पड़ल लोकक अविश्वास
जकरा लेल सुखसँ विमुख भेलथि रघुवर
ओकरे आँखिमे नोर नै...
तँए, दूर नै भगाउ
जौं मिथिलाकेँ बचेबाक इच्छा रखै छी
बेर–बेर किअए कहै छी
''हमहूँ मैथिल''
कखनो तँ अपन मोनसँ पुछू
''अहाँ मैथिल, आकि हम मैथिल?''

फूलबाबूकेँ भेटलनि पुरस्कार
वयनाक धेने हथियार
मुदा, हुनक नेना–भुटका
मैथिलीसँ अनभुआर..

फूलबा मैथिलीक नै अछि
साहित्यकार
मुदा हाथमे भाषाक पतवार
धेने घुमि रहल अपन खेत–पथार
डोका–काँकोर बीछ ओ
भैंटक लाबा चिबा कऽ



उफनैत सोनित जरा रहल अछि
मिथिलामे बैसल.....।
मुदा,
प्रश्न रहिये गेल
के मैथिल?

2. किछु नै फुराइए

की कही कहल नै जाइए
देखै छी रहल नै जाइए
सुनै छी तँ आश्चर्य लगैए
हवाइ लड्डू सगतरि बिकाइए
हाथीक बदला सिक्कड़ि लेने
साँझ-परात घुमैए
लेलहा, लुल्हा, लुटलाहा
बंचित भऽ कऽ
अपन भाग्यपर कनैए
बेबस्थाक केर होइत नाच
साँझ-परात सभ देखैए
निनाएल आँखि, भकुआएल मोन
नैसर्गिक प्रतिभाक टोना करैए
विश्वक आहटि पाबि
विज्ञानक सुगबुगाहटि देख
किछु क्षणले सभ एक होइए
मुदा,
ओ सिक्कड़ि
कखनो जातिक तँ कखनो धर्मक
माला पिन्हबैए
कखनो झालिक धून तँ
कखनो मृदंगक....
अपन धूनक धुनिमे सभ अंध भेल बौआइए
किछु नै फुराइए।

3. अपन गाम

उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
उजड़ि गेलौं उपटि गेलौं
केरा आ अड़िकंचनक पात
चापाकल केर बगलक खत्ताक बले
दुनूक लहलहाइत वीर देख
विश्वस्तह भऽ आश्वस्त भऽ
हम उड़ि गेलौं
बीना जड़ि-मूड़ीक भऽ गेलौं हम
ठुठ गाछ सन,
नव पेंपी खोजैक लिलसा
मोनमे अछि हमरा व्याप्त
मुदा,
खत्ताकेँ हम बुझै छी अधला
जे हमर करत कल्याण

संभवत: तँए
हमरा नै अछि विश्वास
उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
बौराए गेल छी अकासे-अकास।

4. हे यौ अहाँ

हे यौ अहाँ, केलौं किछु अहाँ
जे केलौं अपनेले अहाँ
तइले दुख हमरा अछि कहाँ।

सुन्नर निर्मल छोड़ि अहाँ
अकल्याणक बाट पकड़ि अहाँ
खुरछाही कटैत रहलौं
बदलैत रूप ओ स्थितिकेँ
चिन्ह-जानि तैयो अहाँ
ढेका पकड़ि टहलैत अहाँ
आइ जौं हम, किछु बजै छी
किछु करै छी
ऐमे केना मास्टहरी करै छी अहाँ
काल्हि अहाँकेँ हमर
कोनो ज्ञान नै छल
कन्निको धियान नै छल
मुदा, भुखल केर पेट भरबाक जगह
तेल, फुलैलक फरिमे
धकलैत ओइ जेरमे रहलौं अहाँ
आब गाम, गाम नै रहल
विश्वक गाम भऽ गेल
अहाँक बजारोसँ पैघ, सघन
जतए इमानदार, कर्मठ, उदार
रहैत आएल अछि आइसँ नै सदिओंसँ
जेकर साक्षी अछि इतिहास
संभवत: अहुँक चपचपी सघन
भऽ जाइत अछि
गामेक नक्शामे।

गाम- बेरमा
वाया- तमुरिया
जिला- मधुबनी, (बिहार)

रामविलास साहुक चारिटा कविता

1. बेरोजगारी

हम छी बेरोजगार
काम करै छी लाचार
हमरासँ करबैत अछि बेगार
भुखल पेट बनल छी दुखारी
दुखक मारल सुतल छी
उपरसँ परिवारक बोझ भारी
जहिना लकड़ीकेँ चीरैत आरी
खेबाक नै भेटैत उधारी
बाल-बच्चा बनल अछि भीखारी
हमरा देख लोक मारैए किलकारी
की करब नै अछि समझदारी
आसा नै कहिया बनब रोजगारी
की प्राण लेत अत्याचारी
देशमे कहिया मेटाएत बेरोजगारी
सरकारकेँ नै अछि सभसँ सरोकार
हम छी बेरोजगार।

2. प्रीतक गीत

फागुन मास हमर बितए यौवनमा
हमर दुख कहिया हरत सजनमा
गौना कराए लिअ एबकी फगुनमा
आमक गाछपर बैसल कोइली
प्रीतक गीत सुनबए एबकी फगुनमा
चैत मास जेना टपकै महुआ
ओहिना टपकै हमर यौवनमा
सावनक मेघ भिजबए बदनमा
बिजली चमकए बादल बरसै
देहसँ छुटै पसिनमा
बरखा बरसै घनघनमा
पिया बनल अछि बैमनमा
ऊमरल नदिया, दरद जगाबए
दरदक दुख केना केकरो कहबै
आबिते सजनमा दरद हरि लैत फगुनमा
गौना कराए लिअ एबकी फगुनमा
प्रीतक गीत सुनबै छी सजनमा।

3. रूपैआक ढेरी

रूपैआक ढेरीपर करैए खेल
दुनियाँकेँ नचबैए ठेल-ठेल
रूपयाक लालचमे बनल अछि पागल
दानव बनि मानवपर करैत राज
सुखक भुख मिटबैए रूपैआसँ
दीन दुखियाक तौलैए रूपैआसँ
मनुक्खक चालि छोड़ि चलैए
नाच करैए खंजन चिड़ै सन
सुखक चाहमे भटकि गेल राह
सोमरसमे समाए गेल मन विचार
नंगा नाच करैए रूपैआ ढेरीपर
जोशमे होश उड़ि गेल नचबैयाकेँ
जखन रूपैआक ढेरी अंत भऽ गेल
जिनगीक दू किनारा बीच पिसाए गेल
दुखक धारमे बहि गेल रूपैआक ढेरी
जहिना मनुख मुठ्ठी बन्न जनमैए
हाथ पसारि संसारसँ चलि जाइए
रूपैआक ढेरी ओहिना रहि जाइए।

4. भ्रष्टाचारी

जागु-जागु यौ देशक भैयारी
देशमे घुसल पैघ-पैघ चोर
चोर केहेन पहिचान नै आबए
देशमे घुसि सभकेँ सतौनेए
देशक भैयारी, जागु, करू तैयारी
देशक करू रखबारी
आब आपसमे करू नै कोनो बेपारी।
चोर देशकेँ करैत अछि कमजोर
चोरक नाओं छी भ्रष्टाचारी
सभ विभागमे जमैने अछि अधिकार
मंत्री-संत्री एकरे बलपर
भेल अछि मालो-माल।
बड़का महलबलाक दिल अछि कारी
सभ भ्रष्टाचारी, बनल अछि अधिकारी
देशक धन विदेशमे करैत अछि बिकवाली
सभ भ्रष्टाचारी, बनल अछि अत्याचारी
जनताक सोनित
बेचबाक करैत अछि रोज तैयारी
केना भागत देशसँ ई भ्रष्टाचारी
तेकर करू तैयारी
जागु-जागु यौ देशक भैयारी।

गाम- लक्ष्मीनिया, भाया- निर्मली,
जिला- सुपौल।

मानेश्वर मनुजक चारिटा कविता

अपनो किछु

स्त्री
घरवाली
माए
बहिन
आ
आर किछु
होइत अइ
सभक सभ किछु
आ अयनो किछु
होइत अइ
ओ!

तंत्र

हम छल होएब
बरू पाँच - सात बर्खक
मामी छली टटके जुआएल
बुझू जूड़-शितल तक अबैत-अबैत
आम
अपना ओतँ
टिकुलामे कोशा दैत।
कहलनि लतामक गाछ तर
एक अजोह थुड्गी चिबबैत
बौआ, केहन होइत छैक मौगीक जीवन
हवा-बयारमे
कुम्ही-पात्र जकाँ
एक गाम सँ दोसर गाम
बहि चलि जाइत छैक
कतँ रहऽ-वाली कतँ
चलि जाइत छैक।
ओ ई कविता कऽ देलनि।
हमरो उदय होबऽ लागल छल
सूर्यक उदयक संग
भोरे-भोर
कविताक संसार मे
अपना पाठ्य-पुस्तकक किताबमे
हाई-स्कूल मे प्रवेश करितहि।
दू बर्खक बाद सोचल
मामी हमरा ई बात किएक कहलनि।
नारी जीवनक प्रसंग
हमरा सँ किएक कहलनि
किएक ने कहलनि
अपना परिधानक प्रसंग
कोमल त्वचाक प्रसंग
किएक कहलनि हवाक झोंकाक
प्रसंग।
मुदा, हमरा तीनू नीक लागल छल
भोरका सुन्दर शीतल हवा
सूर्यक पहिल किरणक उर्जा
आ हुनकर ओ विमर्श
हमरा संग।
किछुये दिनक बाद देखल
हुनकर रम्भा सन यौवन
आ सूर्यक तेज किरण
संग खेलाइत कमल आ नयन,
जखन हमहूँ गेलहुँ जुआए
तँ सोचल
अपनो सँ अपरिपक्वक
संग विमर्श हेतु
ओ किएक भेल हेतीह तत्पर।
आ किएक कहऽ लागल हेतीह
दुःखनामा अप्पन।
ओ तकैत छलीह टुकुर टुकुर
मुदा पेट आ पाँजर बैसल छलनि
यैह तँ रौदो मे जरैत आ
दाही मे दहाइत
खेतिहर लोकक जिनगी छलैक।
मुदा हमरा प्रति ओ छलीह
एकाकार - निराकार!
होइत अछि आश्चर्य
जखन हुनकर छोटका बेटा
लबैत अछि संवाद जे
माँ कैँ अहाँक संग
भेंट करक लेल
बड़ मोन लागल छैक
जखन कि हम स्वयं
सोचि रहल छलहुँ
प्रेमचन्दक अबला नारीक प्रसंग।
विज्ञानक कोन ई तंत्र छैक
तार कैँ जोड़ैत छैक
प्यार कैँ जोड़ैत छैक।

रेत मे जिन्दगी

अहाँ देखने हेबैक
ओकर स्तन
साड़ीक दोग सँ
हुलकी मारैत।

मुँह लगौने बच्चा एक मे
दोसर कैँ दोसर हाथे
गिजैत!

झूमि गेल होयब
नितम्भ आ नाभि देखि
मुदा नहि देखने हेबैक
पैरमे बान्हल कौड़ी।

ओ सभ तरहक
दुःख क्लेश आ ताप
बर्दाश्त करैत जाइत अइ
कारण ओ समाजक नाक पर
कौड़ी बर्दाश्त नहि कऽ सकैत अइ

तँ ओ अपना जिन्दगी कैँ
नदीक रेतमे बहा दैत अइ
आ स्वयं कैँ बहा कऽ
सम्पूर्ण पृथ्वी कैँ
बचा लैत अइ!

मटिया तेलक बोतल

लबैत छल ओ मटिया तेल
जवाना किछु 1962 क छलैक
मटिया तेलक बोतल ओकर जान छलैक
कारण घरमे वैह एक बर्तन छलैक।

ओ मरैत छल गाएक लेल
कारण वैह एक ममता छलैक
फोलि देलकैक तँ चलि गेलैक
गाएक हेंज मे।
ओकरा भेलैक
गाए आब वापस नहि आओत
मुदा छेटगर चरवाह सभ
देलकैक सान्त्वना जे कनैत किएक छह

गाए अपने-आप खुट्टा पर
आबि जेतह।

ओ ध्यान रखने छल गाए पर
चाहैत छल नहि चलि जाए
आन कोनो गाम।
तैं कनेको सीमा सँ टपैत देखि
दौड़ जाइत छल ओ
गाए कैं रोमक हेतु।
ओकरा नहि होइत छलैक विश्वास
जे गाए खुट्टा पर
वापस आबि जाएत।
भय सँ ओ दोसर दिन
गाए कैं नहि फोललक
गाए नहि छलैक लगहरि
ओ तैं छलि एक साँझक भुखालि
मुदा स्वयं ओकरा काए साँझ सँ
नहि भेल छलैक अन्नक दर्शन
चुल्हो पड़ल छलैक उपास।

मंगला पर राजेश भाई
बीआक - कोठी सँ निकालि
देलकैक एक अढ़ैया - खेसाड़ी
आ
अंतरी पर अंतरी सटल माएक
हाथ चलऽ लगलैक हथरा पर
आ जाँत चलऽ लागल
लोकल ट्रेन जकाँ हर-हराएल

आ तकर बाद रोटी पर
नोन आ मेरचाई।
गाए चलनौठ भकुसऽ लागलि
आ तकर बाद नियम बनौलक
चौबीस घंटा मे एक रोटी।
आइ एतेक बर्खक बाद
जखन बैसैत अइ
नीक-निकुट भोजन पर
तखन याद अबैत छैक
ओ हरियरका मोटका बोतल
जाहिमे ओ मटिया तेल अनैत छल
जे मटिया तेल आनक लेल नहि
बनल छलैक।

ओ विचरक बोतल छलैक।
ओहू समय केयो पीने छल
कतौ केयो पी कऽ फेकने छल
आ ओ ओकरा उठा लेने छल
वर्तन बुझि (पृथ्वी ते पात्रः)
मटिया तेलक हेतु।

ओ नङटे स्कूल विदा भेल छल
माए पकड़ि धरिया पहिरा देने
छलथिन।
ओ सौंसे-स्कूलक छौड़ा सभक
स्लेट भरि देने छल
अ-आ-सँ कविर-काने-धरि
गिनती सँ पहाड़ा धरि।
सभ ओकर लिखल
मास्टर साहेब कैं देखाए आएल।
मास्टर साहेब कहलथिन
सभ केओ ओकरे देखाए दही
ओ नहि ककरो कहलथिन
ओकर दुःख - दारिद्र्य
कैं
केयो हहकारि देही।

मैथिली

- ललित कुमार झा

मैथिली के अभिमान मैथिली
मिथिला के सम्मान मैथिली
मैथिलत्व के पहचान मैथिली
जनकसुता के नाम मैथिली
कोशी कमला बलान (धार) मैथिली
गंगा के किनार मैथिली
अतुल ज्ञान भंडार मैथिली

आजुक सीता

- चन्द्रेश

धनुष-वाण नेने
टुकुर-टुकुर तकैत
रामक चौचंक आँखि
टकटकी लगौने रहल सीता पर
आ छमकैत - उछलैत
वरमाला नेने सीता
कौतुक मे ठिठकैत
चंचल आँखिए निहारैत रहि गेल।
लागल जे आब पहरयती माला
करती वरन
ताकि लेलनि अपना लेल दुलहा
प्रतीरक्षारत रामकैं।
विस्मयक मुद्रामे
बनल-ठनल रामक प्रतीक्षा
टूटय लागल
फरकय लागल बाँहि
सरकय लागल धनुष-वाण
फेर की छल?
इतराइत - नितराइत
अठखेली करैत
बनल - ठनलि सीता
मारि देल कनखी मुस्कीमे
मचलि पड़ल अनगिनत युवक
धराशायी भऽ लहालोट होइत
ता उठा लेलक पकड़िकऽ बाँहि
कतहुसँ टपकैत रावण
लऽ कऽ उड़ल जेट विमान पर
सैर कराबय
मौज-मस्तीक हनीमून मनाबय।
जाबत सम्हरथि राम
घेर लेलक रावणक टोली
लात-घुस्साक ताबड़तोड़सँ
बाँचि ने पाओल
आ अपनाकैं छोट कदक बुझि
मुंह लटकौने राम
घुमि आयल अयोध्या।
दऽ देलि सीता परीक्षा
सतीक अऽढ़ मे
तपैत - झुलसैत
कामाग्नि शान्त करैत
रावणकैं लोभवैत
ओकर मदमाइत आँखिकैं सजबैत
चटा देलि धूरा-गरदा ओकरा अहंकारकैं
आनक सुख-सपनाकैं सँवारैत।

जेना-जेना सतरंगी आभा छितरायल
चेहराक रंग-रोगन प्रस्फुटित भऽ
आरो खिलखिला उठल
गमकदार देहेक गमक गमकि उठल
आ सजल - सजाओल मेहदी
होइत गेल आरो प्रगाढ़
होइत रहल प्रतिध्वनित
खनकैत चूड़ीक खनकसँ।
शदी दर शदी
कुचलैत नारीकेँ
सिखा गेल सीख
पुरुषोचित मानकेँ चकनाचूर कऽ
देखा देल अपन औकादि
रौंदैत अपनाकेँ
ओहीमे समायल
आजुक सीता
बनिकऽ राधा
नचा देल कृष्णकेँ गोकुलमे।
जखन मोन नहि भरल
तँ मोन-आङ्गनमे
दर्पक ज्योति छिटकौने
गढ़िकऽ व्यथा-कथा
दर्दमे समायल
नोर भरल आँखिए
कनैत - खीझैत
इति - कथामे डुबकी लगबैत
नोरे-झोरे मारि देल डुब्बी।
सत्य बात सवा सोड़हो आना सत्त
आँखिमे हिंसक भाव नेने
क्रान्ति ध्वजक संवाहिका
मौलाइत - कुम्हलाइत
ताकमे लागलि - झीड़लि
रक्त-पिपासु बनलि
दुश्मनीक साधमे
जी-जान हाथ नेने
मुस्किआइत रहलि
कनखीक आसरामे बजबैत रहलि
पता नहि ककरा? के बूझत?
अंगूरीकेँ नचबैत
आँखिकेँ मटकबैत
सजबैत रहलि पुतरीमे
आजुक सीता गुनगुनाइत
किछु-किछु बुदबुदाइत
सपनामे उधिआइत
सपने संजोगने
सीमाक आर-पार
बाँचि ने पाओल केओ
अपन गरमीक अनुभूतिसँ तपाकऽ
स्वयं चिनगी बनलि
उधिआइत - धुधुआइत रहलि।
आजुक सीता
सुख-दु:खकेँ अङ्गजैत
अपने पालल घाओकेँ सहलबैत
घीनौनपनाकेँ ललकारैत
एड्सकेँ सजबैत रहलि
पुरुषकेँ मान-मर्दन करबाक लेल।
जून ताकू नारीक छातीमे आश
जखन रामक सीता नहि
तँ के पूछय रावणकेँ
रामराज्य सपना छल
रावणराज के बिसरत
तँ चीखैत अछि सीता
स्वयंक भविष्यक लेल
लव-कुशक उन्मुक्त लेल
छोड़ि दौक बरु उन्मुक्त
श्वाँस लेमऽ दौक मुक्त वायुमे
फहरबैत आँचरमे गुनगुनाइत
मचलि उठैत अछि सीता
रुकि-रुकिकऽ मनबढ़ू युवकक
आँखिमे उतरबाक लेल
छटपटाइत - हिचुकैत
पले-पल मुस्किआइत
अपन आँखिकमे नव दुनियाँ
बसयबाक लेल
राम-रावणक घमण्डके
तोड़बाक लेल
ठिठकैत अछि आजुक सीता।
शीत बनि सीता
हियकेँ जुरौती
अपन ठाओँ-पीढ़ीसँ
आङ्गन-घर सजौती
जँ नहि चेतत
तँ घमण्ड पुरुषक तोड़ती
दरिद्र मानसिकताक दंश
ने सहती ने भोगती
अपन औकादि आब
अपने देखौती
बाट धयने मुक्तिक
चलि पड़लि आजुक सीता
यैह थिकी राधा आ भवप्रीता
बनती ने कथमपि भयभीता॥

- मनमीत कुटीर/राजपूत कालोनी
मौलागंज/दरभंगा-846004, बिहार
9430640883(मो.)

कुटमैती

- महेन्द्र 'मैथिल'

सभसँ बटुआ भारी देखलहुँ
बा'प-रौ-बा'प बरागत कैँ!
पेंट पीठमे सऽट'ल देखलहुँ,
आहिरौ-बा'प कन्यागत कैँ!!
सर्वग्रा'स कए आँखि विदोरने,
आ'रक मा'गमे मूँह बओने!
पा'नक ले'र ठो'र छनि सिंचित
रक्तक धा'र जे'ना सरिओने!!
जनेऊक ह'र्रा दए कऽल जोड़ने,
अपसियाँत टकटकी ल'गौन!
बूढ़ कन्यागत थरथराइत,
कसैया आशाँ दूम सुटकौने!!
जिनकर हा'थ सदा नीचाँ छनि,
ओ' बन'ल छथि मठोमाँठ!
जे' देनिहा'र लक्ष्मीपा'त्र छथि,
ओ' दाँत निपोरने काँ'टोकाँ'ट!!
हे यौ बाबू! एहन अतहतह,
मात्र होइत छै' मिथिला मे!
मनुखक हा'थे मनुख बिकाइए,
भे'द पुरुख आ' महिला मे!!
जनिका लज्जा सँ माँ'थ नैँ झू'कनि,
पूँछ विहीन ओ प'शु थिकाह!
जे स्वदेश सँ ने'ह विमुख छथि,
असुर हृदि-पाषाण थिकाह!!

- धर्मपाल सत्यपाल लि.
98, ओखला इण्डस्ट्रीयल एस्टेट
फेज-तृतीय, नई दिल्ली-20
मो. 9311536072



Ây´¹ÚwÚ´oÎ

सुरेन्द्र नाथ

15 अगस्तक दिन। झिर-झिर सिहकैत हवा। सिहरि उठल छल पात-पात। काँपि गेल छल पुर्णिया शहरक एक-एक इंच जमीन आ फाटि गेल छल समस्त लोकक कोंढ़। एक दिस आजादीक जश्नमे निसभेर भेल उमकैत-बमकैत भारतक भावी पीढ़ी, आजादीक वरदानमे फड़फड़ाइत घर आ ऑफिसक छत पर लहराइत तिरंगा, बैंड बाजाक मधुर धुन पर, गार्ड ऑफ ऑनर' लैत नेता आ अपन प्रसिद्धि लेल विकासक लेखा-जोखा उगिलैत प्रशासनिक अधिकारी। दोसर दिस जूड़ि गेल छल दिनक इजोतमे अपहरणक लेखा-जोखामे एक नव अध्याय। बीच शहरसु मात्र चारि मोटरसाइकिल सवार गली-कूचीसँ छिहकैत, आरि-धूर फनैत, गामे-गाम ससरैत दियर दिस भागैत चलि गेल। भोकारि पाड़ि कनै ठुनकैत आ कुहरैत लोक सभटा देखैत रहि गेल सामने ठाढ़ भेल शहरक लोक। नाचि रहल छलै लोकक मोनमे बीतल घटना लोहाक नालसँ उगिलैत आगिक परिदृश्य। सुन्न भ' गेल रहै गोलीक धुआँसँ समस्त वातावरण। सूखि गेल छल उगलैत आगिक धाहसँ आँखिक नोर आ नाकक पूड़ामे अबि रहल छल एखनहुँ रहि-रहिक' बारूदक महक।

मात्र दूइए दिनमे शहरक ई तेसर घटना छलै। झकरार वस्त्रालयवला अस्पतालक मुँहो नहि देखि सकलै आ विक्की स्टोर वला घरक गेटक सामने चारि चित्त भ' गेलै। सभकेँ ई बात नीकसँ बूझल छलै। आँखिक समक्ष घटल रहै घटना।

मात्र रंगदारी लेल भेल छलै ई सभ घटना। आजुक बात की रहै तकर नीकसँ पता नहि चलि सकल मुदा हवामे पसरल छलै जे बजरंग वस्त्रालयसँ 50 लाख टाका माँगने रहै। समय



पर टाका नहि दलकैं, तें भेल छलै एहन हाल।

आइ तीन दिनसँ फड़कैत रहनि उदितक मायक दहिना आँखि। पूरा घरमे अपशकुनक तलवार लटकल। डर आ अदंकक पसरल बजार। पता नहि किनका ऊपर की बीततै?

तिरंगा फहराब जाइत काल मारुतिसँ उदितकैं उठाय लेल गेलै। उदित हिम्मत करैत गाड़ी स्टियरिंग पकड़ि लेलक मुदा अपहरणकर्ताक आगाँ कोनो बस नहि चललै। ड्राइवरकैं बसमे क' लेने छलै थ्रीनट्टा देखाक।

पसरि गेल छलै पूरा शहरमे सनसनी। कोंढ़मे कनकनी पैसि गेल रहैक। कम भ' गेल छलै हवाक अपन तेवर आ लहराइत तिरंगा झंडाक लहरायब कने मंद भ' गेल छलै।

खबरि सुनतहि बंद भ' गेलनि बापक बोली। माय खसलथि अड़राइत कटल गाछ सन आ अस्पतालेमे खोलने रहथि आँखि।

घर अबितहि माय घाना पसारि देलनि। पहिनेसँ जनैत रहितथि त' समस्त गहना-गुड़िया, दोकान आ घर-दुआर बेच बिकनि अपहरणकर्ताकैं द' दितथि। आइ पतो चललनि त' आँखिक तरेगने गायब छनि। लगौलनि गोसाईकैं गोहारि-'हे मैय्या काली! खप्परवाली!! जँ उदितक आंग-समांग नीक रहलै आ सही-सही घर लौट गेल त' जोड़ा छागरक बलि देब। जानक बदला जान देब मैय्या!'

कालीकैं समस्त संसार आइसँ नहि, अदौसँ पूजि रहल अछि मुदा काली आइ धरि मुँह नहि खोललनि। बिन मुँहे खोलने जखन शुद्ध खून भेटि जाय छनि, तखन मुँह खोलबाक प्रयोजन सेहो चुप्प रहि उदितक मायक हाक्रोश पर जेना ठहाका लगाय रहल छलि।

मुदा चलैत रहल प्रयास। होइत रहल अनुष्ठान। बाँचल गेल रामायण। लगल रहल पंतियानी ब्राह्मण आ दरिद्रनारायणक भोजक। अंतमे बखारि गेल जोतखियो अपन बाना। ओ फड़ियाब' लागल उदितक टिप्पणिसँ शनि आ राहुक दशा।

घरक एक कोनमे बौक बनल बैसल छथि उदितक बाप। फराक छनि उदितक दादाक अनुष्ठानक विधि। कयलनि एक-एक नेतासँ अनुरोध, पुलिसक चिरौरी आ अपराधी चरित्रक लोक सभकैं देब' लगला पाइकैं बले पता लगब' लेल सट्टा मुदा सभ बेकार। सत्ताधारी दलक सांसद नवका सरकार बनला पर कठोर कानून बनेबाक लेल आश्वस्त करैत पिंड छोड़ैलक। जनता जनार्दनक संग नहि देलाक बहन्ना बनावत थानाक पुलिस बहन्ना बनौलक आ अपराधी चरित्रक लोक ई कह फिर पाछाँ मोड़लक जे बड़का नेताक हाथ छैक, जकर पहुँच सरकार तक छैक।

घटना बीच बजारक छलै। उदितक समर्थनमे सम्पूर्ण बजारक लोक बंदीक समर्थन कयने छलै। मोसकिल भ' गेल छलै दैनिक जरूरी वस्तु-जात भेटब। व्यापक जनसमर्थनसँ भ' गेल छलै प्रशासनक निन्न हराम।

जनताक भरोस लेल पूरे शहरकैं गरछि देने छल पुलिस। टी.भी. मे अबैत छल रोजे-रोज समाचार- 'पुलि का सघन अभियान जारी है। शहर के चप्पे-चप्पे की नाकेबंदी कर दी गई है। पुलिस को कुछ ऐसे सुराग मिले हैं, जिससे उसे बहुत जल्द सफलता हाथ लगेगी।'

मचि गेल छलै पूरे बजारमे हड़बिड़रो मुदा थानामे एखन धरि दर्ज नहि भ' सकल रहैक एफ.आई.आर.। उदितक दादा बजरंगी बाबू थाना दौड़ैत-दौड़ैत भ' गेलथि फिरीशान। आइ फेर भिनुसरे पहुँचल रहथि। थानाक आगाँ गायक टाल लग पयर रखितहि गोबरक चोत पर पयर पिछड़ि गेलनि। कोहुना सम्हरैत ठाढ़ भेलथि।

एगारह बजैत छल। थाना पर पुलिस नहि रहैक। किछु कालक बाद गायक टालसँ हवलदार बाहर होइत बजरंगी बाबूकैं गोहरौलकै- 'कहू-कहू बजरंगी बाबू! की हाल-चाल अछि?'

-'ऑफिसक टाइममे गोबर-कड़सी करब

त' शहरक हाल-चाल बुझबै कोना?'

– 'की करबैक बजरंगी बाबू! वेतन हाथ पर अटकिते नहि अछि। ई विभाग दिन-रात खाली खटबैत अछि आ मामूली वेतन पर धौंस जमबैत अछि।'

– 'पेट नहि भरैत अछि त' नोकरी किअए करैत छी?'

– 'अरे स्साला! तोहूँ रौब जमाबैं छें?'

– 'मुँह सम्हारिकैं बाजू। हम अहाँक गुलाम नहि छी।'

– 'अरे स्साला...। आ हम तोहर गुलाम छियौ? भोरे-भोरे बोहनी खराब कयने छें।'

बजरंगी बाबू मनबैत रहलथि। एफ.आई.आर. दर्ज नहिये भेलनि। बात बिगड़ैत देखिक' निहोरा कर' लगलथि। हवलदार पर कोनो असरि नहि।

हवलदार एफ.आई.आर. दर्ज कोना करबाओत? एस.पी. तककैं दस्तूरीक जोगाड़ कोना भ' सकत। जँ क' दैत अछि त' अपन वेतनसँ दस्तूरी देब' पड़तै। भोरुका बोहनी खराब नहि होइ, एहि लेल हवलदार किछु माँग कयलकै। बजरंगी बाबूक हृदय विदीर्ण रहनि। एक बेर फेरसँ बमकि गेलथि।

– 'देखू बजरंगी बाबू! देश के आजादी कहिया भेटलै आ ओकर जशन आइयो मनाओल जाइत अछि। मुइला के बादे एहि देशमे सबकिछु होइत अछि। आइ आजादीक वर्षगाँठ पर तोहर पोताक अपहरण भ' गेलहु। हमर मान त' थानामे एकटा सनहा लिखाक' स्थिर भ' जो। फैदा छोड़ नोकसान नहि हेतौक। सरकार स' अनुग्रह राशि भेटनहि छौक।'

– 'पोता हमर हाथसँ निकलि गेल आ हम अनुग्रह राशिक फेरमे पड़ल रही?'

– 'हमर नहि, सरकारी व्यवस्था थिकैक।'

– 'हमरा कोनो हालतिमे उदित चाही। पता-ठेकाना बता दिय। अहाँ सभ जनै छी।'

– 'बजरंगी बाबू!' मुँह पर हाथ धरैत फुसफुसाक' हवलदार बाजल- 'जोरसँ नहि बाज। कहीं अपहरणकर्ता के पता चलि गेलौक त' उदितोसँ हाथ धोए पड़तौक। तों बेकारक कोन फेरमे पड़ल छें?'

कोनो चारा चलैत नहि देखि बड़ा बाबूक आसरा देख' लगलथि। बड़ा बाबू घरमे सुस्ताइ छलाह। हवलदार बजरंगी बाबूक भावना बूझि फेर बुझौलकै जे बड़ा बाबू गरम मिजाजक लोक छथि। जे दान-दक्षिणा देबाक छौक से एखनहि द' दे। नहि त' बड़का फेरमे पड़ि जेबें।'

– 'बड़ा बाबू कोनो बाघ थिकइ जे गीड़ि जायत?'

'...।'

हवलदार जखन एहूसँ नहि डरल, तखन बजरंगी बाबू हाथ चमकबैत कहलनि-'देखू हवलदार साहब! अपहरणक मामिला छैक। पूरे शहरक लोक चौकस छैक। स्थिति गंभीर भ' जायत।'

– 'हा... हा... हा... हा...। जनता आ चौकस।' हवलदार कठहँसी करैत कहलकै।

– 'आब' दियौ बड़ा बाबूकैं।'

– 'पहिने हवलदार तखन ने थानेदार। बिना हवलदारकैं थानेदारक बापक मजाल थिकैक जे एफ.आई.आर. दर्ज क' लितैक। हँ! फीस बढ़ि जेतौक।'

बजरंगी बाबू चौकीदारसँ बड़ा बाबूक डेराक पता पूछलथि। चौकीदारो लुलुआ लेलकनि- 'बड़ा बाबूसँ भेंट कयने की हेतौ, काज कर'वला काज कयलाक आ पड़ायल। बड़ा बाबूक आसमे देखही ओ लोकनि चारि दिनसँ दौड़ि रहल अछि। ने भेंट हेतनि आ ने काजे हेतनि।

तखनहि भड़भड़ाइत मोटरसाइकिलसँ छोटा बाबू पहुँचला। अबितहि हवलदारसँ कनफुसकी कयलक आ बजरंगी बाबू पर बरसि पड़ल। बजरंगी बाबू अपन सफाइमे किछु कह' चाहै छलथि मुदा छोटा बाबूक गर्जनसँ सुनकर आवाज दबि गेलनि। तखनहि बड़ा बाबू सेहो पहुँचि गेल। बजरंगी बाबू पयर पर खसि सभ खिस्सा सुनौलकनि। बड़ा बाबू पयर झमकारैत बाजल- 'एतेक लोक की थानामे मरले पड़ल अछि?'

– 'नहि बड़ा बाबू! ई सभ बोहनीक नाम पर नाटक करैत अछि।' बजरंगी बाबू खसैत-खसैत सम्हरैत बाजल रहथि- 'हमर ननकिरबाकैं उठाक' ल' गेल... हुनकर मायकैं दाँती-पर दांती लगै छनि... एक्कहि रट लगौने छथि... कियो ननकिरबाकैं ओहि जालिमक हाथसँ बचा लैथि। अहाँ जनताक सेवक छी। हम किनकासँ गोहारि करबै सरकार?'

– 'वेद पुराण नहि बाँचू। थानाक जे दस्तूर अछि, ओकरा पूरा करू।'

– 'अहूँ सैह कहै छिअइ सरकार?'

– 'हम नहि पूरा देश यैह फकरा पढ़ैत अछि। ऐ हवलदार साहेब, ठाढ़े-ठाढ़ की मुँह देखि रहल छी?'

– 'ई बिना दस्तूरीये के फर्द बयान लिखब' चाहैए बड़ा बाबू।'

– 'बिना दस्तूरीक रिपोर्ट! जतेक एहि देशमे अपहरण होइत अछि, जँ सभक रिपोर्ट दर्ज होब' लागै आ ओकर जाँच शुरू भ' जाय त' एहि देशक जतेक जनसंख्या छैक ओतेक पुलिसोक व्यवस्था कर' पड़तैक। सभ अफसर, नेता आ पुलिस सड़क पर आबि जाओत आ हमरा सभकैं परिवारक मुँह देखला सालो भ' जायत।'

बजरंगी बाबूकैं धक्का दैत बाहर क' देल गेलनि। कनैत-कलपैत एस.पी. कोठी पहुँचलथि। दरबान नंगो-चंगो क' देलकनि। जोर-जोरसँ कानब-चिकरब सुनि एस.पी. साहेब बाहर निकललथि। मामिला सुनि एतबहि कहलकनि जे एफ.आई.आर. थानामे दर्ज होइत अछि।

– 'हम थानेसँ आयल छी हुजूर।'

– 'फेर एतय अयबाक प्रयोजन?'

– 'कियो सुनितहि नहि अछि हुजूर।'

– 'अरे ड्यूटीसँ आयल हेतै। थाकल-मारल हेतै। जाउ! समझा-बुझाक' रिपोर्ट दर्ज करबा लिअ।'

– 'की कहै छी हुजूर। थानामे की क्यो रहैत अछि!'

– 'चुप्प... हरामजादा..., एस.पी.क आवाज भारी भ' गेल छलै।'अहाँ थानेदारक ड्यूटी जाँचबै? मंत्री-विधायक त' थानामे दम तोड़ि दैत छैक। अहाँ की छी, तीनमे की तेरहमे? अहाँ कोना मीटर घुसकाक' कपड़ा नापै छी, सभ बूझल अछि। कपड़ेक दोकानमे तीन-तेरह करब। एत' नहि चलत।' एस.पी. साहेब बड़बड़ाइत डेराक भीतर चलि गेलाह आ संतरी बजरंगी बाबूकैं धक्का दैत गेट बंद क' देलक।

बजरंगी बाबूकैं नस-नस फड़कि रहल छलनि। तामससँ आँखि रक्ताभ भ' गेल छलै।

जाइत-जाइत बंद गेट पर कसिक' एक लात मारैत बड़बड़ाय लगला- 'साला... कसाइ... सभ एक्कहि चट्टा-बट्टाक बनल अछि। कहाबैत अछि जनताक सेवक आ करैत अछि जनताक भक्षण। उदितकेँ जँ किछु भ' गेलै त... त... त... हम...।' किछु आर बाजि नहि सकला। कानय लागला। फेर ओ कसिकेँ गेट पर एक लात मारलनि आ एक लोइया थूक फेकैत तेजीसँ विदा भ गेला।

कोनो अपरिचितकेँ हुनक स्थिति देखि दया आबि गेल छल। ओ सुझाव देलकनि - 'अहाँ कोन मायाक जालमे ओझरायल छी। एहि ठाम दर्दकेँ चूसल नहि जाइ छैक। अहाँ सांसद महोदयसँ भेंट करू। बड्ड नीक लोक छथि।'

बजरंगी बाबूकेँ भक्क टुटलनि। चुनाओक समय सांसद घर आबि कहने छलनि - 'बेर-बखत जखन हमर खोज करब, हाजिर रहब।'

जम-जम करैत सांसदक गेट। अनेरो लोक सभ घेरने। किछु गपशप करैत अन्हारेमे तीर भाँजि रहल छलै। भीड़ देखि बजरंगी बाबू दूरेसँ ठमकि गेल छला। दूरेसँ कियो बजरंगी बाबूकेँ चिन्हैत बाजि उठल - 'आउ... आउ बजरंगी बाबू! अहाँकेँ सांसद महोदयसँ कोन काज पड़ि गेल?'

- 'की कहब भरोसा बाबू! बहुत जुलूम भ' गेल। हमर पोताक अपहरण भ' गेल अछि। थाना आ एस.पी. कियो सुनिते नहि अछि।'

- 'हँ... एकरे त' खौवाहटि एतय भ' रहल छल मुदा नीकसँ किछु बुझि नहि सकलियै।'

- 'की कहू भरोसा बाबू। ई चोट्टा एस.पी. जहियासँ आयल छैक, अपहरणक लाइन लागि गेल अछि।'

- 'अहूँ सभ त' उनटे काज करै जाइ छी। एहि युगमे बिना नेता आ मंत्रीके की कियो सुनै छैक? अहाँकेँ पहिने अयबाक चाही छल। आब त' एस.पी. कोनो ने कोनो बहन्ना बनौते। एखन सांसद महोदय आराम क' रहल छथि। किछु देरक बाद आयब।'

- 'एखन कोन आराम करबाक समय छैक यौ?'

- बड़का लोकक बड़का बात।'

- 'तें ने देश रसातलमे चलि गेलै।'

- 'स्वारथ लागी करै सब प्रीति। अहाँकेँ अपन काजसँ मतलब अछि। देखै छियै ने अमला-प्यादा सभकेँ जहिना उठता कि सेवा लेल मारि भ' जेतइ। अहाँ एहि झमेलामे किअए पड़ब। किछु देरक बाद आयब।'

बजरंगी बाबू निपटियेकेँ जयताह। जखन हुनका कियो कहलकनि जे सांसद महोदयक दिन आ राति बरोबरे रहै छनि। आँखि लाल, भोम आ आँखि चढ़ल। बेसी समय सुरा आ सुंदरीमे बीतै छनि। बजरंगी बाबूकेँ जखन सभ खिस्सा मालूम भेलनि त' कपार पीट' लगलाह। ककर मुँह देखि उठल छला। भूखे-पियासे लहालोट छला। घरमे शुरू रहै कन्नारोहटि आ पुतोहू अस्पतालमे बेहोश छलि। सोचलनि- 'जाबत सांसद महोदय उठताह, ताबत ओ अस्पतालसँ निपटिकेँ आबि जायता।'

बेर झुकि गेल छल। भरि दिनक झमारल बजरंगी बाबूक आँखिमे भगजोगनी उड़ि रहल छलै। दुलकी देने अस्पताल दिस बढ़ला। धड़फड़ीमे ऊँच-नीच रस्ता नापैत, खसैत-सम्हरैत एक आँखिमे उदित आ दोसर आँखिमे पुतोहुक फोटो नाचि रहल छलनि। अस्पतालक सीढ़ी पर पयर रखबे कयने छला कि कियो पाछांसं लोककनि-बड़ा बाबू बजा रहल अछि। बजरंगी बाबू हवलदार साहेबकेँ पाछाँमे देखि चौंकला। पुलिसकेँ देखि मोन हर्षित छलनि। ओ बुझलथि जे ई भरोसा बाबूक कृपा छियनि। अबस्से सांसद महोदयकेँ सभ खिस्सा मालूम भ' गेल छनि। श्वेत वस्त्रमे नुकायल पवित्र आत्माक कृपा छल जे ओ अपन पाछाँ पुलिसकेँ देखने छल। एखन ओ विचारक दुनिया मे हरायले छला कि हवलदार फेर टोकलकनि-'की सोच-विचारमे पड़ल छी बजरंगी बाबू? जल्दी चलब कि कोनो दोसर इंतजाम करए पड़त?

- 'चलै छी हवलदार साहेब! कने उदितक मायक हालचाल जानि लैत छी,

ओ जहिना आगाँ बढ़ला कि हवलदार एक घरमेच्चा लगौलक। बजरंगी बाबू अवाक। ने मुँहसँ वकार फुटलनि अ ने आँखिक पले खसलनि। ओ जाबत मामिला नीकसँ बुझितथि ताबत पुलिसक दोसर घरमेच्चा लागि गेल छलनि।

बजरंगी बाबू घिघरि कटैत रहला मुदा हवलदार सुन' लेल तैयार नहि। डाँड़मे रस्सा आ हाथमे हथकड़ी लगौने गाड़ी पर चढ़ाक' विदा भ' गेल छल। अस्पतालक लोक नीकसँ बुझियो नहि सकलै। ठाम-ठाम पर कनफुसकी चलि रहल छलै।

- 'की रे बजरंगी! कम्बल ओढ़िकेँ घी पीबै छें? अपनहि पोताकेँ कतहु नुका देलही आ कहै छें अपहरण भ' गेल!'

बजरंगी बाबू घामे-पसीने तर-बतर। थरथर कँपैत। मुँहसँ बकार नहि फूटनि। शकुनी शुक्ला बड़ा बाबूक बेंत रूइया धून'वला धुनकी सन सट्-सट् चलय लगलै। बजरंगी बाबू हाक्रोश करैत रहला मुदा निर्दयी पुलिस जातिकेँ दरेग कहाँ छलै!

- 'अरे सार! उदित कैं जतय कतहु नुकौने छें ओकर पता-ठिकाना ठीक-ठीक बता दे, नहि त' पीठक चमड़ी उधेसि देबौक आ मामलो दर्ज नहि हेतौक।'

- 'घोर आश्चर्य! सद्य: कलियुग आबि गेल छैक।'

- 'हमरा कलियुग आ सतयुगक पहाड़ा नहि पढ़ा बजरंगी। ठीक-ठीक बता।'

- 'जखन पति-पत्नीमे मामिला बढ़ि जाइत छैक तखन दादा-पोतामे की राखल छैक! बजरंगी बाबू। हवलदार साहेब जोड़न देने रहथि।

! 'हमर रिकॉर्ड देखि लिअ सरकार।' बजरंगी गिड़गिड़ायल छल- 'हमरे पोता आ हमहीं करब अपहरण?'

- 'चुप्प सार...! एक त अपहरण क' के गलती कएने छें आ ऊपरसँ धौंस जमाक' मामलाकेँ रहस्यमय बना देने छें! मामलाकेँ दबायब ओतबे पैघ अपराध थिक जतेक कि अपहरण करब। माने डबल दफा।'

- 'ऐ हुजूर! किअए फुसियेकेँ हमरा फंसयबाक कुचक्र रचै छी? पुलिस गश्तीमे नहि छलै तें ने एहन घटना भेलै।'

- 'आब तों हमरा नीतियोक पाठ पढ़ब' लगलें? काल्हि धरि एस.पी. आ सांसदकेँ नीति सिखबै छलें आ आइ...। ऐ छोटा बाबू ई नहि मानत। लगाउ बेंत।'

- 'हम त' पहिने कहने रही सर! ई सार नहि मानत।' हवलदार बाजल। फेर त' छोटा बाबू मारि बेंतसँ अधमरू क' देने छलै।

बजरंगी बड़ा बाबूक पयर पर खसैत नेहोरा करैत रहल। बड़ा बाबू बुझबैत कहलकनि जे 'जँ एकटा आवेदन लीखि दैत छें जे काल्हि उदितकेँ थानामे हाजिर क' देब मुदा हमर जान बकसि दिय त' तोरा छोड़ि देल जयतौ।'

– 'हमरा अनेरोकेँ एहि केसमे नहि ओझराउ यौ बड़ा बाबू! कान पकड़ै छी। आब हम एस.पी. आ सांसद लग नहि जायब।'

– 'आ मीडियावला की हमरा बकसि देत? फेर काल्हिसँ चक्का जाम आ हड़ताल शुरू भ' जायत। गलती कएलें तों आ सजा भोगए शहरक लोक!' बड़ा बाबू तेहन कसिकेँ एँड़ चलौने रहै जे बजरंगी बाबू चारि नाल चित्त खसल छला। बजरंगी बाबूकेँ मुँह थकूचि देलकै। गत्तर-गत्तर चक्कूसँ काटि देने छलै। खूनसँ देह लाल भ' गेलै। तइयो बड़ा बाबूकेँ जखन मोन नहि भरलै त' उनटा लटकाकेँ तरबामे मारि-मारिक' फुलाय देलकै मुदा बजरंगी बाबू आवेदन लीख' लेल तैयार नहि भेला। अंत मे जखन घर बंद क' कँ मिरचाइकेँ धुआ देलकै त' बजरंगी बाबू हाक्रोश करैत लहालोट भ' गेला। बजरंगी बाबूकेँ होश त' भेल रहनि मुदा बड़ा बाबूक योजना सफल भ' गेल छलै।

आई भोरेसँ टी.वी. पुलिसक बखानमे लागल छलै आ पेपरमे मुख्य पृष्ठ पर सेहो उछालने छलै– 'दादा ने किया पोते का अपहरण!' जे जतय सुनै छल, किनको विश्वासे नहि होइ। मुदा पेपर पढ़ितहि पूरे शहरमे सनसनी भ' गेल रहै। सभठाम एक्कहि चर्च छल– 'कहू त'। केहन लोक आ केहन किरदानी? ककरा पर लोक विश्वास करत! एस.पी. जँ एहिमे दखल नहि करितय त' ई रहस्ये बनल रहितय। सुनै छी जे एनकाउन्टरमे चारि टा अपहरण कतो मारलो गेल छैक। पूरे शहरकेँ घेरि लेल गेल छैक। जल्दीए उदितक पता लागि जयतै। थाना पर लहास देख' लेल भीड़ उमड़ि पड़ल छल। लाशक बगलमे जनताक दर्शनार्थ बजरंगी बाबूकेँ राखल गेल छल। लोक थू-थू करैत छल। बजरंगी बाबू मुँह झुकौने सभ दृश्य देखि रहल छलाह। आँखिसँ झर-झर नोर बहि रहल छलनि। पुलिसक योजना सफल भेल छल। चक्का जाम आ हड़ताल आपस भ' गेल। सर्वत्र पुलिसक जय-जयकार होब' लागल।

चारि दिन बीति गेल। बजरंगी बाबूकेँ जमानत नहि भेटल छलनि। ओ जेलमे सड़ैत रहला आ ओम्हर घरमे होम-जापक अनुष्ठान होइत रहल। दरिद्र आ ब्राह्मणक भोज होइत रहल। कबुला-पाती होइत रहल मुदा उदितक एखन धरि पता नहि चलि सकल छल। उदितक माय अन्न-पानि त्यागने छलि।

संयोगसँ रक्षाबंधन दिन छलै। उदितक बहिन पिलानीमे पढ़ैत छलि। ओ उदित लेल राख पठौने छलि आ उदितसँ टेलीफोन पर गप्प कर' चाहै छलि मुदा घरक लोक बहाना बनाय टारि देने छलै। एहि बातक पता जखन उदितक मायकेँ लगलै त' ठोहि पाड़ि कान' लगलीह।

– 'हे दिनकर-दीनानाथ! कोन कसूरक हमरा एहन सजा देने छी? जँ गलती भेलो होयत त' तकर सजा भोग' लेल हम तैयार छी। हमर धीया-पूताकेँ एहि नरकसँ उबारि दियौ हे दीनानाथ।' फेर माथ पटकि-पटकि कान' लागलि।

ओही घड़ी एस.पी. साहेब सांत्वना देबे' आयल छला। उदितक माय हुनक पयर पकड़ि गोहारि कर' लागलि। एस.पी. कँ सम्हारब मोसकिल भ' गेल छलनि। फेर उदितक माय एस.पीकेँ राखी बान्हलकनि। एस.पीओकेँ बूका फूटि गेल रहनि।

राति एगारह बजे एस.पी. साहेबकेँ सांसदक ओहिठाम बोलाहटि छलनि। एस.पी.क देह सर्द भ' गेल छल। हुनक डेग नहुँ-नहुँ सांसदक कोठी दिस बढ़ि रहल छल।

शहरक बीचमे सांसद शाही महल। महलक आगाँ देश-विदेशक रंग-बिरंगक फूल। एस.पीक पयर ओहि ठाम ठमकि गेल। किछु देरक लेल फूलक सुगंधि हुनक मोन हल्लुक क' देने छल मुदा मोनक धुकधुकी खतम नहि भेलनि। एस.पी. साहेब बढ़ैत गेला। चारिम कमरामे सांसदक सेवामे दू टा पहलमान भीड़ल छल। नजर पड़ितहि प्रणाम करैत काल एस.पी हड़बड़ायकेँ खसि पड़ला। कोनो तरहें उठिक' हाथ जोड़ि ठाढ़ भेला।

– 'आइ काल्हि अहाँ सभ ठाम खसि रहल छी एस.पी.?'

– 'नहि सर।'

– 'की सर... सर... करै छी। बन्हबा अयलहुँ ने हाथमे राखी?'

– 'स...स...र...सर...।'

– 'फर वैह सर...सर। राखी बन्हबाक' हमरा चेताब' आयल छी एसपी? धियानसँ सुनू। एहि राजक पता ककरहू नहि लगबाक चाही जे उदित हमरा लग अछि आ बजरंगीक हिसाब-किताब किअए नहि करैत छी?'

– 'सर! ओ त' थानामे बंद छैक हुजूर। कोना खून क' देबै सर? टी. भी. आ मीडियावला एक्कहि बेर उछलि पड़त सर।'

– 'अहाँ घूस द' क' एस.पी. नहि बनल छी। ट्रेनिंग लेने छी। अहाँसँ नीक त' हमर खनमा वकील अछि। दिन-राति सत्यकेँ फूसि आ फूसिकेँ सत्य बनबैत रहैत अछि। रहल टी.भी. आ पेपरवला, त' पैसाक बल पर भगवानो कीनल जा सकैत अछि।'

– 'बजरंगी शहरी अछि सर... बहुत होशियार।'

– 'पुलिसक वर्दी पहिरै छी मुदा पुलिसिया रंग बदलब नहि जानै छी।'

– 'कोनो चीज ओझरायब आसान छैक सर मुदा ओकर निराकरण छैक ओतबहि कठिन।'

'सरकारक नौकर छी, जनताक नहि। कोन काज कोना हेतै ई सोचब अहाँक काज थिक। निन्यानवे प्रतिशत काज भेला पर पुलिस लाइन आ हंड्रेड परसेंटमे प्रमोशन, राजधानीमे।'

– 'एहिमे नौकरी जा सकै छैक सर आ ऊपरसँ हेतैक छिछालेदर सेहो।'

– 'इनाम ओहिना नहि भेटै छैक। रिस्क कवर कर' पड़ै छैक।'

– 'एखन धरि कोनो कसरि बाँकी नहि छोड़लियै। आगुओ नौकरी दाओपर लगाय देबै मुदा हमर परिवारक...।'

– 'परिवारक चिंता छोड़ू। ओकर रहै-सहैक इंतजाम क' देब। नीक परवरिश हेतै। चाहू त' एखनहिसँ एतय छोड़ि दियौ। कहीं इलेक्शनमे बाजी मारि लेलहुँ त' बुझू अहाँक स्वर्गक रास्ता...।'

एस.पी. साहेबक मोनमे लाबा फुटैत छलनि। एक दिस उदितक माय इनामक घोषणा कयने छलि आ दोसर दिस स्वर्गक सुखक घोषणा। कनेक देर लेल एस.पी. कँ

थकमकाइत आ झक मारैत देखि सांसद महोदय फेर प्रश्न दोहरौलनि– 'देखू एस.पी. ! हम तीस बरखसँ राजनीति क' रहल छी। कतहु हारि नहि मानलहुँ, कतेको अन्हड़-बिहाड़ि आ नीक-बेजाय देखलहु, फूसिक खेती कयलहुँ, आश्वासनक अंबार लगेलहुँ, कतेको लोककेँ श्मशानक रास्ता देखौलहुँ। एस.पी.ओ कतेक देखलहुँ मुदा अहाँ सन डरपोक नहि देखलहुँ।'

– 'आब आरो हमरा झझकारू नहि सर। बस एक मौका...।'

– 'ई भेल ने शानक बात। सांसद महोदय बीचेमे बाजि उठला– 'काल्हि तक ओ बजरंगी कहबै छल। राजस्थानसँ खाली लोटा ल' क' आयल छल, आइ बजरंगी बाबू बनि गेल अछि। काल्हि मंत्रीयो बनि जायत। फेर हम अहाँ सन-सन कुकुर पोसिकेँ की करब?'

– 'अहाँ ठीके कहै छी सर!' समर्थनमे एस.पी. दोहराबैत छल– 'काल्हि हमरो थानामे आँखि देखाबै छल। कहैत छल, पटना-दिल्ली एक क' देब मुदा अपहरणकर्ताक पता लगाक' रहब। सभ ठाम घुसखोरी, महंगाइक जाल पसरल अछि। एहन निकम्मा सरकारकेँ हटाइयेकेँ दम लेब।'

– 'एस.पी. अपन औकातिमे रहू। एहन बोलीसँ अहाँ पर विशेषाधिकार हननक मामिला बनि सकैत अछि।'

– 'ई हम नहि कहै छी सर।'

– 'मुदा ओकर समर्थन त' अहाँ करै छी। पिछला इलेक्शनसँ हमरा तबाह कयने अछि। ओहि दिन मुख्यमंत्रीक उद्घाटन भाषण पर हमरे विरुद्ध आगि उगलि रहल छल। हम बहुत बुझौलियै। ओकर सभ काज करबाक आश्वासन देलियै मुदा ओ साला त' पूरा जमानाक ठेका लेने अछि। जे ओ हरामजादा एहिना करैत रहल त। अपन सीट बचायब मोश्किल भ' जायत।'

– 'एहि लेल अहाँ निश्चिंत रहू सर।'

– 'आखिर कहिया धरि? जखन माथ परसँ पानि बह' लागत तखन?'

– 'बस एक मौका आर सर।'

– 'अहाँसँ किछु नहि होयत। सरकारी कर्मचारी आ नेतामे यैह मूल अंतर छैक। घूसक प्रशिक्षण नहि देल जाइत अछि तइयो ओहिमे माहिर रहै छी मुदा राजनीति आ कूटनीति जनिते नहि छी। तें देशक ई हाल छैक।'

– 'ठीक कहै छी ! राजनीति आ कूटनीति दुनू सहोदर भाय छियै सर। विधानसभासँ एकरो नियम पास करबा ने दियौ सर।'

– 'खिचड़ी सरकारमे नियम पास करब बड्ड कठिन छैक। ओना हम कोन राजनीति आ कूटनीतिक प्रशिक्षण लेने छी?'

– 'से त' राजनीतिमे अहाँक लोहा सभ मानैत अछि सर। तैं अहाँ लेल फेरसँ एहिठामक सीट सुरक्षित अछि। दलित आ पीड़ितक सांसद कहल जाइत अछि अहाँकेँ सर। आई राजनीति आ कूटनीति नहि जनितहुँ त'कोनो जेलमे सड़ैत रहितहुँ सर।'

– 'फेर वैह बात।'

– 'गलती भ' गेल सर।'

– 'ठीक छैक, जाइते अपन मिशनमे लागि जाउ।'

– 'कोन मिशनमे सर?'

– 'कोना अहाँ एस.पी. बनि गेलहुँ? यादि-वादि किछु रहैत नहि अछि? नीकसँ सुनि लिअ।' जाइते थानामे आगि लगा दियौ जाहिसँ बजरंगी कल्हुका भोर नहि देखि सकै आ मीडियामे प्रचार करबा दियौ जे रातुक अन्हारमे किछु आतंकी आबि बजरंगी बाबूकेँ छोड़ाब' मे असफल रहलै त' थानाकेँ फूँकि देलकै। दू-चारि लाशोकेँ प्रबंध क' लिअ।' नहि त' किछु आर छुटभैया सभकेँ उड़ा दियौ।'

– 'थानाक सभ रेकॉर्ड जरि जयतै सर।'

– 'सभ ठेका अहीं ल' लेने छी? नीक-नीक चीज थानासँ हटा दियौ आ कर्मचारीक वेतन, टी.ए., जी.पी.ए. अग्रिम आ स्थापना खर्च ट्रेजरीसँ निकालि थानामे आगि फुँकवा दियौ। सभ पाइ हजम क' प्रचार करबा दियौ जे सभ किछु स्वाहा भ' गेलै। अहूँक स्वार्थपूर्ति भ' जायत आ हमरो हित-अपेक्षितक सभ रेकॉर्ड जरि जेतइ।'

– 'बाप रे बाप! जाँच टीम नहि बैसि जेतइ सर?'

– 'की मूर्ख सन बात करै छी। सरकार कोनो मामिलामे आइ धरि जीति सकलैए? एतेक-एतेक अन्तर्राष्ट्रीय कांड भेलै। आरोपी मरि गेलै मुदा न्यायालयमे एखन धरि केस सड़ि रहल छैक। ककर बल पर? मंत्रीये-विधायकक बल पर ने।'

– 'अहाँकेँ प्रधानमंत्री हेबाक चाही सर। अहाँक दिमाग कंप्यूटर सन चलैत अछि।'

– 'भगवान चाहलकै त' एहि बेर मौका नीक छैक।'

– 'ठीक छैक!' एतबा कहि एस.पी. जहिना प्रणाम क' मुड़ैत अछि कि फेर सांसद महोदय टोकलकनि– 'एकटा आइडिया आर अछि एस.पी.।'

– 'की सर?'

– 'कोनो स्त्रोतसँ बजरंगी बाबूक घरमे ई खबरि पठा दियो जे 50 लाख रुपया फलाना जगह पर फलाना आदमीकेँ द' देला पर उदितकेँ सकुशल छोड़ि देल जायत। एहि बेर इलेक्शनक रेटो हाइ भ' गेल छैक।'

– 'कतेक सुंदर आइडिया छैक सर!' एस.पी. वाहवाही लूट' लेल कहने छलै– 'जँ एहिना अपहरण उद्योग चलैत रहलै सर त' एहिठामक सभ लोककेँ रोजी-रोटी भेटि जेतइ सर। रोजगारक समस्ये नहि रहतै आ सरकारक सुनिश्चित रोजगार योजनाक सेहो बचत भ' जेतै। मानियौ जे बिहारसँ पंजाबक पलायने रूकि जेतइ सर।'

– 'खाली बातेनहि करू एस.पी.। अमल करू।' एस.पी. विदाह भेलाह। ओ प्राय: अपन मोन मे निश्चय क' लेने छलाह।

आकाशक तरेगन विलीन भेल जा रहल छल आ नहूँ-नहूँ एक गोलामे पैसि गेल। भोरमे सूर्यक गोला पूब दिशामे रक्तरंजित तेजक संग अपन प्रकाश बाँटैत पश्चिम दिशामे तेजीसँ बढ़ल जा रहल छल। जहिना-जहिना गोला पश्चिम दिशामे बढ़ैत छल, ओकर तेज प्रखर होइत गेल।

आ, ओहि प्रखर रौदमे सर्वत्र यैह समाचार छल जे रातिमे सांसद महोदयकेँ एस.पीए गिरफ्तार क' लेलक अछि।

– न्यू नवरतन हाता
खजांची हाट
पूर्णियाँ
मो. 9430582152



मातृभूमि

जगदीश प्रसाद मण्डल

जिनगीक अंतिम चरणमे आइ अपन मातृभूमिक दर्शन भेल। ओ भूमि जइठामसँ माए सदति नजरि उठा-उठा देखैत रहैत, ओ प्यारी, सिनेही, प्रेमी, जीवनदायिनी, जीवन रक्छिनी भूमि-मातृभूमि। दर्शन पबिते कमल मन कलपि उठल मुदा असीम उत्साहक संग उमंग संचारित भेल। काल्हि धरिक जिनगी आँखसँ छिपए लागल, ओझल हुए लगल, मुँह नुकबए लगल।

जइ दिन अपन जीवनदायिनी भूमिसँ विदा हुअए लगल रही पूर्ण जुवा रही। नस-नसमे नव खूनक संच होइत रहए। समुद्री जुआर जकाँ जुआनी उठैत रहए। आशा-अभिलासाक संग पकड़ैक लेल उत्साहित रहए। बाट नै भेटने मातृभूमिक दर्शन लाखो कोस दूर दुर्गमे छिपल रहए। मुदा दर्शन पबिते सत्-चित्त-आनन्दसँ खेलैत देख, नमन केलियनि।

डाक्टरीक डिग्री प्राप्त करिते वियाह भेल। नीक गाम, नीक कन्या नीक कुल-मूलक संग नीक दहेज भेटल। कोना नै भेटैत, जइ डिग्रीक मांग देश-विदेशमे अछि ओइमे बेकारी कतएसँ आओत। मुदा इंजिनियर जकाँ तँ नै जे डिग्री पेलोपर काज नै! तइले तँ साधनक जरूरत अछि से अछि कत्तऽ। जुआनीक उमंग उठिते गेल। संयोगो नीक रहल जे बाइस बर्खक अवस्थामे ओइ फ्रान्समे जइमे महान्-महान् दार्शनिक, तत्व चिन्तक वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, देशभक्त जन्म लेने छथि, काज करैक अवसर भेटल। रंगीनी दुनियाँक स्वर्ग, जेहन ओतऽ सड़क तेहन एतऽ घर नै, ओइ पेरिसमे। बिसरि गेलौं अपन भूमि-अपन मातृभूमि। ओना सोलहन्नी विसरि नै गेल रही, मुदा विचारक आलमारीक पोथी जाकमे, तर जरूर पड़ि गेलैं। अखनो मन अछि, गामक विद्यालयक देश वन्दना। हृदैमे नै पहुँचल छल

गंगा सन पवित्र जलधाराक सरिता, नै जनैत छलौं माटिक सुगंध आ गाछी-विरछीक फल-फूलक महमही।

अनुकूल हवा पाबि मन मोहित भऽ गेल। जी तोड़ि जिनगीक पाछु पड़ि गेलौं। करमेसँ जिनगी तँ हमरा किअए नै। नीक स्तरक परिवार बनेलौं, नीक बैंक बैलेन्स अछि। अपनोसँ बेसी खुशी परिवारक सभ रहै छथि। कारणो स्पष्ट अछि। वाल-बच्चाक जनमे भेल, पत्नी अनके घरमे रहैवाली। मुदा आइ मन वेकल किअए लगैए। बौराइ किअए अछि? एकाग्रचित्त सभ दिन रहलौं तखन बान्हल मन पड़ाए कतऽ चाहैए। कि 'आएल पानि गेल पानि बाटे-बिलाएल पानि।' जइ मातृभूमिक गुनगान बच्चा, वृद्ध सभ करै छथि, तइठाम कतऽ छी। बढ़ैत-बढ़ैत जहिना धन बढ़ैए, गाछ-विरीछ बढ़ैए तहिना ने विचारो बढ़ैए। मुदा एना किअए भऽ रहल अछि जे आब ऐठाम-माने पेरिसमे, नहि रहब अपन मातृभूमिक रजकण बनब।

जहिना बाइस बर्खक वएसमे अपन गाम, समाज, भूमि-मातृभूमि छोड़ि पेरिस आएल रही तहिना आइ छोड़ि अपन प्रेमी मातृभूमि, सिनेही मातृभूमिक कोरामे विश्राम करब। मुदा नहियो बुझैत रही तैयौ अबैकाल सभसँ असिरवाद लऽ लेने रही तहिना तँ एतौसँ असीरवाद लइये लिअ पड़त। जरूर पड़त। मुदा ककरासँ? ककरोसँ नै! ने अपन गंगा-यमुनाक जलधारा, ने हिमालय-कैलाश सन पहार, ने गंगा-ब्रहमपुत्र सन धरती, ने समुद्र सदृश्य हृदए। जहिना पत्नीक संग आएल रही तहिना जाएब। जँ ओहो नइ जाथि तखन? ओ नइ जाए चाहती तेकर कारणो तँ कहती।

''आब ऐठाम नै रहब।'' हम पुछलयनि।

पत्नी बजलीह- ''तखन?''

हम कहलियनि- ''अपन मातृभूमिक दर्शन भऽ गेल। ओतए जाएब।''

फेर पत्नी उत्तर देलनि- ''सभ अपन-अपन मालिक होइए। जँ अहाँ जाएब तँ जाएब।''

पुनः पुछलियनि- ''अहाँ?''

पत्नी बजलीह- ''अपन कारोवार अछि। बेटा-पुतोहू दुनू फ्रान्सक भऽ गेल। दुनियाँक स्वर्गमे रहि रहल छी। तखन कि?''

मन पड़ल ओ दिन जइ दिन जिनगीक हिसाब जोड़ि आएल रही। पत्नी संगे रहथि। मुदा आइ? जुग बीत गेल। जिनका सभसँ असीरवाद लऽ आएल रही भरिसक मरि-हरि गेल हेता, गेलापर के हृदए लगौताह। तखन? तखन कि? किछु ने। मुदा जाधरि पहुँचव ता धरिक तँ उपाए चाही। विदा भऽ गेलौं। एक समुद्रसँ मिलैत दोसर समुद्रक विशाल जलराशिक बीच जहाजसँ मद्रास पहुँचलौं। मद्रास बन्दरगाहमे उतड़ि अपन धरती, अपन देश, अपन मातृभूमिकेँ हृदैसँ नमन केलियनि। मन पड़ल रामेश्वरम्। जखन मद्रास आबि गेल छी तखन बिनु दर्शने जाएब बचपना...। विदा भेलौं।

धरती-समुद्रक बीच बनल रामेश्वरमक मंदिर। एक दिस विशाल जल-राशिक समुद्र तँ दोसर दिस खिलैत इठलाइत मातृभूमि। उपर शून्य अकास। समुद्रेक लहड़िमे स्नान कऽ दर्शन केलौं। मंदिरसँ निकलिते खजुरीपर गबैत एकटा साधु मुँहे सुनलौं, ''अवगुन चित्त न धरो।'' जना भूखकेँ अन्न, पियासकेँ पानि खेहारि दैत, तहिना मनमे भेल। जलखै कऽ गामक लेल गाड़ी पकड़लौं।

जंगल, पहाड़, नदी, मैदानकेँ चिड़ैत गाड़ी गाम लग पहुँचल। जे गाम कहियो नन्दन वन सदृश्य सजल छल- लहलहाइत खेत, रास्ता-पेरा विद्यालयसँ सजल छल, धारक कटावसँ विरान बनि गेल अछि। ने एकोटा सतघरिया पोखरि बचल अछि आ ने पीपरक गाछक निच्चाक विद्यालय। घरारी, खेत बनि गेल अछि आ पोखरि-झाँखड़ि घरारी। मुदा तँए कि, ने गामक परिवार कमल, ने लोक आ ने गामक नाओं। गामक दछिनवरिया सीमापर पहुँचते एकटा नवयुवककेँ पुछलयनि- ''बाउ की नाओं छी, अही गाम रहै छी?''

नवयुवक बालज- ''हँ। रमेश नाम छी।''

हम पुछलयनि- ''गामक की हाल-चाल अछि?''

प्रश्न सुनि रमेश ठमकि गेल। किअए नै ठमकैत। लम्वाइ (नमती) भलहिं नै बढ़ल हुअए मुदा रंग आ चौराइ तँ जरूर चतरिये गेल अछि। भरिसक चेहरा देख डरा गेल अछि। मुदा डर तँ ओतऽ बढ़ैत जतऽ डरनिहकेँ आरो डेराएल जाइत। से तँ नै अछि। मधुआएल मन मुस्कुराइत मुँह खोलि निकलल- ''बौआ, चालीस बर्ख पूर्व अही माटि-पानिक बीच डॉक्टर बनि विदेश गेलौं......।''

मधुर बोली सुनि रमेश बाजल- ''गाममे के सभ छथि?''

कहलिऐ- ''कियो नै। जेहो हेताह, हुनको छोड़ि देलियनि। जखन छोड़ि देलियनि तँ वएह किअए पकड़ता।''

तखन रमेश पुछलक- ''रहबै कतऽ......।''

हम बजलौं- ''सएह गुनधुनमे छी।''

रमेश बाजल- ''हम तँ महिसवारि करै छी, आन किछु जनै नै छी। चलु वस्तीपर पहुँचा दइ छी।''

वस्तीपर पहुँचा रमेश चलि गेल। हम ठमकि गेलौं। पूवारि भागक घरवारीक नजरि पड़िते, ओतैसँ पुछलनि- कतऽ जाएब?

कहलियनि- ''ब्रह्मपुर।''

घरवारी कहलनि- ''यएह छी। इमहर आउ।''

मनमे सवुर भेल। डूबा बढ़ल। अपन गामक चालि बढ़ल। लफड़ि कऽ दरबज्जापर पहुँचलौं। घरवारी कहलनि- ''थाकल-ठहिआएल आएल छी, पहिने पएर धोउ। चाह बनौने अबै छी, तावत कपड़ा बदलि आराम करू। आइ भरिक तँ अभ्यागत भेलौं काल्हिक विचार काल्हि करब।''

कहि आंगन जा चाह अनलक। दुनू गोटे पीबैत कहलियनि- ''हमहूँ अही गामक वासी छी। नोकरी करए बाहर गेल रही। अपन घरारियो अछि आ दस वीघा चासो।''

ओ बाजल- ''हमहूँ आने गामक वासी छी। नानाक दोखतरीपर छी। तँए, ने गामक आँट-पेट जनै छी आ ने पुरना लोक सभकेँ।''

कहलियनि- ''हम डॉक्टर छी।''

ओ बजलाह- ''तखन तँ गामक देवते भेलौं। जाबे अपन ठर नै बनि जाइए ताबे एतै रहू। अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऔने आरो बढ़ै छै।''

ठौर पाबि मन खुशी भेल। जीवैक आशा देख पत्नीकेँ फोन लगेलौं-

''हेलो..''

पत्नी उत्तर देलनि- ''हँ, हँ, हेलो।''

हम कहलियनि- ''गामसँ बजै छी। पुनः घुरि कऽ पेरिस नै आएब। अहाँ जँ आबए चाही तँ चलि आउ।''

पत्नी कहलनि- ''चूक भेल जे संगे नै गेलौं। जाधरि अहाँ छलौं ताधरि आ अखनमे जीवन-मृत्युक अन्तर आबि गेल अछि।''

हम कहलियनि- ''जखने मन हुअए तखने चलि आएब।''

ओ बजलीह- ''फोन रखै छी..?''

चारिटा लघु कथा : अनमोल झा

आस्था

भोरक प्राय: सात, आठ बजैत हेतैक। रस्ता कातक ओहि फलेटक कैम्पस स' मोटर साइकिल पर चढ़ल, हेलमेट लगेने ओ निकलल। मेन रोड पर एला पर गाड़ी स्थिर कके ओ ऊपर मुंहे देखलक आ मूड़ी नीचा क' लेलक।

हम ओतहि बस पकड़ै लेल ठाढ़ रही। हमरा ओकर आस्था पर गर्व भेल जे पर मुंहे ताकि क' सूर्य भगवान क' गोड़ लगलक ई। एक बेर ओ आर ऊपर तकलकअ फेर जेना लोक गोड़ लागिक' मूड़ी झुका लैत छैक तहिना ओ झुकेलक आ मोटर साइकिल स्टार्ट क' चल गेल बाइ-बाइ, टा-टा, करैत।

हम देखलह उपरका फ्लेट मे ओकर बहु ठाढ़ छलै।

भोंट

- ककर फोन छल?
- राजारामक।
- के राजाराम, जे मुखिया मे ठाढ़ छै?
- हँ, वैह राजाराम।
- की कहैत छल?
- की कहत। कहलक भोंट खसबै लेल दुनू प्राणीक आब' बड़त।
- ओकरा बुझल नहि छैक जे एत, स' हम सब कोना जाएब। दू दिन ट्रेनमे जाइ टा मे लगतै।
- से ओ कहैत छल बैंक एकाउन्ट द' दिअ' हम पाइ जमा क' दैत छी। हबाइ जहाज स' पटना आबि जाउ। ओतय प्राइभेट कार लागल रहत। कोनो दिक्कत नहि हैत जाइत - अबैत अहाँ सभक....।

खुश

मुखिया भोंट स' ठीक एक दिन पहिने मुखिया जी दू-तीन गोटा स' राति क' सभक अंगने - अंगने गेलाह। एकटा क' पैकेट सब परिवार मे देलखिन, जाहि मे धोती, साड़ी आ शालक अलावा पाँच सयक' रुपैया सेहो रहै। हाथ जोड़ि मुखिया जी कहलखिन - भोंट हमरा देब से आशा रखैत छी हम।

सब कहलकनि - जरूर, जरूर अहीकेँ भोंट देब हम। मुदा हुनका भोंट नहि देलकनि ओ सब। ओ सब भोंट छोटका जातिक प्रार्थीक देलकै। कारण रहै बड़का जातिक प्रार्थी कोनो बाते नहि सुनै छै। जे मोन होइ सैह करै। छोटका जातिका मुखिया सरपंचक' दू टा बातो त' कहि सकै छै। एहि बेरक' मुखिया मे धुरन ततमा जीतल रहै। छोटका बड़का सब खुश छल।

हबा

जगू बजारक रस्ता कात मे टोयोटा इनोभा लागल रहै। इनोभा नव आ चक-चक करैत छलै। लगैत जे एखने शो रूम स' निकालिक' अनने हो।

थोड़े कालक बाद ट्राफिक पुलिस जे गिद्ध जकाँ मर्सइत छलै, ओतय आयल। अबि ते ड्राइवर कैँ कड़ैक क' कहलकै - लाइसेन्स निकालो। मोछ पर ताओ छलै ट्राफिक कैँ, जे नो पारकिंगक जगह पर गाड़ी लगेने छैक आ सेहो एहन नवका चकाचक गाड़ी, आइ खूब लेबनि सार स'।

ड्राइवर कहलकै - आर्मीक' गाड़ी छियैक आ मेम साहेब बजार गेलथि हैं। एतबा सुनिते जेना टायरकैँ हबा एके बेर भुस्ऽ द' निकलि जाइत छैक तहिना ओहि ट्राँफिकक हबा निकलि गेल रहै। जाइत - जाइत कहलकै - अरे यार आर्मी का बोर्ड क्यो नहीं लगबाये हो....।

सम्पर्क - ग्राम+पोस्ट : नरुआर
भाया - लोहना रोड
जिला - मधुबनी (मिथिला)
पिन - 847 407
मो. 094337-53863

मैथिलीके वर्गिय चिन्तनसं मुक्त ....

(n¥lR>11 H$neofi§e)

अछि। मुदा तकर पुस्तक जं तैयार होइछ तं ताहिमे वर्गिय संतुलन आ भाषाक सहजीकरण पर ध्यान नहि देल जाइछ, परिणामत: कोर्समे मैथिली दिश आकर्षण कम भऽ जाइछ। ओना ओत्तहु ई भाषा इतरे वर्गक लोक बेसी पढ़ैत देखल गेल अछि।

मैथिलीमे काज करब बड़ कठिन छैक। प्रोत्साहनक सर्वथा अभाव छैक। पुरस्कार नाम मात्रक अछियो। ओहो भारतमे। हं एम्हर स्वस्तिका फाउण्डेशनक एकलाख टकाक पुरस्कार मैथिली लेखनमे संजीवनीक काज कएलक अछि। तहिना साहित्य अकादमी पुरस्कार सभ अछि। नेपालीमे सरकारी स्तरपर तकर अभाव छल जे आब पूर्ण हयत। नेपाल सरकार 1 करोड़ टकाक अनुदानसं अक्षयकोषक स्थापना कएलक अछि। तकर व्याजसं आब मैथिली साहित्यक्षेत्रमे काज कएनिहार साहित्यकार लोकनि पुरस्कृत होएताह। ई पुरस्कार अगामी वर्षसं प्रारंभ भऽ जएतैक। उपेन्द्र महतोजी सेहो महत्वपूर्ण पुरस्कारक घोषणा कएलनि अछि, भेटबो कएलैए, मुदा एखन तकरा निखार मे समय लगतै। तहिना किछु गोटे अपन नीति रूपें पुरस्कार घोषणा कएने छथि, मुदा जेवीक संस्था जकां वर्षोंसं तकरा पछुऔने बैसल छथि। अनेकों एहन कारण अछि, जाहिसं मैथिलीमे काज करबाक प्रवृतिमे ह्रास अएलैक अछि। नेपालमे नेपाली दिश लोक ढरकल अछि, भारतमे हिन्दी दिश, तैयो मैथिलीक अपन क्षेत्र छैक, साहित्य छैक आ एकर अपन लेखक छैक। छै त बस मनमे बैसल एकटा गलत दम्भ जे मैथिलीक नाम हमरेटा माथ पर लिखाएल अछि, आन बुढ़ियाक फूसि! मैथिलीक्षेत्र मे सत्यकें स्वीकार नहि कऽ सकबाक कमजोरी सेहो एकर विकासक बाधा रहलैक अछि। जेना अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मलेन 2067 काठमाण्डू हर तरहें सफल रहल मुदा तकरा पचा नहि सकबाक परम्परावादी पृष्टपोषक सभक धीगड़ो! ई प्रवृत्ति सम्पूर्ण मैथिली संसारमे लागु होइछ। हमरा लगैत अछि ई चलबो करत मैथिल प्रवृतिक संग!



ç×çÍÜÜ¢¿Ü×ð´ ÖôÁÂÂéçÚÚØeÂý·¤ôÂ!

प्रेमकान्त चौधरी



महाकवि कोकिल विद्यापतिक ई पांति– ''देसिल वयान सभ जन मिट्ठा।'' अतः अप्पन देशक भाषा अप्पन भू–भागक भाषा आ अप्पन मातृभाषा सभ के नीक लगैत अछि। हमरालोकनि प्रवास मे रहि क अहि बातके बेसी अनुभव केलौंह कि अप्पन मातृभाषाक की महत्व होयत अछि। असम मे रहि कऽ, असमिया संस्कृति केऽ बीचो–बीच अप्पन भाषा–संस्कार अस्तित्व बचाऽ कऽ रखनाई कम बड़का बात नहि अछि। जेना बंगाल में बंगला, असम मे असमिया, आ दक्षिण भारत मे रहै बाला बाहरी लोक सभ केऽ ओहिठामक स्थानीय भाषा जननाई अनिवार्य अछि। मुदा उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, मध्यबिहार, दिल्ली, हरियाणा प्रायः हिन्दी क्षेत्र मानल जायत अछि। राजस्थान, पंजाब मे से हो स्थानीय आ हिन्दी मिक्स कऽ, कऽ लोक बजैत छथि। मिथिलांचलक लोक जे हिन्दी बेल्ट मे रहैत छैथ ओ लोकनि बेसी सऽ बेसी मैथिली सऽ पलायन कऽ गेलाह। प्रायः ई देखल गेल कि नवका पीढ़ी सभ हिन्दी बजैत छैथ। हिन्दी के एकटा राष्ट्रीय रूप छलैक मुदा नहि बनी सकल? अतः मिथिलांचल मे चूंकि शिक्षा–दीक्षा के माध्यम हिन्दी रहल अछि ताहि कारणो मिथिलावासी मे हिन्दीकरण आसानी सऽ भऽ जायत अछि।

आ घर–घर मे सेहो एकर प्रभाव पड़ल। मुदा ओनाहू अगर देखल जाय तऽ बिहारक भाषा हिन्दी नहि छल– मिथिलांचल में मैथिली, मगध क्षेत्र से मगही आ भोजपुर क्षेत्र मे भोजपुरी। बिहारो मे हिन्दी एकटा सम्पर्क भाषा के रूप मे रहल जे वस्तुतः आब सभ क्षेत्रीय भाषा के खा पचा रहल अछि। अहि मे विशेष अवदान अछि हिन्दी अखबारक जे जिला संस्करण के माध्यम सऽ क्षेत्रीय भाषाक विनाशलीला जारी अछि, कारण अहि क्षेत्रीय भाषा सभ मे दैनिक अखबार नहि अछि आ ने प्राथमिक शिक्षा?

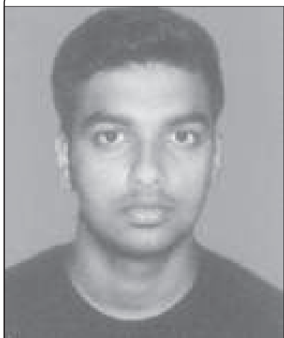
असम मे हम सभ रहैत छी आओर एकटा बात बहुत नीक जकां अनुभव भेल जे अहिठामक लोक सभ अप्पन भाषा संस्कृतिक रक्षा लेल तत्पर रहैत अछि। आ कोनो तरहक नुकसान उठाबऽ केऽ लेक तत्पर सेहो। असम मे छात्र आंदोलनक (आसू) जन्म एकर उदाहरण अछि। ओना तऽ आंदोलनक मुदा अनेको छल मुदा विशेष कऽ छल असमिया भाषा पर बंगला के प्रभाव आ विदेशी (खासक बंगलादेशी) नागरिक समस्या। आसू अप्पन उद्देश्य मे कतेक सफल भेल से तऽ हमरालोकनि बुझतै छी!

असल बात पर एखन घरि चर्चा नहि भेल– ''मिथिलांचल मे भोजपुरिया प्रकोप।'' प्रकोप कहला पर अनेक तरहक मोन मे बात उठैत अछि। मुदा अहिठाम हमर संदर्भ अछि 23 जुलाई 2011 केऽ संध्या 8 बजे सऽ दरिभंगा ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन सऽ श्रीमति शारदा सिन्हा द्वारा भोजपुरी लोकगीतक प्रसारण। वस्तुतः कोनो क्षेत्रिय रेडियो के काज होईत छैक ओहि क्षेत्रीय भाषा–संस्कृतिक अनुरूप कार्य केनाई नई कि बल धकेल, अनाधिकार प्रवेश केनाई। मिथिलाक प्राण–दरिभंगा, मिथिलाक मान–सान दरिभंगा, ताहि मे भोजपुरी लोकगीत? मिथिला निवासीक लेल अहि सऽ बेसी आघात करै बला–बात आओर की होयत! ई कोनो सर्वभाषा लोकगीत वा सांस्कृतिक कार्यक्रम नहि छल। ई तऽ विशुद्ध रूपे कार्यक्रम आयोजित कएल गेल। मैथिली भलेहि भारतीय संविधान के अष्टम् सूची मे स्थान पाबी, देशक संबैधानिक भाषा बनी गेलिह मुदा जाहि तरहे भोजपुरीया संस्कार अप्पन फूहड़पन के कारण तेजी सऽ सीमा पार कऽ रहल अछि। भोजपुरी खराब नहि मुदा भोजपुरी के जाहि तरहे फिल्मी संस्कार मे सराबोरकऽ ग्लैमरस गीत नाद नाच प्रस्तुत भऽ रहल अछि ओहि सऽ ई बात साबित भऽ रहल अछि श्रीमान् भिखारी ठाकुर पर कोना प्रहार केयल जा रहल अछि। हुनकर आदर्श, लोकगीत आ आजूक फूहड़पन के कारण मलीन भऽ गेल अछि।

अहि ग्लैमरस लोकगीतक कारण– भोजपुरी अप्पन प्रभाव क्षेत्र बढ़ा कऽ– बेतिया, मोतिहारी, सीतामढ़ी क्षेत्र मे घुसिया गेल अछि। माँ जानकी के जन्मस्थली सीतामढ़ी बेसी प्रभावित भऽ गेल अछि। आई– काल्हि उत्सव पर भोजपुरी गीतक प्रभाव देखबा मे आबि रहल अछि। अतः भोजपुरी के मिथिला क्षेत्र मे प्रवेश वा घुसपैठ एहि बातक प्रमाण अछि कि कोना मैथिली के कमजोर कयल जाए।

ऑल इंडिया रोडियो दरिभंगा के स्टेशन डाईरेक्टर के एतवो ज्ञान नहिं छन्हि कि मिथिलांचल मे नीक लोकगीत गवैवाला केऽ कमी नहि?

ई बहुत दुखक बात अछि आ अहि पर सम्पूर्ण मिथिलावासी के पुरजोर विरोध करबाक चाही आ अप्पन अस्तित्व के बचा कऽ राखबाक चाही ताकि भविष्य मे एहन घटना के पुनरावृति नहि हौय। एक तरफ हिन्दी आ दोसर तरफ भोजपुरी के दोहरा मारि सऽ मैथिली केऽ बचाउ।



महर्षि विद्या मंदिर, लालमाटी, गुवाहाटीक छात्र **यशवंत कुमार** चौधरी सीबीएसई बोर्डक हायर सेकेंडरी परीक्षामे ८८ प्रतिशत अंक सहित स्टार श्रेणीमे स्थान प्राप्त केलैथ। ओ गुवाहाटीक श्रीमती कल्पना चौधरी एवं श्री प्रेमकांत चौधरीक सुपुत्र छैथ।

डीपीएस, गुवाहाटीक छात्रा **खुशबू सिंह** बारहवींक परीक्षामें ८८ प्रतिशत अंक प्राप्त केलैन्ह आ आईईई परीक्षा उत्तीर्ण केलाक बाद आईआईटी, सिलचर मे प्रवेश केलैथ। ओ गुवाहाटीक श्रीमती गायत्री सिंह एवं श्री कृत्यानंद सिंहक सुपुत्री छैथ।





एसजेएन सरकारी होम्योपैथी कालेज, गुवाहाटीक छात्रा **अमृता मिश्रा** तृतीय बीएचएमएस (फाइनल) परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त केलैथ। ओ गुवाहाटीक श्रीमती कल्पना मिश्रा एवम डॉ. एनके मिश्राक सुपुत्री छैथ।



विश्व पर्यावरण दिवस पर गुवाहाटीमे आयोजित राज्य स्तरीय चित्रांकन प्रतियोगितामे लुइत अंग्रेजी स्कूल, गुवाहाटीक छात्रा **भावना झा** एवम **पूजा झा** दोसर आ तेसर स्थान प्राप्त केलैथ। दूनू बहिन गुवाहाटीक श्रीमती विभा झा एवं श्री विष्णुकांत झाक सुपुत्री छैथ।





Ÿaeè×Ìè ÂýçÌÖeÛaee·ð¤ Âçà¿×
Õ¢»æÜ·¤ Úæ…ØÂæÜ °×·ð¤ ÙæÚæØ‡æ
ÎéæÚUæ ·ð¤ç×·¤Ü §ÁèçÙØçÚU¢»
§¢SÅUèÅUKØêÅU ·ð¤ }Åæãæ¢ ÎèÿææÌ
ç߀ææÚUæ ŠæéÚUæ ÂéÚUý¤æÂ·¤ ·ð¤ Ùæ ...
·ð¤Üæ ÂÚU S߇æüÂÎ·¤ âð â•×æçÙÌ
·ð¤Ü¹è»ÜÐ Ÿaeè×Ìè ÂýçÌÖeÛaee
·¤Ü·¤•aee·¤ Ÿaeè×Ìè àæèÜæÛaee °ß¢ Ÿaeè
Üý×‡aeÛaee âæ×Ú·¤ âéÂé˜æè ÀñÍÐ

कोलकाता मे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित संगोष्ठी सम्पन्न

साहित्य अकादेमी द्वारा दिनांक 7-8 जुलाई 2011 कवि कवीन्द्र रवीन्द्र, महर्षि अरविन्द ओ कविकोकिल विद्यापति विषय पर आयोजित संगोष्ठी एवं मैथिली कवि सम्मेलन साहित्य अकादेमी सभागार 4, डी.एल खान मार्ग, कोलकाता-700025 मे सम्पन्न भेल।

आगत विद्यान लोकनिक स्वागत श्री जे. पोन्नुदुरै (विशेष कार्याधिकारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) केलनि। आरंभिक व्याख्यान श्री विद्यानाथ झा 'विदित' अध्यक्षीय व्याख्यान श्री राजनन्दन लाल दास एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री रामकुमार मुखोपाध्याय (श्रेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, कोलकाता) केलनि। एकर पहिल दिनक पहिल सत्र मे (07.07.11) विषय छल-

विद्यापति सार्वदेशिक प्रभावक पुरोधा महर्षि अरविन्द :-

एकर आलेखक पाठ केनहार छलाह श्री अमरनाथ झा, श्री सत्यानंद पाठक, श्रीमती अरुणा चौधरी आदि।

दोसर सत्रक विषय छल - ब्रजबुलि, बँगला आ मैथिली एकर अध्यक्षता डा. श्री गंगेश गुंजन केलनि आ आलेख पाठ मे श्रीमती कमला चौधरी, श्री वीरेन्द्र झा, श्री शिवप्रसाद यादव, आ अजित आजाद। तेसर सत्रक विषय छल - रवीन्द्रनाथ ठाकुर आ विद्यापति। एकर अध्यक्ष छलाह श्री ताराकांत झा (सम्पादक मिथिला समाद, कोलकाता), आ आलेख पाठ मे श्री रवीन्द्र कुमार चौधरी, मंजर सुलेमान, उदयनाथ झा 'अशोक' इत्यादि।

दोसर दिनक (08-07-11) का चतुर्थ सत्रक विषय छल - देसिल बयना आ बँगालक अंत: संबंध जकर अध्यक्ष श्रीमती रमा झा छलीह आ आलेख पाठ मे श्री वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर, श्रीमती नीता झा, ममता चौधरी इत्यादि।

पंचम सत्रक विषय छल - मैथिली साहित्य पर रवीन्द्र नाथक प्रभाव। जाही मे आलेख पाठ केलनि डा. श्री केष्कर ठोकुर, डा. धीरेन्द्र नाथ मिश्र, श्रुति अमर आ अशोक झा।

समापन सत्र मे आलेख पाठ कयल श्री पंचानन मिश्र, श्री किशोर कांत मिश्र, श्री अमरनाथ झा जकर पर्यवेक्षक छलाह श्री महेन्द्र हजारी आ विभूति आनंद आ धन्यवाद ज्ञापन केलनि श्री मोहन चौधरी। आ तकरा बाद साँझ 5 बजे स' मैथिली कवि सम्मेलन श्रीमती डा. शेफालिका वर्माक अध्यक्षता मे संपन्न भेल जाही मे संचालन स्वयं श्री जे. पान्नुदुरै जी कएल आ कविता पाठ केनहार मे छलाह - श्री सियाराम झा 'सरस', प्रो. शंकर झा, ज्योत्सना चंद्रम, श्री लक्ष्मण झा 'सागर' श्री विनय भूषण, डा. आरती, अनमोल झा, निक्की प्रियदर्शिनी, रानी जी, श्रीमती शैल झा आ श्रीमती शैल सागर।तेसर दिन (09.07.11) अकेदमीक सभागारे मे मैथिली भाषा परामर्श मंडलक बैसार भेल आ ओहि मे अगिला कार्यक्रमक मादे विचार विमर्श सम्पन्न भेल।जाही तरहक विषय पर ई संगोष्ठी सब कएल गेल छल ताही मे बहुत पर बहुत गोटाक ऐहि मादे की आलेख पाठ करब से सोचै लेल बाध्य क' देने रहे। आलेख पाठ केनहारकेँ 5,7, दिन प्राय: पहिने पत्र आ विषयक सूचना भेटलनि। विषय एहन छल जे लोकके दु मास, चारि मास, छह मास पहिने सूचना देबाक छल जे विद्वान सब एकर ठीक स' नीक जकाँ अध्ययन करिथति आ आलेख पाठ मे सुभिता होइतनि।

प्रस्तुति- अनमोल झा

तैसम अन्तर राष्ट्रीय मैथिल सम्मेलनमे पारित प्रस्ताव

भारत सरकारसँ - 1. पौराणिक एवं सर जार्ज ग्रियर्सनक भाषा सर्वेक्षण अनुसार बिहारक तिरहुत, दरभंगा, कोशी (सहरसा), पूर्णियाँ, भागलपुर, मुंगेर आ झारखण्डक संथाल परगना प्रमण्डक गठन मिथिला प्रान्तक रूपमे आर्थिक विपन्नता दूर करबाक हेतु पृथक राज्यक गठन करय, जे सदासँ रहल अछि। 2. जानकी नवमीक अवसर (वैशाख शुक्ल नवमी) पर सार्वजनिक अवकाशक घोषणा करय। 3. (क) रेल मंत्रालयसँ आग्रह जे मिथिला क्षेत्रक किशनगंजसँ बेतिया धरि स्टेशन सब पर सम्पूर्ण उद्घोषणा मैथिली भाषा मे करय। उक्त प्रसारण मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप यथा पूर्वी मैथिली, पश्चिमी मैथिली एवं दक्षिणी मैथिलीमे सेहो कराओल जा सकैछ। (ख) मिथिला क्षेत्रमे स्टेशन सभक नामपटमे प्रथमत: मिथिलाक्षर तखन देवनागरी आ अन्तमे रोमन लिपिक प्रयोग कयल जाय। (ग) जयनगर-सहरसा जानकी एक्सप्रेसकेँ पूर्णियाँ जोगबनी तक बढ़ा ओकरा प्रतिदिन कऽ देल जाय। द्विसाप्ताहिक राँची-जोगबनी, राँची-सहरसा, राँची-सीतामढ़ी ट्रेन चलाओल जाय। (ङ) समस्तीपुर-जयनगर, दरभंगा-नरकटियागंज आदि रेलपथक

दोहरीकरण कयल जाय। (च) सकरी निर्मली लाइनक आमानपरिवर्तन करा निर्मलीक कोशी रेलमहासेतुक निर्माण शीघ्र कऽ देल जाय तथा ट्रेन दरभंगासँ सुपौल चला देल जाय। 4. केन्द्रीय सूचना प्रसारण मंत्रीसँ आग्रह जे मिथिला क्षेत्रक प्रत्येक आकाशवाणी ओ दूरदर्शन केन्द्रसँ सम्पूर्ण प्रसारण मैथिलीमे कराओल जाय। उक्त प्रसारण पश्चिमी, पूर्वी ओ दक्षिणी मैथिलीमे सेहो कराओल जा सकैछ। 5. मानव संसाधन मंत्रालयसँ आग्रह जे (क) सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ मातृभाषा पत्र मे राखल जाय। (ख) आइ.आइ.टी. पटनाकेँ दरभंगामे स्थानांतरित कऽ देल जाय। (ग) आइ.आइ.एम. केँ पूर्णियाँ स्थानांतरित कयल जाय। (घ) मधुबनीमे प. वाचस्पति मिश्र अन्तर राष्ट्रिय विश्वविद्यालय खोलल जाय। 6. केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय सँ आग्रह जे अ.भा. आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) केँ पटनासँ सहरसा स्थानांतरित करय। 7. केन्द्रीय विज्ञान एवं तकनीकी मंत्रालयसँ आग्रह जे मुजफ्फरपुरमे अ.भा. विज्ञान एवं तकनीकी खोज संस्थान (IISER) खोलल जाय। 8. केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालयसँ आग्रह जे सीता सर्किट, मिथिला सर्किट एवं वृहत् मिथिला सर्किटक निर्माण कऽ अन्तर राष्ट्रिय पर्यटनसँ जोड़ल जाय। 9. इन्दिरा-मुजीब गंगाजल बँटबाराक अनुबन्धकेँ रद्द कय मिथिला क्षेत्रक हितरक्षण कयल जाय।

बिहार सरकारसँ - 1. आग्रह जे ओ यथाशीघ्र बिहार विधानसभासँ मिथिला राज्यक गठन हेतु पौराणिक एवं सर जॉर्ज ग्रियर्सनक चिन्हित मैथिली भाषी क्षेत्रकेँ सम्मिलित करैत प्रस्ताव पारित करा सरकारकेँ पठाबय। 2. मिथिला क्षेत्रमे राजकाजक प्रथम भाषा मैथिलीकेँ बनयबाक हेतु भारतीय संविधानक धारा 347 केर अन्तर्गत अनुशंसा महामहिम राष्ट्रपति महोदय लग पठाबय। 3. उत्तराखण्डक तर्जपर पूरा प्रान्तक द्वितीय राजभाषा संस्कृत भाषाकेँ बनयबाक कृपा करय, कारण संस्कृतक विकास मे कोनहु प्रान्तक अपेक्षा एहि प्रान्तक योगदान अधिक रहल अछि। 4. एहि क्षेत्रक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली भाषाकेँ बनाबय तथा बारहम स्तर धरि मैथिलीकेँ ऐच्छिक विषयसँ अनिवार्य मातृभाषाक गुच्छमे लऽआनय। 5. मैथिली अकादमी एवं अन्य प्रकाशक पर दबाव दय छात्रोपयोगी पाठ्यपुस्तककेँ बाजारमे सर्वसुलभ कराबय। 6. पटनामे निर्माणाधीन आइ.आइ.टी. केँ दरभंगा स्थानांतरित करबाक प्रस्ताव केन्द्रकेँ पठाबय, जाहिसँ एन.आइ.टीक अछैत पटनामे अनावश्यक भीड़ नहि बढ़ि सकय। 7. पटनामे निर्माणाधीन एम्सकेँ सहरसामे स्थानांतरित करबाक प्रस्ताव केन्द्रकेँ पठाबय, जहिसँ पटनामे पटना, नालन्दा एवं इन्दिरागांधी आयुर्विज्ञान संस्थानक अछैत अनावश्यक भीड़केँ रोकल जा सकय। 8. पटनामे निर्माणाधीन आइ.आइ.एम. केँ पूर्णियाँमे स्थानांतरित करबाक प्रस्ताव केन्द्रकेँ पठाबय, जाहिसँ नेपाल, भूटान आ बाङ्ला देशक छात्रकेँ सेहो सुविधा भऽ सकतनि आ सार्कदेश सबमे भारतक प्रतिष्ठा बढ़ि सकत। 9. पटनामे निर्माणाधीन विधि विश्वविद्यालयकेँ मुजफ्फरपुरमे स्थानांतरित करबाक प्रस्ताव केन्द्रकेँ पठाबय, जाहिसँ क्षेत्रक विकास भऽ सकत तथा पटनाक भीड़ सेहो नहि बढ़ि सकत। 10. राज्य लोकसेवा आयोगक कार्यालय भागलपुर, दरभंगा एवं मोतिहारीमे स्थापित करय, जाहिसँ पटनाक भीड़ कम भऽ सकत। 11. प्राचीन ओ आधुनिक शिक्षामे मधुबनी जिलाक ऐतिहासिक योगदानकेँ देखैत एहिठाम वाचस्पति अन्तर राष्ट्रिय विश्वविद्यालय स्थापनाक प्रस्ताव केन्द्रकेँ पठाबय, जाहिसँ नेपालीय मिथिला सेहो गौरवान्वित भऽ सकत। 12. पण्डौलमे एक SEZ केर निर्माण करय, जकरा लेल कनाडाक मैनिटोबाक एक मंत्री (वीरसायर निवासी) सहयोगी भऽ सकैत छथि। 13. राजनगर (मधुबनी) मे एक मिथिला आयुर्विज्ञान संस्थान (M.I.M.S.) क स्थापना कयल जाय, जाहि लेल पूर्व दरभंगा महाराजक भूमि अनुदानित भऽ सकैछ। 14. पुसा ओ भागलपुरसँ भौगोलिक दूरी रहलाक कारण फारबिसगंज (अररिया) मे एक कृषि विश्वविद्यालयक स्थापना करय, जहिसँ इलाकाक उर्वराभूमिक सदुपयोग भऽ सकय। 15. जानकी नवमी दिन सार्वजनिक अवकाशक घोषणा करय। 16. सीता सर्किट, मिथिला सर्किट ओ वृहत मिथिला सर्किट लेल उचित व्यवस्था कय मिथिलाकेँ विश्व पर्यटन मानचित्र पर आनल जाय। 17. प्रस्तावित सिमरिया घाट (बेगूसराय) मे अर्धकुम्भ (दि. 11.10.2011 सँ.10.11.11 तक) केँ उचित प्रोस्ताहन प्रदान करय, जहिसँ राज्यहितमे एक नव परम्पराक विकास भऽ सकत।

झारखण्ड सरकारसँ - 1. आग्रह जे ओ मैथिलीकेँ द्वितीय राजभाषा घोषित करय, कारण एहि प्रान्तमे मैथिली भाषीक संख्या आन सब भाषाभाषी सँ अधिक अछि। 2. मैथिली भाषाकेँ झारखण्ड लोकसेवा आयोग परीक्षामे एक ऐच्छिक विषयक रूपमे शामिल करय। ज्ञातव्य जे राज्यक विश्वविद्यालय सबमे अनेक दशकसँ मैथिली भाषाक शिक्षण चलि रहल अछि। 3. मैथिली अकादमीक गठन अविलम्ब करय। 4. मैथिली भाषाकेँ क्षेत्रीय भाषायक गुच्छमे आनय। 5. सर ग्रियर्सनक चिन्हित मैथिलीभाषी क्षेत्र (संथाल परगना प्रमण्डल)क प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली भाषाकेँ बनाबय तथा +2 परीक्षाक स्तर मे मैथिली भाषाकेँ ऐच्छिक सँ अनिवार्य मातृभाषाक गुच्छमे लऽआनय। 6. मिथिला प्रान्तक गठन हेतु सन्थाल परगना प्रमण्डलकेँ ओहिमे शामिल करबाक प्रस्ताव विधानसभासँ पारित करा केन्द्रकेँ पठाबय। 7. जाधरि मिथिला प्रान्तक गठन नहि भऽ जाइत अछि ताधरिक लेल सन्थाल परगना क्षेत्रीय प्राधिकारक गठन करय तथा ओहि लेल प्रान्तक चौथाइ राशि आवंटित करय। **साहित्य अकादमीसँ** - आग्रह करैत छी जे मिथिला क्षेत्रक बोलीसबकेँ मैथिली मानि ओहिमे पुस्तक प्रकाशनकेँ प्रोत्साहित करी।

मैथिल समाजसँ- 1. ई सम्मेलन सम्पूर्ण मैथिली भाषी समाजसँ आग्रह करैत अछि जे ओ आपसी बातचीत, निमंत्रणपत्र, आवेदन आदिमे मैथिली भाषाक प्रयोग करथि। जानि बूझिकऽ उपेक्षाभावसँ जे मैथिलीक प्रयोग नहि करैत छथि हुनक निमंत्रणकेँ विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कऽ देल जाय। 2. समाजसँ आग्रह अछि जे मैथिली भाषाक पोथी, पत्रिका, समाचारपत्र आदि कीनिकऽ पढ़थि। प्रकाशक सेहो पाठकीय आ पुस्तकालयीय मूल्य पृथक पृथक राखथि। रेडियो टी.वी.क मैथिली कार्यक्रमकेँ प्रोत्साहित करी, संगहि कलाकारलोकनि सेहो मिथिलाक मर्यादाक पालन करथि।3. प्रकाशकलोकनिसँ आग्रह जे महिलालोकनिक रुचिकेँ ध्यानमे रखैत नारी पत्रिका प्रकाशित करथि। 4. पंचांगकार लोकनि सँ आग्रह जे मिथिलाक नववर्ष मेससंक्रान्ति (जूड़शीतल) वा चान्द्रवर्ष चैत्र शुक्ल पड़िबासँ नव पंचांग निकलथि। सौराठ वैवाहिक सभा अन्तिम शुद्धमे नहि बास करा प्रारंभ वा मध्यमे बास कराबथि, जाहिसँ उखड़ल सौराठ सभा फेरसँ जमि सकत। वसन्त ऋतुक सभा ओहुना मनोरम ओ सुविधाजनक रहत।

नेपाल सरकारसँ - 1. ई सम्मेलन नेपाल सरकार ओ जनतासँ विनम्र निवेदन करैत अछि जे ओसंघीय लोकतांत्रिक हिन्दू गणतंत्रक पुनर्स्थापन नेपालमे करथि, जाहिमे राजाक कोनो स्थान नहि हो।2. जानकी नवमी - वैशाखा शुक्ल नवमी (सीता अवतरण दिवस) केँ विशेष महत्वदय ओहि दिन सार्वजनिक घुट्टी घोषित कयल जाय। 3. मैथिलीभाषी क्षेत्रमे पृथक मिथिला प्रान्तक गठन कयल जाय।4. मेचीसँ महाकाली धरि हुलाकी सड़कक निर्माण ओ पक्कीकरण कयल जाय। 5. नेपाल लोकसेवा आयोगक परीक्षामे मैथिलीकेँ शामिल कयल जाय। 6 जनकपुर धाममे राजर्षि जनक विश्वविद्यालय स्थापना कयल जाय। 7. जनपुरधामक जानकी मन्दिरकेँ विश्वसम्पदा घोषित करबाओल जाय। 8. जनक पुरक विमानस्थलकेँ अन्तर राष्ट्रिय हवाइ अड्डा बना देल जाय।

प्रस्तुति - कमलकान्त झा

मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल संघर्ष एकजुट भऽ कऽ करु - भारती

विगत 25-26 जून कऽ जयनगरमे आयोजित तैसम अन्तर राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक उद्घाटन करैत विधान पार्षद श्री बालेश्वर सिंह 'भारती' कहलनि जे सर्वांगीण विकास लेल समाजमे एकजुटता आवश्यक अछि, तखने संघर्ष तेज भऽ सकत। मैथिली भाषाक मामला हो वा मिथिला राज्यक मामला हो, आपसी भेद विभेदसँ मामला कमजोर पड़ि जाइत अछि। बेनीपट्टी क्षेत्रसँ भाजपा विधायक श्री विनोद नारायण झा सेहो संघर्ष लेल सामाजिक एकता पर बल देलनि। राजनगर क्षेत्रसँ राजद विधायक आ सम्मेलनक मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री श्री रामलखन राम 'रमण' कहलनि जे मिथिला राज्यलेल जेकोनो संघर्षक आह्वान कयल जयतैक ताहिमे ओ बढ़ि-चढ़िकऽ भाग लेताह। ओहने विचार खजौली क्षेत्रक विधायक (भाजपा) श्री अरुण शंकर प्रसाद तथा बाबूबरही क्षेत्रक राजद विधायक श्री उमाकांत यादव सेहो व्यक्त कयलनि। विधान मंडलक सदस्यताक मैथिलीमे शपथग्रहणक कारण उक्त तमाम विधायक लोकनिकेँ पाग दोपटा ओ मालासँ मंच पर सम्मानित कयल गेलनि। प्रारंभमे विद्यापति रचित गोसाउनिक गीत 'जय जय भैरवि' गान ज्ञान निकेतन विद्यालयक पाँच छात्रा द्वारा सम्पन्न कयल गेल। वैह छात्रालोकनि स्वागतगान सेहो कयलनि। स्वागत भाषण श्रीनारायण यादव प्रस्तुत कयलनि। अन्तर राष्ट्रिय मेथिल परिषदक केन्द्रीय प्रवक्ता डा. धनाकर ठाकुर अपन भाषणमे कहलनि जे तेलंगानाक तर्ज पर मिथिलाक सांसद ओ विधायक लोकनिकेँ सदनसँ त्यागपत्र दऽ राज्यलेल अनशनपर बैसि जयबाक चाही। सर्वश्री उदयशंकर मिश्र (दरभंगा), भीमसिंह मैथिल (हरियाणा), डा. राजेश्वर नेपाली (जनकपुर धाम), श्रीमती करुणा झा (राजविराज-नेपाल), प्रो. उमेश कुमार 'ललन' (सिरहा-नेपाल), सुधीरनाथ मिश्र (अररिया) आदि वक्ता सेहो जोरदार शब्दमे अपन विचार व्यक्त कयलनि। अध्यक्षता परिषदक केन्द्रीय अध्यक्ष डा. कमलकान्त झा तथा मंच संचालन सम्मेलनक संयोजक श्री सतीश मिश्र कयलनि। सायं 8 बजे सँ श्री बचरु मासवानक अध्यक्षतामे काव्यसन्ध्याक आयोजन कयल गेल, जकर काव्यमय संचालन श्री चन्द्रेशजी कयलनि। उक्त दूनू कविक अतिरिक्त काव्य पाठ कयनिहारमे प्रमुख छलाह सर्वश्री डा. कमलकान्त झा, डा. धनाकर ठाकुर, प्रो. शिव कुमार निखिलेश, आलोक भारती, नारायण यादव, श्रीमती करुणा झा, राजेश्वर नेपाली, श्रीमती साधना झा, उमेश कु. ललन (चारु नेपाल), उमेश नारायण कर्ण 'कल्प', पंकज सत्यम्, सदरे आलम गौहर, महाकान्त ठाकुर आदि। रविदिन 26 जूनकऽ दूगोट महत्वपूर्ण संगोष्ठी सत्र छल जकर विषय छल। 1. मिथिलामे पर्यटन उद्योग ओ सीता सर्किट तथा 2. मैथिलीक विविध समस्या। वक्तालोकनि मिथिलामे पर्यटन क्षेत्रक उद्योगकेँ बढ़ाबाक लेल सीता सर्किट ओ मिथिला सर्किटक निर्माण पर विशेष बल देलनि। मैथिली भाषाक समस्या सब गनौल गेल। छोट नेनाक संग विहीनमे सतत गप्प करबाक फैशन पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त कयल गेल आ मातृभाषा पर आबि रहल संकटकेँ रेखांकित कयल गेल। पहिल संगोष्ठीक अध्यक्षता प्रो. डा. टुनटुन झा तथा दोसर संगोष्ठीक अध्यक्षता श्री मिथिलेश्वर झा अभियंता कयलनि।

मथिला मे धूम मचा रहल अछि नेपाल क एफएम

भारतीय रेडियो क घटि रहल अछि लोकप्रियता, विज्ञापन सेहो जा रहल अछि सीमा पार।

पड़ोसी राष्ट्र नेपाल स संचालित विभिन्न मैथिली भाषी एफ़एम रेडियो क क्रेज मिथिला क श्रोता क बीच दिन ब दिन बढ़ैत जा रहल अछि। एफ़एम रेडियो क संचालन स मिथिला क्षेत्र मे मैथिली गीत आ मातृभाषा क प्रति लोकक रूझान बढि गेल अछि। जाहि कारण स भारतीय रेडियो स्टेशन स सब गोटेक स्नेह कम होइत जा रहल अछि। मालूम हुए जे नेपाल क सीमावर्ती क्षेत्र जनकपुर आ जलेश्वर स जानकी एफ़एम, जनकपुर एफ़एम, रेडियो मिथिला, रेडियो जनकपुर, मिथिलांचल एफ़एम, रेडियो टूडे, मधेश एफ़एम, अपन मिथिला, जलेश्वरनाथ एफ़एम आ रूद्राक्ष एफ़एम सहित कुल 10टा एफ़एम रेडियो संचालित भ रहल अछि। इ सबटा एफ़एम रेडियो विभिन्न कार्यक्रम चलाकए मिथिला क्षेत्र क दबल आ अछूत प्रतिभा कए तकबाक सफ़ल प्रयास करि रहल अछि। संगहि मिथिला क्षेत्र क ख्याति प्राप्त सिद्धहस्त कलाकार कए श्रोता स रूबरू हेबाक सेहो मौका दैत अछि। जे मिथिला आ मैथिली क लेल वरदान साबित भ रहल अछि।

उक्त सबटा मैथिली रेडियो स्टेशन स सब वर्ग क श्रोता क लेल रोचक, मनोरंजक आ ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रस्तुत कैल जाइत अछि। देश दुनिया क समाद लेल इ एफ़एम चैनल बीबीसी रेडियो क हिंदी सेवा सेहो प्रसारित करैत अछि। एहि रेडियो क विज्ञापन दर अत्यंत कम होइत अछि जेकर कारण स छोट छोट व्यापारी सेहो अपन व्यवसाय मे तरक्की करबा लेल एकरा विज्ञापन दैत छथि। नेपाल स संचालित एकटा एफ़एम स्टेशन क मालिक कहला जे नेपाल क सबटा रेडियो स्टेशन मे लगभग तीन करोड टका खर्च भ चुकल अछि, जखन कि एक मास मे करीब 45 मिनट विज्ञापन प्रसारित कैल जाइत अछि। कम दाम पर विज्ञापन रहबाक कारण अधिकतर एफएम कए नीक विज्ञापन भेट रहल अछि किया जे कम दाम पर भारतीय रेडियो मे विज्ञापन देब दिन मे तारा देखबाक समान अछि।

नेपाल स संचालित उक्त सबटा रेडियो स्टेशन क विज्ञापन क भाषा मैथिली हेबाक कारण श्रोता विज्ञापन क आनंद उठेबाक सेहो मौका नहि छोडैत छथि। जखनकि भारतीय रेडियो स्टेशन स नाम मात्र क लेल मैथिली कार्यक्रम प्रस्तुत कैल जाइत अछि। किछु एहने कारण स मिथिला क्षेत्र क व्यापारी आ श्रोता भारतीय रेडियो क अपेक्षा नेपाल स संचालित मैथिली एफ़एम कए सुनब बेसी पसंद करि रहल छथि।

मैथिली मे बाजत मोबाइलक आईवीआर

अखन उपभोक्ता क मोबाइल व्यस्त अछि कनी काल बाद कोशिश करू, अहां जाहि नंबर पर गप करए चाहैत छी ओ अखन सेवा में नै अछि, ई नंबरक सेवा समाप्त भ गेल अछि जी हां, आब किछु एहने संदेश सुनाई देत कोसी क्षेत्र क लोक कए जखन ओ एक दोसरा क मोबाइल पर नंबर मिला कए गप करबाक कोशिश करताह। कोसी क्षेत्र क लोक लेल एकटा पैघ सनेस देलक अछि दूरसंचार मंत्रालय। कई सालक मांग कए पूरा करैत सरकार आब मैथिली मे मोबाइलक आईवीआर देबाक फैसला लेलक अछि।

सहरसाक विधायक आलोक रंजन क पहल पर इ संभव भ सकल अछि। ज्ञात हुए जे फरवरी मे अलोक रंजन केंद्रीय संचार मंत्री कए एकटा पत्र लिखि कए निवेदन केने छलाह जे मैथिली संविधान क अष्टम सूचि मे शामिल भाषा अछि ताहि लेल तेलुगु आ मराठी जेना एकरो मोबाइल क आईवीआर मे शामिल कैल जाए।

ओ एकर पक्ष मे बहुत रास आर तर्क देने छलाह, जेना ग्रामीण क्षेत्र क लोक हिंदी या अंग्रेजी बेसी नै बुझैत अछि ताहि लेल हुनक अपन भाषा मैथिली मे सूचना भेटबा स आसानी रहत।

आखिकार विधायक कऽ मेहनत सफल भेल आ पाँच मासक बाद केंद्र सरकार दिस सऽ हुनका अनुकूल जवाब भेटल अछि। केन्द्रीय संचार मंत्री कापिल सिब्बल एहि लेल तैयार भऽ गेलाह अछि आ मंत्रालयक अधिकारी कए एहि दिसा मे काज करबा लेल कहलथि अछि। मंत्री एहि क्षेत्र कऽ जीएसए क्षेत्र वृद्धि पर सेहो जोड़ देलथि अछि। किछु दिन आर बाट ताकू जहिना इलेक्ट्रोनिक प्रक्रिया पूरा भऽ जाएत अहाँ सब अपन मोबाइल पर मैथिली मे उद्घोषणा सुनब।

इग्नू स भेटत आब मैथिली मे डिग्री

इंदिरा गांधी नेशनल ओपेन युनिवर्सिटि यानी इग्नू क पाठयक्रम मे एहि साल स मैथिली शामिल भ गेल। मैथिली पहिने छल मुदा सार्टिफिकेट कोर्स मे। एहि वर्ष कऽ जुलाई सत्र स मैथिली कए डिग्री कोर्स मे शामिल कैल गेल अछि। आब स्नातक क डिग्री लेल संबंधित छात्र आधुनिक भारतीय भाषा कऽ रूप मे मैथिली क सेहो चयन करि सकैत दथि। इग्नू क दरभंगा क्षेत्रीय केन्द्र निदेशाक डॉ. शंभू शरण सिंह कहला जे पहिने आधुनिक भारतीय भाषा क सूची मे हिन्दी, अंग्रेजी, सहित पंद्रह भाषा शामिल छल। एहि साल स एहि सूची मे सोलहम स्थान पर मैथिली कए सेहो जगह देल गेल अछि।

ओ कहला जे विश्वविद्यालय स स्नातक कऽ डिग्री लेल प्रथम वर्ष क आधार पर पाठयक्रम मे मैथिली कऽ शामिल हेबा सऽ मिथिला सहित पूरा राज्यक छात्र कऽ काफी आसानी भऽ जाएत। स्नातक द्वितीय आओर तृतीय वर्ष कऽ पाठयक्रम पहिने कऽ भांति रहत। ओ कहला जे इग्नू क पाठयक्रम मे मैथिली कऽ शामिल करबाक पहल करीब तीन साल पहिने शुरू भेल छल। एहि दौरान एहि विषय कऽ लेल विशेषज्ञ द्वारा अध्ययन सामग्री तैयार कैल गेल। आब एकर छपाई अंतिम दौर मे अछि।

युवा फिल्म कलाकार सुनील झा

âåÙÚÜÛÎææØéßæçÈËÂË× ·¤Üæ·¤æÚU ÀUÈÜÂ ãæÜÙ·¤æÂÚU çÂçÍÜæßæè ·¤Ô »ßÙ ÀUÈU·¤ãÜÐ ãæÜÙ·¤ÚU Á«× v Áæ×Ù v~}w ·¤Ô ×ÏéÕÙè çÁÜæ·¤ ×éÚUçÚUØæ¿ ·¤ »ýæ× ×ð ÖðÜñ·¤ãÜÐ ¥ô ç·¤ÜÙ, ÖêÁÂæÚUè ¥æ ·¤«UÁ ÖæáæÂ×ð ãðãÜô ÂæðÚUÍU»ÌÀUçÜÐ ãæÜÙ·¤æ ·¤ÚUæÅðU¥ÕÌÀUÙ·¤ãÜÐ çÂçÍÜæ·¤ §ü âÂèÌ ßÌÜ×æÙ×ð ·¤«UÇ UçÈËÂË× âÌâæÚUÙ ×ð ¥ÂÙ çâ• ·¤æÁ×ðÙÕ ÀUÈÜÐ ãæÜÙ·¤æ ·¤æÚ×ðÇUè ¥æ »¢ÁèÚUÜÙÚUÂæç×·¤æ ·¤ÚUÜ° ·¤Ô¥ÙéÖßÀUÈÜÐ ·¤«UÇ UçÈËÂË× ÖâèÌæ âÕ·¤ÎØÙÓ ×ð ¥çÖÙØ ·¤ÔÙÕ ÀUÈÜÐ ÖêÁÂæÚUè âèçÚUØÜ ÒâæÚUèÙÚUÜæÀUÈÜæÁæçÓ ×ð âãÙÚU¥çÖÙØ ·¤ÔÙÕ ÀUÈÜÐ Âæßð»è»ÜÚU×ÕçÜ ãæÜÙ·¤ÚU @Ú¶ÜÖçßc·¤ ·¤æ×Ùæ ·¤ÚUÌ ¥çÀUÐ





Âæß¿ÙU - çÌçÍÂæßÙU

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
2 अगस्त	मंगलवार	मधुश्रावणी
4 अगस्त	वृहस्पति	वती नाग पंचमी
9 अगस्त	मगंलवार	पुत्रदा एकादशी
11 अगस्त	गुरुवार	प्रदोष व्रत
13 अगस्त	शनिवार	रक्षाबंधन
14 अगस्त	रविवार	मदवा आरम्भ (भादो मास आरम्भ)
19 अगस्त	शुक्रवार	भदवा समाप्ति
20 अगस्त	शनिवार	ललहि छठ
21 अगस्त	रविवार	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त नाम गृहस्थ के लेल)
25 अगस्त	वृहस्पतिवार	जया एकादशी
26 अगस्त	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
28 अगस्त	रविवार	कुशोत्पाटनी अमावस्या (मध्यान्काले)
29 अगस्त	बुधवार	हरितालिका व्रत
8 सितंबर	गुरुवार	पदमा एकादशी
9 सितंबर	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
10 सितंबर	शनिवार	भदवारम्भ
12 सितंबर	सोमवार	भादव पूर्णिमा अगस्त तपर्ण
13 सितंबर	मंगलवार	पितृ पक्ष –पार्वण श्राध्य आरम्भ
15 सितंबर	गुरुवार	भदवा समाप्ती
19 सितंबर	सोमवार	जीतिया के नहा खा रात्री (1बजे तक)
20 सितंबर	मंगलवार	जीतिया जिमूतवाहन व्रत
21 सितंबर	बुधवार	परणा प्रात
23 सितंबर	शुक्रवार	ईन्दरा एकादशी
25 सितंबर	रविवार	प्रदोष व्रत
27 सितंबर	मंगलवार	अमावस्या पितृ विसर्जन महालाय
28 सितंबर	बुधवार	शरद नवरात्रा आरंभ कलशास्थापन
2 अक्टूबर	रविवार	महात्मा गांधी जयन्ती
3 अक्टूबर	सोमवार	महासप्तमी पूजा
4 अक्टूबर	मंगलवार	महाअष्टमी पूजा निशा पूजा बलि
5 अक्टूबर	बुधवार	महानवमी
6 अक्टूबर	वृहस्पति	दशहारा विजय दशमी
7 अक्टूबर	शुक्रवार	पापाङ्कुशा एकादशी
8 अक्टूबर	शनिवार	प्रदोष भदवा आरम्भ

– **पं. देव नारायण झा**, भजनका भवन, हनुमान मंदिर
जी.एस. रोड, गणेशगुड़ी, (मो.) : 9864444251

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

ãUæçÎü·¤ àææéÖ·¤æ×Ùæ·¤ â¢Ì› -

..ØôçÌ ·é¤çÚUØÚU âæçßüâ

Âêßôü•æÚU ·ð¤ â¢Ì›-â¢Ì›

â•Âêæ|æüÜÖæÚUÌßæü×ð

çßàßÚUèØ âðßæ·¤ ÜðÜ

â•Â·ü¤ -

ÚUæ×ÜæÜ Ûææ

ज्योति कुरियर सर्विस

66 मीर मार्केट, कमारपट्टी

फैंसी बाजार, गुवाहाटी –781001

फोन : 9864026156 (M)